بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
तारीख़े
मदारे आलम
लेखक
क़ारी सय्यद महज़र अली
Front Page Created By - @MadaariMedia

تاریخ مدار عالم
तारीख मदारे आलम
سید محضر علی وقاری مداری
جہاں جائے ان کے چلے ہیں محضر
مدارِ جہاں کا سفر اللہ اللہ

तारीखे़ मदारे आलम

-:लेखक:-

हजरत मौलाना अलहाज

सय्यद महज़र अली

वकारी मदारी

-:अनुवादक-हिन्दी:-

सैय्यद रहबर अली जाफ़री

जहाँ जाइये इन के चिल्ले है ''महज़र''

मंदारे जहाँ का सफ़र अल्लाह अल्लाह

नाम किताब	:-	तारीखे़ मदारे आलम
लेखक	:-	क़ारी सय्यद महज़र अली जाफ़री वक़ारी मदारी
अनुवादक	:-	सैय्यद रहबर अली जाफ़री
प्रिन्टिंग	:-	बाबा प्रिन्टिंग प्रेस जोहरा बाग, अलीगढ़ यू. पी.
एडीशन	:-	पाचवाँ
सन्	:-	2013
मूल्य	:-	रु. 80.00

: किताब मिलने का पता :

1. हजरत मौलाना अलहाज कारी सय्यद महज़र अली वक़ारी मदारी दारून्नूर मकनपुर शरीफ, जि. कानपुर नगर (यू.पी.) मोबा. : 9935586434
2. हाफ़िज मुहम्मद अहमद वकारी मदारी जुहरा बाग, अलीगढ़ (यू.पी.) मोबा. : 7417214324
3. मदार 596 इन्टरपराई जेस सईद रफ़ीक़ शेख़, मीरा रोड, मुम्बई मोबा. : 9146969696

इंन्तिसाब

अपनी वालिहद सय्यदह नुज़हतुन्निसॉ साहिब

और

वालिदे मुहतरम व मुर्शिदि मुअज़्ज़म

कुत्बेआलम मौलाना अबुल वक़ार

सैय्यद कलबे अली मदारी रहमतुल्लाह अलैह के नाम से

मन्सूब करता हूँ जिनकी तरबियत से मेरे दिल को सोजे

इश्क़े रसूल और औलिया-ल्लाह का एहतराम हासिल हुआ।

ज़र्र-ए-कूच-ए-मदार

महज़र मदारी

मकनपुर शरीफ, जि. कानपुर (यू.पी.)

17-जमादि-उल-मदार, सन् 1434 हि.

सन 2013

क्या और कहाँ (विषय सूची)

हम्दे बारी तआला

हम्द तेरी किस जबाँ से हम करें ए किरदिगार
तेरे खुद औसाफ से है तेरी मिदहत आशकार
कादिरे मुतलक है तू हर शय पे तेरा इखित्यार
तू ही है खालिक हमार तू ही है परवर दिगार

ये फजायें ये हवायें यह जमीनो आसमाँ
माहताबो मेहरो अन्जुम तेरी कुदरत के निशाँ
और गवाही दे रही है गर दिशे लैलो नहार
तू ही है खालिक हमारा तू ही है परवर दिगार

कार साजी के तसददुक दिल वोह यारब कर आता
जिस की किसमत बन गई हो उलफते खैरूलवरा
आलो अस्हाबे नबी का बख्श दे हम को शिआर
तू ही है खालिक हमारा तू ही है परवर दिगार

आखिरी दिल की तमन्ना है "वली" की या खुदा
जीस्त का इस्लाम पर ईमान पर हो खातमा
हो यही लब पर उठे मरकंद से जब रोजे शुमार
तू ही है खालिक हमारा तू ही है परवर दिगार

(हकीमुल उम्मत हजरत अल्लामा हकीम सैय्यद मुहम्मद वली शिकोह मियाँ "वली" मदारी रजियल्लाहु अन्हु)

नात शरीफ़

दिल इक पल आराम न पाये वोह भी इतनी रात गये
रह रह के तैबा याद आये वोह भी इतनी रात गये

रहमते आलम आप की यादें काम आजाती हैं वरना
कौन हमारा दिल बहलाये वोह भी इतनी रात गये

दिन के उजाले शरमाते हैं उन नूरानी गालियों से
आंखों में तैबा खिंच आये वोह भी इतनी रात गये

आलमें तन्हाई में आक़ा तेरा तसव्वुर तेरा जमाल
सोय एहसासात जगाये वोह भी इतनी रात गये

इश्क का मारा दिल बेचारा जब कोई उसका बस न चला
हिजरे नबी में अश्क बहाये वोह भी इतनी रात गये

अपने काफूरी होटों से चूमे कदम या दे आवाज
किस तरह जिबरील जगाये वोह भी इतनी रात गये

दिल में कसक पैदा होती है आँखें नम हो जाती है
जब "महज़र" तू नअत सुनाये वोह भी इतनी रात गये

(ह. मौलाना–अलहाज, क़ारी सय्यद महज़र अली
साहब "महज़र" वक़ारी)

मनक़बत शरीफ़

हैं औलिया में बड़े बा वकार पहचानो
अगर नज़र है तो क्या है मदार पहचानो

अदब से पलकें बिछाते जहाँ है आलमगीर
मदारे पाक का वोह है दयार पहचानो

जो चाहे कुत्ब को माज़ूल कुतबियत से करें
खुदा ने बख्शा है वोह इख्तियार पहचानो

निसार जिन के कदम पर है अजमते अफलाक
उन्हीं के दर का हूँ मैं खाक्सार पहचानो

मदार फूल है ऐसा कि जिस की निकहत से
है गुल सिताने विला में बहार पहचानों

मदार उस को है कहते कि जात पर जिसकी
है काइनात का दारो मदार पहचानो

हर एक सिलसिला सैराब जिससे है "महज़र"
है इन की निस्बते वोह आबशार पहचानो

(ह. मौलाना–अलहाज, क़ारी सय्यद महज़र अली
साहब "महज़र" वक़ारी)

1
हजरत मदार साहब की जन्म–भूमि

हजरत शहशंह–ए–औलिया–एं–किबार सरकारे सरकारॉं सय्यद बदीउद्दीन कुतबुल मदार जिन्दा शाहमदार रजि० का जन्म शाम देश के शहर 'हलब' में हुआ।

'हलब' शहर शाम का मशहूर और पवित्र शहर है। शाम देश (सीरिया) अरब का पड़ोसी देश है। अरब देश के चारों ओर हिन्द महासागर ईरान की खाड़ी, लाल सागर तथा खुश्की के इलाके हैं। जहां इराक एवं शाम देश है। सीरियां (शाम) से मिला हुआ लाल सागर के किनारे–किनारे शाम की सरहद से मुल्क यमन तक जो भू–भाग है उसे हिजाज कहते है। । पवित्र शहर मक्का, ताइफ यसरब अर्थात मदीना इसी हिजाज के शहर हैं और इन्हीं शहरों से रहमते आलम सं0 के जीवन से बहुत गहरा सम्बन्ध हे।

यह वही मक्का मुअज्जमा शहर है कि जहां से रसूले पाक स0 ने भाईचारा एवं दया के ऐसे दीपक जलाये कि जिनसे अंधकारमयी संसार का कण–कण आकाश गंगा की भांति जगमगाने लगा। यह वही ताइफ है कि जहां हुजूर स0 पर लोगों ने पत्थर चलाये और बदले में आपने लोगों पर दुआओं, दया एवं प्रेमभावना के फूल लुटाए –अन्सार की कुर्बानियां हो या मुहाजिरीन की फिदा कारियां या उम्महातुल मोमिनीन के उज्जवल चरित्र या पंजतन पाक के पवित्र चरित्र यह सारा खजाना–ए–इस्लाम दुनिया को मदीना से ही प्राप्त हुआ।

हिजाज प्रदेश को यह गौरव भी प्राप्त है कि यहां हजरत इब्राहीम ने अपने लाडले बेटे हजरत इस्माईल को मक्का के बयाबान मरूस्थल में जहां पानी का एक बूंद भी नहीं था ठहराया था। इसी प्रकार शाम देश को भी यह गौरव प्राप्त है कि इस की पवित्र धरती पर हजरत इब्राहीम ने अपने प्यारे बेटे हजरत इस्हाक को बसाया था।

शाम देश में सर्वप्रथम फौजी हमला प्रथम खलीफा हजरत अबू बक्र सिद्दीक रजि0 की खिलाफत में हुआ था। जिस दिन अबू बक्र सिद्दीक का देहान्त हुआ था। उसी दिन इस्लामी फौजें दमिश्क में दाखिल हुई किन्तु शाम को पूरी तरह उमरफारूक के शासनकाल में जीता गया था। सतरह हिजी (17 हि0) सन 638 ई0 में मुसलमानों ने शाम पर विजय प्राप्त की तो शाम में इस्लाम धर्म के आदर्शों एवं विशेषताओं के प्रभाव तथा मुसलमानों के उज्जवल चरित्र से प्रभावित होकर 'शामी' नागरिकों में तेजी से इस्लाम फैलने लगा यद्यपि इस्लाम यहां मुहम्द सं0 की जाहिरी जिन्दगी में ही पहुंच चुका था।

शाम देश को दास्ताने इश्क की यह मेराज भी प्राप्त है कि जब हजरत बिलाल रजि0 से हजरत मुहम्मद सं0 के बिछड़ने का वियोग सहन न हो सका तो वह इसी देश की धरती पर पहुंच कर काफी समय तक रहे थे।

2
शाम देश की हदींसों में प्रमुखता

सीरिया के लिए हुजूर सं0 की बहुत सी हदीसों से गौरव एवं प्रमुखता साबित हैं।

उदाहरणार्थ :–हजरत अबू उमामा बयान करते हैं कि नबी–ए–करीम सं0 ने फरमाया कि शाम देश खुदा का पसन्दीदा मुल्क है वहां खुदा के बरगुजीदा बन्दे आते हैं जो वहाँ गया वह खुदा की रहमत में गया, जो वहां से निकला वह खुदा का गुस्सा लेके निकला ।

हजरत अब्दुल्लाह सुपुत्र उमर तिबरानी रजि0 ने कहा कि हुजूर सं0 ने बताया कि अन्तकाल में एक आग निकलेगी, जो लोगों को घेर लेगी । लोगों ने पूछा कि ऐसे समय पर हमारे लिये क्या हुक्म (आदेश) है ? आपने फरमाया तुम मुल्क शाम में चले जाना ।

अत :– हजरत उमर रजि0 से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ने फरमाया कि मैंने अपने सर से नूर का एक खम्बा उठते हुए देखा जो शाम में जाकर ठहर गया ।

इन हदीसों के अतिरिक्त बहुत सी हदीसों में 'शाम' की फजीलत बयान की गयी है । बहर हाल मुल्क शाम बड़ी बरक़तों का देश हैं । जिसके कई शहर बहुत मशहूर है जैसे – दमिश्क, अन्तकिया और हलब इत्यादि ।

3
हलबशहर की विशेषतायें

हलब शहर जितना सुन्दर है उस से भी अधिक इसकी और विशेषताएं है इस शहर की विशेषताएं पुराने जमाने से ही मशहूर हैं । यहां का दुर्ग बहुत मजबूत है इसकी विशेषताएँ जन्मजात और मजबूती अनन्त कालिन प्रतीत होती है । मुददतें (काल) बीत गयीं आयु समाप्त हुई किन्तु वह मकानात बाकी हैं । इनके अगले लोग कहां है जो आकर देखें कि उनकी जागीर और जायदाद बाकी है जिसके राजा और जागीरदार तथा उनके दरबारी कवि आदि कहां गये जिनका मृत्यु ने नाम तक न छोड़ा । अफसोसकोई दुबारा पलट कर नहीं आ सका ।

यह वही हलब शहर है कि जहां हजारों बादशाह और जागीरदार गुजरे जिन का आज नामो निशान तक बाकी नहीं है । इस पर बहुत से बादशाहों ने हुकूमत की जिन्होने इसको अपनी सेना के दम पर जीता था । सबसे बाद में इब्न–ए–हमदान नाम का बादशाह गुजरा जिसने इसे खूब सजाया था किन्तु दुख की बात है कि उसके सौदर्य को बुढ़ापे ने समाप्त कर दिया और संरक्षक को मृत्युकाल के अंधकार में ऐसा ढकेला कि फिर न आ सका ।

मगर इस शहर की शराफतों में एक यह भी है कि जिस जगह शहर का दुर्ग (किला) है वहां पहले एक टीले पर हजरत इब्राहीम अलै0 ने एक बार अपनी बकरियों का दूध दुहा था । चूँकि अरब दूध दूहने को 'हलब' कहते हैं अतः इस जगह का नाम हलब पड़ा । और इसी नाम से मशहूर हुआ ।

4

अब्बासी ख़लीफ़ा की सय्यदों से दुशमनी

मुल्क शाम की उपरोक्त विशेषताओं के साथ–साथ यहां समय–समय दैवीय आपदाओं निरंकुश शासकों का प्रकोप भी खूब रहा । हजरत बदी उद्दीन के जन्म से दस वर्ष पहले हिज्री 232 में हलब और इसके चारों ओर ही नहीं बल्कि पूरे देश शाम, इराक खुरासान इत्यादि में तरह–तरह के दंगे भड़के हुए थे । इन देशों के अतिरिक्त कुछ और देश भी दैवीय आपदाओं से ग्रस्त थे । हिज्री 232 तदानुसार 846 ई0 में अब्बासियों के शासन काल में वासिक बिल्लाह बिन मोतसिम के बाद उसका भाई जाफर मोतसिम मुतवक्किल अलल्लाह गद्दी पर बैठा उस समय उसकी आयु 27 वर्ष की थी । यह शुजा नाम की ख्वारिज्मी लौडी का पुत्र था जो कि बड़ा सखी थे । इसने कुरान के फितने को सदैव के लिए मिटा दिया जिसने बड़े–बड़े अइमा–मुजतहिदीन (प्रकाण्डविद्वान) और उलमा (धर्मज्ञाता) की जानें ली थी । जिसकी वजह से इस्लाम में विखराव एवं फूट पड़ गयी थी । खलीफा मामून के शासन काल से वासिक के शासनकाल तक इस समस्या का बहुत जोर रहा । उसने यह बेमिसाल कार्य किया तो इसके साथ ही साथ उसमें बहुत से गुण थे । उसने अपने काल में महत्वपूर्ण कार्य किये थे । किन्तु उसमें एक बड़ा अवगुण यह था कि उसकी जाती जिन्दगी बड़ी ही रंगीन थी । इतिहासकार 'मसूदी' ने लिखा है कि उसे शराब और सुन्दर लड़कियां बहुत पसन्द थी । उसके महल में चार हजार अति सुन्दर नारियां थीं । इसके अतिरिक्त वह सादात अर्थात फात्मा बीबी की नस्ल से बेहद घृणा करता था जिसके कारण सम्पूर्ण राज्य में प्रजा उससे नफरत करती थी ।

सरकार मदार जब सन् 798 हिज. में मकनपुर तशरीफ लाये तक यह पेड़ मौजूद था ।

वह सादात का ऐसा बड़ा दुश्मन था कि उसने हजरत इमाम हुसैन अ0 और दूसरे कर्बला के शहीदों के मकबरों को तुड़वाकर वहां कृषि कार्य प्रारम्भ कर दिया था तथा जियारत करने पर रोक लगा दी यह कार्य उसने हि0 236 में किया था । मुतवक्किल के शासन काल में इस्लामी राज्य पर दैवीय आपदाओं की बाढ़ थीं जो कि पहले कभी नहीं हुआ था ।

5
इस्लामी मुल्कों पर बलायें

हि0 236 में इराक में ऐसी भयानक हवा चली कि पूरे–पूरे शहर कूफा, बसरा, बगदाद और दूसरे शहरों की खेती नष्ट हो गयी। बाजार वीरान हो गये मार्ग सुन्सान हो गये तथ 'हमदान' शहर तक इस हवा का आंतक व्याप्त था। यह गर्म खतरनाक हवा दो महीनों तक चलती रही जिससे बेशुमार लोग काल के गाल में समा गये शहर 'असकलान' आग लगने से पूरी तरह तबाह हो गया। 240 हि0 में एक खौफनाक चीख सुनी गयी जिसके आतंक से बहुत से लोग मर गये। इराक में अण्डे के जितने ओले पडे फलतः खेती नष्ट हो गयी। दमिश्क से अन्त कियां तक ऐसा भयानक जलजला आया कि सैकड़ों इमारतें जमीन पर आ गिरी। करीब पचास हजार लोगों की जिन्दगी से हाथ धोना पड़ा। फारस, खुरासान, यमन, शाम इत्यादि के भी कुछ इलाके इस जलजले से प्रभावित हुए। सन् 242 हि0 में टयूनसरे खुरासान, नीशापुर, तिबरिस्तान तथा अस्फहान में ऐसे जोरदार जलजले आये कि पहाड टूट गये जमीन फट गयी। आकाश से 5–5 सेर के पत्थर बरसे थे।

इधर हि0 242 में 'शाम' के शहर हलब में अनोखे हालात थे। रमज़ान का महीना है एक सफेद पक्षी जाहिर हुआ था उसने आवाज़ लगाई।

"यामाशरन्नासोइत्तकुल्लाह अल्लाह अल्लाह"

दूसरे दिन फिर यही घटना घटी तब लोगों में डर एवं दुःखों की लहर दौड़ गयी। रमजान की अन्तिम तारीखें आ गयी अब लोग ईद की तैयारी में है। रमजान का चांद खत्म हुआ तो ईद के चांद के साथ साथ कुत्बुलमदार जिन्दाशाह मदार का जन्म हुआ। एक नये युग का शुभारम्भ हुआ हर रात के बाद सुबह जरूर होती है। अंधकारमयी भटकी हुई जिन्दगी के लिए उजाला ही उजाला हो रहा है। एक 'शम्सुल अफ्लाक' आ रहा है। आज ईद का चांद दुनिया के लिए हिदायत एवं सुधार के लिए नई चांदनी बिखेरने आया है। तारों को जैसी नई चमक दमक मिली हो। ऐसा प्रतीत होता है। संसार के रचयिता ने आकाश की झोली खुशियों से भर दी हो। आज की रात उज्ज्वल–उज्जवल चमक दमक से भरी हुई प्रज्वलित क्यूं न हो जब कि इसकी सुबह विलायत का ऐसा सुरज आ रहा है। जिसकी किरणें संसार के कुफ्र को इस्लाम की एक नई रोशनी से जग मगायेंगी। यही तो कारण है कि प्रत्येक में न तो आज डर है और न ही कोई भयातंक सभी लोग प्रसन्न एवं सुकून में है तथा उनकी आंखें सुहाने स्वप्न देख रही है।

6
हलब का प्रतिष्ठत घराना

हलब के प्रतिष्ठित घरानों में सय्यद बहा उद्दीन के घराने का उदाहरण ढूंढने से भी नहीं प्राप्त होता है। इन का चरित्र चन्द्रमा के समान उज्जवल, गुलाब की सुगंध के समान हलब और इस के चारों ओर प्रसिद्ध था। हजरत सय्यद बहाउद्दीन के चार पुत्र थे जिन के नाम क्रमशः सय्यद अहमद, सय्यद मुहम्मद, सय्यद महमूद तथा सय्यद किदवतुद्दीन अली हलबी थे। अली हलबी के भी चार पुत्र थे। एक पुत्र का नाम मकसूद उद्दीन था जो कि शह बद्रुद्दीन के नाम से जाने जाते थे। दूसरे पुत्र मतलूब उद्दीन यह हर रात एक हजार रक्अत नफ्ल नमाज अदा करते थे। तीसरे पुत्र निजाम उद्दीन है जो कि दिन–रात केवल चार छुहारे तथा एक कूजा पानी पीते थे। यह महान सन्त इबादत एवं तपस्या के पाबन्द थे तथा जनता में इनको ख्वाजा बक्ताश वली के नाम से जाना जाता है। यद्यपि यह तीनों पुत्र अपनी मिसाल आप है किन्तु हजरत सय्यद बदी उद्दीन अहमद जिन्दा शाहमदार रजि0 उनके ऐसे सुपुत्र है कि जिनसे उन की दिलीतमन्ना कि उनके पुत्र संसार के कर्मकाण्ड, अन्याय, अत्याचार तथा हिसंक घटनाओं के अंधकार को अपने धर्म इस्लाम के आदर्शो द्वारा प्रज्जवलित करें पूरी होती है उन की दुआ कि ऐ मेरे रब मुझे ऐसा बेटा दे जो तेरी धरती पर तेरे धर्म इस्लाम का नाम उज्जवल करें तेरे नाम की इबादत पूरे संसार में हो। और अपनी पूरी जिन्दगी तेरे रसूल सं0 के मिशन को आम करने में लगा दे। उनकी प्रार्थना रब ने कुबूल की और अनमोल रत्न के रूप में उनको बेटा बदीउद्दीन दिया जो कि जिन्दा मदार के नाम से विख्यात है

हजरत अली हलबी के इच्छापूर्त के लिए हजरत मुहम्मद सं0 ने स्वप्न में बताया कि ऐ अली हलबी तुम्हारी दुआ कुबूल हो गयी बहुत जल्दी तुम्हारे घर एक बेटा पैदा होगा तुम उसका नाम बदीउद्दीन अहमद रखना वह वलायत का सूरज होगा और संसार को इस्लाम के प्रकाश से प्रकाशित कर देगा वह बड़ा बुजुर्ग और करामत वाला होगा। अल्लाह तआला उसको कुत्बुलमदार के दर्जे से सुशोभित करेगा। तेरा यह पुत्र संसार के लाखों लोगों का हृदय जीत लेगा वह इस्लाम के सिद्धान्त एवं आदर्श को सम्पूर्ण संसार में फैलाकर अन्याय, अत्याचार, शोषण इत्यादि को समाप्त कर देगा।

7
कुत्बुल मदार का जन्म

हि0 242(816 ई0) सोमवार की सुबह है ईद का दिन है अभी सूर्य की किरणें पृथ्वी से दूर है। रात का अंधेरा गायब हो रहा है। सुबह की ठनडी–ठन्डी हवायें गा रही है। वायु सुगंधित एवं मधुरता से परिपूर्ण हुई जाती है। क्यों कि अब अली हलबी के घर फात्मा सानिया की गोद में एक ऐसा महकता हुआ गुलाब खिलने आने वाला है जिसके कारण पूरा संसार सुंगन्धित हो जायेगा। हजरत सय्यद इद्रीस हलबी कहत है। कि जिस समय हजरत मदार साहब पैदा हुए थे तब सर्व प्रथम आपने अपने रब को सजदा किया फिर कलम–ए–शहादत पढ़ा उस समय एक ऐसी रोशनी हुई कि पूरे घर में रोशनी ही रोशनी थी। हुजूर सं0 और आपके सहाबा तथा हजरत खिज्र अं0 फात्मा सानिया के घर पर आये तथा बच्चे के जन्म पर पिता अली हलबी को मुबारकबाद

दी। इस समय हवाओं में धीमीं–धीमी मधुर आवाजें "अला इन्ना औलिया अल्लाहि ला ख़ौफुन अलैहिम वलाहुम यह ज़नून"(कुरान कि आयत) आ रही थी। अली का बेटा भी खूब है । जो इस बच्चे को देखता है उसे खुदा याद आ जाता है। मोहिनी सी मूर्ति सम्पूर्ण शरीर प्रकाश का बना मालूम होता था। जैसे कि शरी से रोशनी की किरणें फूट रही हो। पिता ने बच्चे का नाम बदी उद्दीन अहमद रखा।

आपकी माँ कहती है कि गर्भावस्था में अगर कोई मूँह में मश्कूक चीज रख लेती तो पेट में दर्द होता अजीब–अजीब स्वप्न दिखाई देते, तथा भिन्न –2 प्रकार की ध्वनियाँ सुनाई देती थी कि जिनकों सुनकर हृदय प्रफुल्लित हो जाता था। जब आप छोटे थे और माँ का दूध ही आपका आहार था उस समय जब कि मां अगर वुजू से न हो तो कभी आपने दूंध नहीं पिया। अगर आप कभी रोते तो अजान की आवाज सुनते ही चुप होकर अजान सुनते यदि कुरआन पाक पढ़ी जाती तब आप ध्यान मग्न होकर उसे सुनते थे। जो आपको देखता तो कहता कि यह बच्चा पैदाइशी वली हे।

8
बिस्मिलाह की रस्म

देखते–देखते आप की आयु चार वर्ष चार मास तथा चार दिन हो गयी तो आपकी रस्मबिस्मिल्लाह अदा की गयी।

नोट :– रस्मबिस्मिल्लाह क्या है– जब बच्चा चार साल चार महीने एवं चार दिन का हो जाता है तब उसे किसी बुजुर्ग से बिस्मिल्लाह शरीफ और कुरान पाक की खास–2 आयते पढ़वाई जाती है। इस रस्म को सादाते मकनपुर शरीफ आज भी बच्चे को मदार साहब की दरगाह लेजाकर अदा करते हैं फिर शिक्षा के लिए शिक्षण संस्थान भेजते है।

शिक्षा : जब आप का मकतब अर्थात रस्म बिस्मिल्लाह शरीफ हो गयी तो पिता श्री ने समय के प्रसिद्ध प्रकाण्ड विद्वान हजरत सदीदुदीन हुजैफा शामी रह0 जो कि पूरे देश में मशहूर थे के पास पढ़ने के लिए भेज दिया।

हजरत हुजैफा शामी ने पूरे ध्यान से इस नये शिष्य को पढ़ाना प्रारम्भ किया और कहा पढ़ो बिस्मिललाहिर्रहमान निर्रहीम फिर कहा पढ़ो 'अलिफ' गुरू जी को हैरत हुई जब कि यह कम उम्र बच्चा अलिफ की व्याख्या करने लगा। यहां तक कि एक सप्ताह तक अलिफ की व्याख्या करते रहे। अलिफ किसे कहते है, किस स्थिति में अलिफ होता है। वर्णमाला में अलिफ का क्या स्थान है इत्यादि। यह सब सुनकर गुरू कह उठे, हाजा वली युल्लाह यह अल्लाह का वली है।

नोटः– किताब 'गुलजारे मदार' के लेखक मौलाना सय्यद महमूद ने लिखा है कि खुद हुजैफा शामी ने फरमाया है कि "उनको स्वप्न में सरकारे दो आलम सं0 ने आदेशित किया कि यह बच्चा (मदार साहब) अल्लाह का वली है तथा मेरी नस्ल से है अतः इस पर विशेष ध्यान दिया जाये।"

बहरहाल सय्यद बदी उद्दीन जिन्दा शाहमदार साहब बहुत थोडे समय में मात्र चौदह वर्ष की अल्पायु में ही कुरआन पाक कण्ठस्थ (हिफज) किया उसकी तफसीर पढ़ी आलिम–ए–दीन (धर्मज्ञाता) हुए इसके साथ–साथ प्रचलित विषयों का भी ज्ञान प्राप्त किया। हजरत मदार साहब को उनके इल्म और लगन तथा सदगुणों के आधार पर थोडे ही समय में प्रसिद्ध मिलने लगी।

हजरत मदार साहब, कुरआन पाक के साथ–साथ बाकी सभी आसमानी किताबें के भी हाफिज थे। तथा इसमें रीमिया,कीमिया, हीमिया, सीमिया के भी ज्ञाता थे।

नोटः– इल्महीमिया जादू की तरह होता है इल्मरीमिया इस प्रकार का इल्म है कि इसकी सहायता से पल भर में व्यक्ति स्थान परिवर्तन कर जाता है। इल्मे सीमिया वह इल्म है जिसकी सहायता से एक शरीर से आत्मा को दूसरे में भेजा जा सकता है. इल्मे कीमिया वह इल्म है जिससे लोह को सोने में बदला जासकता है। सिलसिल–ए–मदारियां के मानने वालों में बहुत से इस इल्म को जानते थे। हजरत बाबा दरियाई मान जिन का मजार बड़ोदा गुजरात में है। ऐसा बयान करते हैं कि उनकी आत्मा शरीर से चली जाती और जब आप चाहते थे तो वापस आ जाती थी। इसे शग्ले इन्तेकाले रूह (आत्मा का शरीर से चला जाना) कहते हैं।

तजकिरतुलकराम फ़ी अहवाले खुलफा–ए–अरबो इस्लाम में लिखा है कि मदार साहब चारों आस्मानी किताबों के हाफिज थे।

9

पहला हज

जब आप चौदह वर्ष में सब प्रकार की शिक्षा ग्रहण कर चुके तब आपने अपने पिताश्री सय्यद काजी किदवतुद्दीन अली हलबी से सिलसिल–ए–जाफरिया में इजाज तो खिलाफत ली। अर्थात जाफरिया सिलसिले में लोगों को मुरीद (गुरुदीक्षा) करने की आज्ञा प्राप्त की फिर आपको हज करने और मदीने की जियारत करने का ख्याल पैदा हुआ तो माँ, बाप से इजाज़त ली और विनती की कि मुझ पर दो हक हैं एक अल्लाह का और दूसरा आपका मैं चाहता हूँ कि आप मुझे रब के सुपुर्द कर दें ताकि मैं हर सम्भव प्रयास के साथ उसके हक़ को अदा कर सकूँ। मां बाप ने खुशी–2 इजाज़त दी और कहा कि मैने अल्लाह की राह में तुम पर अपना अधिकार समाप्त किया। हज़रत मदार साहब ने मां बाप से हज की इजाजत प्राप्त की और हज के लिए मक्का की तरफ यूँ चले कि साथ में कोई सामान नहीं लिया। मार्ग में एक गुफा मिली जिस में आपने लम्बे समय तक अपने रब की इबादत की और घोर तपस्या तथा मारव उत्थान के लिए चिंतन की फिर आप चल दिये। सीरिया से अरब जाने के लिऐ इस्राईल फ़िलिस्तीन, जार्डन होते हुए रास्ता है। अतः आप यूरोशलम (बैतुल मुक़द्दस) पहुंचे तो आप वहां सुल्तानुल आरिफीन हज़रत बायज़ीद बुस्तामी उर्फ तैफूर शामी से मिले। उन्होंने फ़रमाया कि बदी उद्दीन मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। मैं यहाँ एक नूर देखता था तुम्हें देखा तो यूँ लगा कि वह नूर तुम हो।

जुल्फिकारे बदी के पेज 25 पर हज़रत ख्वाजा
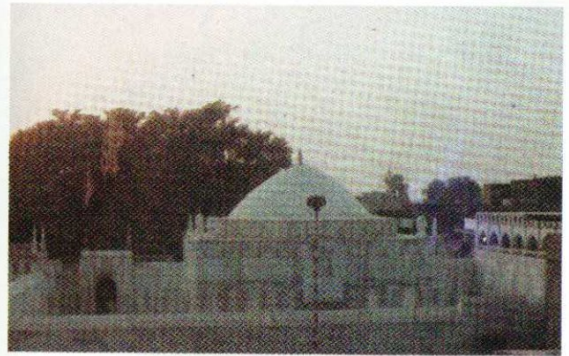
दरगाह शरीफ हजरत सययद बदीउद्दीन कुतबुल मदार मकनपुर शरीफ।
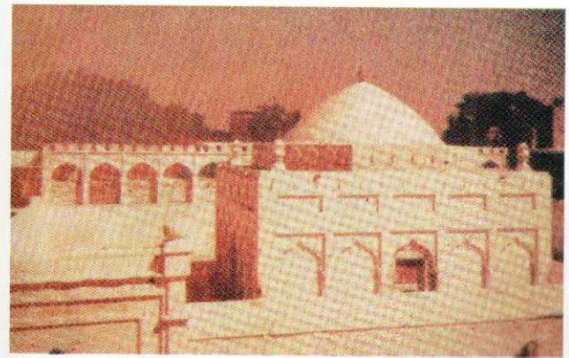
पत्थर लगने से पहले सरकार मदार पाक का मकबरा इब्राहीम शरकी का बनवाया हुआ इससे अलग अंदाज का था।

नसीर उद्दीन रह0 ने लिखा है कि जब सय्यद बदी उद्दीन बैतुलमुकददस पहुंचे उस समय हजरत बायज़ीद बुस्तामी रजि0 से मिले जो कि कमालातो करामात में बड़ा नाम रखते थे उस समय हजरत के 300 खलीफा मुरीद थे जो कि सभी घोर तपस्या में लीन थे।

10
हज़रत बायजीद पाक से मुरीद होना

जब मक़बूल पर वर दिगार आक़ा ए नामदार हजरत सय्यद बदी उद्दीन जिन्हाशाहमदार रजि0 की चर्चा आम हुई कि यहां एक और अल्ला का वली आया है जो अपनी मिसाल आप है तो यह समाचार सुनकर हज़रत बायज़ीद बुस्तामी ने अपने एक खास खादिम के द्वारा अपने पास बुलाया। तब ख़लीफा ने जाकर कहा कि आपको बायज़ीद बुस्तामी उर्फ तैफूर शामी याद फरमाते हैं। तो हजरत सय्यद बदी उद्दीन तुरन्त पहुंच गये। बायजीद रजि0 ने आपको देखकर अपने स्थान से उठकर आपके सर और आंखों को चूमा और कहा कि बदी उद्दीन मैंने ख़्वाव देखा कि एक सभा (मजलिस) में हुजूर स0 ने मुझे हुक्म दिया कि बहुत जल्द एक नेक व्यक्ति तुम्हारे पास आयेगा उस का नाम अहमद (बदी उद्दीन) होगा। तुमने अपने पीर से जो कुछ भी नेमत पाई है वह बदी उद्दीन की अमानत है। तुम उसकी अमानत दे देना। अतः में आक़ाए दो आलम के आदेशानुसार तुम को तुम्हारी अमानत देता हूँ। इसके बाद हजरत मदार साहब को सिलसिलाए तैफूरिया की इजाजत प्राप्त हुई और आपका सिलसिला सिलसिल–ए–तैफुरिया मदारिया के नाम से मशहूर हुआ।

तबसिरा (प्रसंग) :–हजरत मदार साहब के सिलसिले का नामकरण तैफूरिया मदारिया होने का कारण यह है कि आप को तैफूर शामी ने आप को खिरका जिन्दानु स्सूफ पहनाकर अपना ख़लीफा बनाया और जिन सिलसिलों में मुरीद करने एवं ख़लीफा बनाने की आज्ञा दी इस प्रकार है:–

1. सय्यद अहमद जिन्दाशहमदार–हजरत तैफूर शामी–हज़रत इमाम जाफर सादिक–ह.कासिम–हजरत सलमान फ़ारसी–हजरत अबू बक्र सिददीक रजि. हज़रत मुहम्मद मुस्तफा स.अ.व.

2. सय्यद बदी उद्दीन कुत्बुलमदार हजरत शेख सय्यदना तैफूर शामी शेख ऐन उद्दीन शामी शेख यमीन उद्दीन शामी–हज़रत ख़्वाजा अब्दुल्लाह मक्की अलमबरदार–हज़रत सिद्दीक–ए–अकबर रजि0 तथा हुजूर सरवरेदोआलम सं0

3. शेख अहमद कुत्बुल मदार–शेख बायज़ीद बुस्तामी–इमाम जाफर सादिक–हजरत इमाम मुहम्मद बाकर हज़रत इमाम जैनुल आबिदीन–हजरत इमाम हुसैन–हजरत मौला अली–हज़रत रसूले खुदा मुहम्मद मुस्तफा

4. सय्यद बदी उद्दीन शेख अहमद–सुल्ताननुल आरफीन बायजीद बुस्तामी उर्फ तैफूर शामी–सय्यदना हसन बसरी हबीव अजमी–हजरत सय्ययदना अली करमल्लाहोवजह फिर हुजूर सं0 अ.व.

नोट:– हज़रत सुल्तानुल आरफीन बायजीद बुस्तामी रजि0 के सम्बन्ध में जुनैद बगदादी का बयान है कि आप वलियों में ऐसे हैं जैसे फ़रिश्तों में जिब्रईल का स्थान सर्वोपरि है दूसरा बयान है कि तमाम सालिकीन राहे खुदा के स्थान का जो अन्त है वह बायजीद के स्थान का प्रारम्भ है।

हज़रत अबु सईद अल खैर का बयान है कि मैं

अठारह हजार संसार बायजीद से देखता हूँ। बायजीद नहीं अर्थात जो बायजीद हैं वह सत्य में डूबा हुआ है।

बहरहांल हज़रत मदार बायजीद से मुरीद होने के बाद मक्का की तरफ चल पड़े और मक्का पहुंच कर हज अदाकिया और कुछ दिन के लिए ठहर गये। एक दिन खाना–ए–काबा का तवाफ कर रहे थे कि एक आवाज़ आई कि ऐ बदी उद्दीन मदीना पाक जाओ वहां तुम्हारे दादा मुहतरम (हजूर सं0) प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह सुनकर आप बेचैन हो गये और परेशान दिलों को सुकून और इत्मीनान देने वाले आका सरकारे मदीना के दरबार में हाज़िरी देने के लिए तुरन्त मक्का से मदीना चल दिये। जैसे–2 मार्ग घटता बेकरारी, बढ़ जाती यहां तक कि इसी हालात में।

11
आपकी मदीना में पहली हाज़िरी

प्रतीक्षा की घड़ियाँ समाप्त होती गयीं और आप अपने आका के दरबार में पहुंच गये। सलाम अर्ज किया तथा जब प्रज्जलित मज़ार के पास पहुंचे तो मज़ारे पाक से एक आवाज़ आयी 'अस्सलामों अलैकुम या इब्नी अहलन व सहलन व मरहबा'' आपने मजारे मुकददस को चूमा आखें मली और सात फेरे लगा के दुरूद पढ़ने में व्यस्त हो गये। कुछ दिन के बाद दो जहां के बादशाह संसार के रचयिता के प्यारे मुहम्मद सं0 ने हजरत अली को आदेश दिया कि ऐ अली तुम्हारे सुपुत्र को तुम्हारी देख रेख में हर वह शिक्षा जो कि तुम्हारे पास है सिखादो। मैं इसे तुम्हारे संरक्षण में दे रहा हूँ। अतः तुम इस की शिक्षा दीक्षा पूरी लगन से

पूरी करो।

नोटः– बुजुर्गो का कहना है कि अन्तिम समय में सारे सिलसिले समाप्त हो जायेगें बस एक सिलसिला हुसैनी महदविया मदारिया रहेगा। मदार साहब को कई सिलसिले प्राप्त थे।

जाफरिया मदारिया, तैफूरिया मदारिया, सिद्दीकिया मदारिया, उवैसिया मदारियां हसनिया मदारिया, महदविया मदारिया एवं बसरिया मदारिया। बुजुर्गो का कहना है कि इमाम महदी अखिरूज्जमां को सबसे पहले पहचानने वाला महदविया मदारिया का व्यक्ति होगा।

किताब ' सैरूलमदार में मआरिजुल वलायत' से और मआरिजुल वलायत में ' कशफुन्नेमात से अवतरित है कि हजरत मदार साहब उवैसी थे। क्यों कि आपने रूहानी तौर पर सरकारे दो आलम सं0 से शिक्षा दीक्षा प्राप्त की थी।

बहरहाल जब मदार साहब को हुजूर सं0 ने हजरत अली के पास छोड़ दिया तब हज़रत अली ने पहले पूर्णरूपेण शिक्षित किया तथा बाद में इमाम महदी आखिरूज्जमा के पास लाभान्वित होने के लिए छोड़ दिया। इस प्रकार इमाम मेहदी की आत्मा से भी आपने शिक्षा ग्रहण की।

'सैरूलमदार' किताब में लिखा है कि जो चारों आसमानी किताबें नबियों पर भेजी गयी जो चारों किताब जिन्नातों की कौम के लिए भेजी गयी तथा जो किताबें फरिश्तों के लिए भेजी गयीं सभी किताबों की शिक्षा मदार साहब को दी गयी तथा सभी आपको कण्टस्थ थी। फरिश्तों पर जो किताबें नाजिल हुई उन के नाम इस प्रकार हैः– मिर्रत, ऐनुर्रब, हरमाजन तथा मज़हरे अल्फ। इसी प्रकार जिन्नातों पर नाज़िल होने वाली किताबें रॉकोरी, जाजरी, सनारी एवं वोलयान है।

इस प्रकार हज़रत मदार साहब हर प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात तपस्या में लीन हो गये। एक दिन मुहम्मद सं0 ने आपको आदेश दिया कि ऐ बदी उद्दीन अहमद तुम भारत चले जाओ वहां तुम्हारी अत्यधिक आवश्यकता है। यह सुनकर आप भारत की ओर चल दिये।

अल्लाह के पसन्दीदा धर्म इस्लाम एवं रसूल–ए–वकार सं0 की शिक्षाऐं जन–जन तक पहुँचाने के लिए आप संसार में भेजे गये थे। आपकी इच्छा भी थी कि जो भी हो मैं अपने आक़ा–व–मौला का कल्मा जन समान्य तक पहुंचाकर रहूँगा। आज अपने मिशन का कार्य प्रारम्भ करने वाले हैं इस कारण आज का दिन उनकी 596 वर्ष की आयु में मील का पत्थर होगा।

नोटः इस यात्रा में आप दिन भर रोज़ा रखते और शाम को दो रोटियाँ जौ की गैब से मिलती थीं सो उनमें से एक रोटी खालेते थे और एक दान कर देते थे और कभी आठ दस दिन के बाद एक दो खजूर से इफ्तार करते।

12
भारत में प्रथम आगमन

हजरत मदार साहब मदीने से चले और अरब के तटीय क्षेत्र के स्थल मार्ग से होते हुए यमन आये और यमन के बन्दरगाह ईडन से कश्ती पर बैठकर आप भारत के लिए चले। जब आप कश्ती पर सवार हुए और कश्ती ने पानी पर आगे बढना प्रारम्भ किया तब आपने देखा कि कश्ती के सवारों के अन्दर दया, ममता, मानवता इत्यादि का अभाव है तथा यह खुदा को मानते भी नहीं

यह भटके हुए है। तब आपने लोगों को एकत्र करके अपने दीन इस्लाम के आदर्शो एवं शिक्षाओं से लोगों को अवगत कराया तथा बताया कि इस्लाम में मानवता एवं समानता का कितना ध्यान रखा गया है। इस प्रकार आपने सर्वप्रथम कश्ती पर अपने बयान से लोगों को जगाना चाहा। लोगों को समझाया कि खुदा की इबादत हो सिर्फ खुदा की पूजा अर्चना की जाती है। न कि सूर्य चन्द्र एवं समुद्र आदि को पूजा जाये क्योंकि यह सब तो खुदा ने ही बनाये हैं। इसपर लोगों ने आप को बुराभला कहा तथा क्रोधित हुए।

हजरत मदार साहब ने यह सब कुछ सहन कर लिया किन्तु खुदा को यह पसन्द नहीं आया और वह कश्ती खुदा के प्रकोप से बच न पायी। एक तुफान आया और चारों ओर से कश्ती (जहाज़) तुफान से घिर गयी लाखों प्रयास हुए किन्तु होनी को कौन टाल सकता था। सभी लोग तूफान की भेंट चढ़ गये तूफान ने जलयान के टुकड़े–2 कर दिये लोग समुद्र में डूब गये किन्तु खुदा की करनी कि मदार साहब ने एक तख्ते पर बैठे–बैठे हिन्द महासागर को पार करना प्रारम्भ किया यद्यपि अब जोखिमों से भरी हुई यात्रा थी कोई ग्यारह लोग और भी साथ थे। जो कि सभी खुद की जिन्दगी के लिए प्रार्थी थे किन्तु ऐसे कष्टमयी समय में भी हजरत मदार साहब ने अपने मिशन को रोकना पसन्द नहीं किया और साथी लोगों को धर्म इस्लाम के आदर्श बताना प्रारम्भ कर दिये। लोगों को किनारे पर जाने की चिन्ता थी। सभी लोगों को हज़रत मदार साहब की कत्र्व्यनिष्ठा प्राकण्ठा पर अचरज हुआ और कहा कि जहां अपनी–अपनी जान की चिन्ता है वहीं तुम अपने को इस प्रकार की मुर्खता में व्यस्त किये हुए हो तब हज़रत मदार साहब ने कहा कि मुझे विश्वास है कि खुदा मुझे किनारे पर जरूर पहुंचायेगा और यदि तुम लोग भी मेरे अनुसरण, करोगे तो तुम भी अवश्यक जीवित भारत पहुंच जाओगें परन्तु

उन्होंने न मानी और भूखे प्यासे तड़प–2 कर मृत्यु को प्राप्त हो गये। बस हज़रत मदार साहब ही जीवित थे जहां एक ओर उनको भूख प्यास तड़पा रही थी वहीं वह साथी लोगों के मृत शरीर देखकर व्याकुल हो रहे थे। जहां दूर–2 तक जीवन न हो वहां एक व्यक्ति पानी पर कैसे तैरता। अब मदार साहब ने अपनी चिंताओं को अपने रब (ईश्वर) के समक्ष रखते हुए प्रार्थना की कि ऐ मेरे खुदा तेरे दोस्त के आदेशानुसार अजनबी लोगों में अन्जानी डगर पर होते हुए जां रहा था। ताकि तेरी पूजा इबादत के लिए लोगों को इस्लाम का तरीका बता सकूॅं अब जब कि इस बयाबान सुनसान समुद्र पर मेरा काई सहायक भी नहीं है। तो मेरी भूख प्यास कैसे समाप्त हो तू मेरी आवश्यकताओं से मुझे आजाद कर दें न मुझे भूख लगे और न ही मुझे प्यास लगे। मेरी सभी आवश्यकताओं की समाप्ति तू कर दे ताकि मैं तेरे महबूब हज़रत मुहम्मद सं0 के मिशन को जन–2 तक सरलता से पहुंचा सकूॅं।

प्रार्थना के बाद जब आपने आकाश की ओर देखा तो कुछ पक्षी दिखाई दिये जिससे कि आपने समझ लिया कि अब बहुत जल्दी किनारा मिलने वाला है। और थोडे समय के बाद आप किनारे पर पंहुॅच गये।

आप भारत की धरती पर :– जब आप किनारे पर पहुॅचे तो आपने देखा कि एक बुजुर्ग जिनके मुख पर तेज छठा थी आपको स्वागत करने के लिए आये हैं जिन्होंने आपका नाम लेकर आपको सलाम किया। हज़रत मदार साहब ने सलाम का जबाव दिया और अचम्भे से पूछा कि आपको मैंने कभी देखा भी नहीं फिर आप मुझे कैसे जानते हैं? इस पर बुजुर्ग ने कहा कि आपको कौन नहीं जानता और अब, थोडे ही समय बाद आपको संसार के हर स्थान पर लोग जान जायेगें। इसके बाद अजनबी ने कहा "ख्वाजा ए

मा इन्तिजारत मी कशद" अर्थात हमारे आका तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह सुनते ही आप साथ–2 चल दिये। थोडा चलने के बाद देखते हैं कि झाड़ियों के जंगल में एक भव्य किला बना हुआ है। आप कई दरवाजों से गुजरे जहां हर दरवाजे पर एक व्यक्ति फ़रिश्ते के समान मौजूद है और वह भी आप को इसी प्रकार सलाम करता है जिस प्रकार कि पहले व्यक्ति ने किया था। आप सलाम का जबाव देते हुए आगे बढ़ जाते थे। फिर आप एक दालान देखते है जहां एक बड़ा सुन्दर एवं आकर्षक तख्त है पूरा दालान अति सुन्दर प्रकाशित एवं उज्जवल–2 है। तख्त पर हुजूर नबी–ए–करीम सं0 बैठे है जो आपको देखकर मुस्करा रहे हैं। हज़रत मदार साहब को सय्यदे आलम सं0 ने अपने पास तख्त पर बैठने को कहा फिर फरमाया कि ऐ बदी उद्दीन अहमद तुम्हारी दुआ को खुदा ने कुबूल किया। एक एक व्यक्ति जो कि मानवों से नहीं था। मुख पर तेज की छठा लहलहा रही थी अपने हाथों में थाल लेकर आकाश से नीचे उतरा जिसमें से आप को मुहम्मद सं0 ने एक प्याले से मीठे चावल(खीर) या मलकूती खाना के नौ कौर(निवाले) खिलाये जब आप एक निवाला खाते थे एक (संसार) आपकी आंखों में समाजाता था इस प्रकार आपको आकाश से ऊपर एवं पाताल तक जो कुछ भी था सभी कुछ दिखाई देने लगा। फिर हुजूर सं0 नं हज़रत साहब की उन्नती कपड़े (स्वर्ग के वस्त्र) पहनाये और मुख पर हाथ फेर कर कहा कि मेरे बेटे आज से तुमको भूख लगेगी न प्यास न कपडें गन्दे होगें न पुराने। मुंह पर हाथ फेरा कि मुख सूर्य के समान चमकने लगा ऐसा कि कोई देखने की हिम्मत नहीं रखता था और फिर अपना तख्त आपको देकर कहा यह तख्त यात्रा में तुम्हारी सवारी होगा। तख्त तुम्हारी इच्छानुसार उड़ा करेगा।

नोट :– चूंकि आप पर हर तबक़ जाहिर था इसीलिए आप के
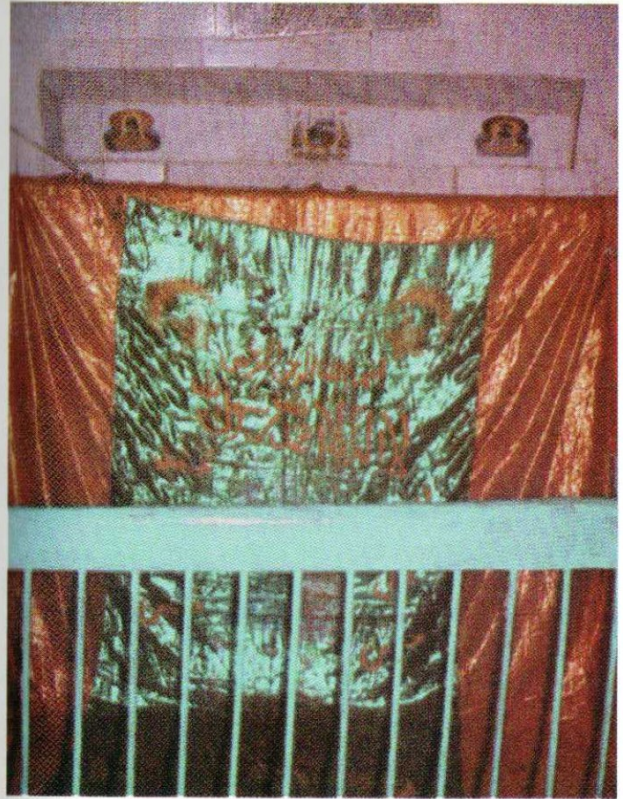
खम्बात का वह मक़ाम जहां लुक़मे–शीरब्रजं हुजूर मुहम्मद मुस्तफा सल. अल. ने सरकार मदार पाक को खिलाये आज भी यहां तीन चिल्लों के निशान मौजूद हैं। "चिल्ला हयातुन्नबी" "चिल्ला हज़रत ख़िर्ज अलैह." "चिल्ला सरकार मदार"।

सिलसिले को सिलसिल–ए–तबकातिया मदारिया भी कहते हैं।

हाशिया :–शेख शहाब उद्दीन सुहरवरदी रजि0 ने अवारिफुल मआरिफ के पेज नं0 310 पर एक हदीस पाक लिखी है कि हुजूर सं0 ने फरमाया कि दो सौ वर्ष के उपरान्त सब से बेहतर ख़फ़ीफुल हाद होगा।. लोगों ने पूछा कि खफीफुल हाज किसे कहते है तब आपने फरमाया जिस शख्स की बीवी पत्नी न हो और सन्तान न हों। कशफुल महजूब के पेज 519 पर लिखा है कि बुजुर्गो की एक जमात (ग्रुप) अकेले रहना पसन्द करती है। उन का सिद्धान्त इस हदीस पर होता है। कि हुजूर सं0 ने फरमाया खैरुन्नास–ए–फी आखिरिज्जमान–ए–खफीफुल हाद अर्थात अन्तकाल में वे लोग बेहतर होगें जो ख़फ़ीफुल हाद होगें। फिर फरमाया देखों अकेले लोग सबकत ले गये अर्थात धर्म के कामों में जिन लोगों का विवाह नहीं हुआ अधिक रूचि लेते हैं तथा विवाहित लोगों से अधिक धार्मिक होते हैं। हज़रत सय्यद बदी उद्दीन ने पूरा जीवन अविवाहित व्यतीत किया है। हूजूर सं0 ने आपको जब खाना खिला लिया तथा वस्त्रों को भी पहना दिया तब आपको मकाम–ए–समदियत पर फाइज किया अर्थात वलियों में यह एकपद है जिसे कि वास्तविक रूप में खुदा और उसका रसूल ही जानता है। किन्तु फिर भी इतना तो स्पष्ट है कि इस पद पर सुशोभ्जित वली को न तो भोजन की आवश्यकता होती है न वस्त्रों को बदलने की और न ही विवाह की आवश्यकता होती है। इन को नींद पर भी अधिकार प्राप्त होता है।

मकाम–ए–समदियत पर वह होता है जिसे न भूख लगे न नींद और न ही कोई दूसरी आवश्यकताऐं उसे परेशान करती हैं। न उसे किसी प्रकार का भय होता है और न ही शरीर पर मक्खी बैठती है। मिट्टी और सोना उस के लिए एक ही मूल्य रखता है। पूरे संसार को वह ऐसा देखता है कि हथेली

पर सरसों हो। वह चाहे तो वायु में उड़ा करे चाहे तो पृथ्वी पर चले वह चाहे तो पानी पर यूँ चले जैसे पृथ्वी के खुष्क क्षेत्र हों।

चूंकि हुजूर सं0 ने अल्लाह के आदेशानुसार आप को भोजन एवं वस्त्र पहनाकर आपको मकाम–ए–समदियत से सरफराज़ किया था। अतः अब आपको नींद, भूख, प्यास, थकान, आदि की आवश्यकता ही न रहीं जहां चाहा तख्त को इशारा करके चल दिये।

हज़रत गुलाम अली नक़्श बन्दी मुजदि्ददी ने दुर्रुल मुआरिफ के पेज नं0 243 पर लिखा "रोजे दर मजलिस शरीक मजकूरे अकताब आमद हजरतफर मूदद हक सुब्हानहू इजराए कारखाना–ए–हस्ती व तवाबेए हस्ती कुतबुलमदार रा अता मी फरमायाद व हिदायत व इरशाद ओ रहनुमाई गुमराहान बदस्ते कुत्बुल इरशाद मीं सिपारद बाद अजॉ फरमूदन्द हजरत बदी उद्दीन शाहमदार कुदस सिर्रहु कुत्बुल मदार बूदन्द व शाने अंजीम दारंद व इशां दुआ करदा बूदन्द कि इलाही मरा गुरसिनगी नशवद व लिबासे मन कुहना न गर्दद व हम चुनाँ शुद कि बाद अंजा दुआ दर तमामे हयात बकिया तआमे न खुर्दन्द व लिबासे ईशां कुहना न गश्त हमू यक लिबास ताब ममात किफायत कर्द।

अर्थ :–एक दिन महफिल में कुत्बुल मदार की चर्चा हुई तो गुलाम अली नक्शबन्दी ने फरमाया अल्लाह पाक ने संसार को कुत्बुलमदार के अधीन कर दिया। भटके हुए लोगों जो कि जीवन के इस्लामिक ढंग से अन्जान है को मार्ग दर्शन देने का कार्य कुत्बुल इरशाद करता है। फिर कहा हजरत सय्यद बदी उद्दीन कुत्बुल मदार थे ऊँचा मकाम था उन्होंने प्रार्थना की थी ऐ रब मुझे भूख प्यास का आभास न हो बस फिर पूरा जीवन कुछ खाया नहीं और एक ही जोड़ा कपड़ों में व्यतीत कर दिया।

इसी प्रकार हज़रत अब्दुलहक मुहदिदस देहलवी की किताब अखबारुल अखियार में लिखा है:– शेख बदी उद्दीन मदार गराइबे अहवालव अजायबे अतवार अजवै नक्ल मी कुनंद गोयन्द कि वै दर मकाम–ए–समदियत कि अज़ मकामाते सालिका नस्त बूद। ता दो आजदह साल तआमे न खुरदह व लिबासे कि यक बार पोशीदह बारे दीगर एहतियाजब तजदीदे गस्लेऊ नशुद अकसर औकात बुरका बर रू कशीदह बूदे गोयन्द हर कि नज़र बर जमालेऊ उफ़तादे बेइख्तियार सुजूद कर दे।

अर्थ :–शाहमदार बदी उद्दीन के अनोखे–2 हालात थे। कहते है कि वह मकाम–ए–समदियत पर थे जो सालिकों का स्थान है उन्होंने बारह वर्ष तक खाना नहीं खाया। जो वस्त्र धारण किये उनको धोने की आवश्यकता न हुई और अधिकतर मुख पर परदा डाले रहते थे। कहते है कि जो उनके चेहरे को देखता तो तुरन्त सज्दे में गिर जाता था।

सरकार मदार के भोजन न करने, वस्त्र न बदलने की कई किताबों बात आयी है उदाहरणार्थ फुसूल मसऊदिया, तजकिरतुल मुत्तकीन आदि में भी आप के बारे में यह सब लिखा है।

13
जिन्नातों के राजा का मुरीद होना

इतिहासकारों ने लिखा है कि सरकार मदार भारत की बन्दरगाह "मालाबार" जो कि खम्बात के तटीय क्षेत्र में हैं तथा पुराने समय में भारत का प्रमुख बन्दरगाह था। मालाबार से जब सरकार ने आगे बढ़ना प्रारम्भ किया तब जिन्नातों के बादशाह "इमादुल मुल्क" ने आपके तख्त को आकाश में उड़ते देखा तो पास आया और कहा शाहा चे अजबगर बनवाजन्द गदारा।" इस पर सरकार ने फरमाया वलातुहिब्बुद्दुनिया फतकूनू मिनल खासिरीन।" इमादुल मुल्क ने कहा कि आप सत्य कहते हैं किन्तु इच्छाएं प्रबल होती हैं। तब आपने फरमाया "वल्लाहो गालिबुन अला कुल्ले गालिब" उसने कहा कि अब तक बड़े कष्ट में रहा संसार से मुक्ति का उपाय बताइये। आपने फरमाया वला तकननूमिन रहमतिल्लाहे फइन्नहुर्रहम नुर्रहीम उसने विनती की मेरे सिर पर मुकुट का बोझ है जो कि राज्य के दबाव से दबाये हुए है। फरमाया खैरूल गिना गिनाअनिन्नफ्स व खैरूज्जादित तकवा। इस वार्तालाप का प्रभाव इमादुल्कमुल्क पर इतना पड़ा के उसने राज्य सिंहासन अपनी पुत्री को दे दिया और स्वयं सरकार की गुलामी में रहने लगे कुछ इतिहासकारों ने लिखा कि यह सरकार के हाथ पर मुसलमान भी हुए थे।

नोटः– काल्पी में सिराजुद्दीन के वाक़ेआ के समय इमादुल्मुल्क आपके दरबान थे तथा आपके इशारे पर ही दीवार ऊँची होती रही थी।

बहरहाल सरकार ने इमादुल्मुल्क को अपना खलीफा

भी बनाया था। यह जीवन भर सरकार के साथ–2 रहते थे तथा दरबानी का कार्य करते थे। जिस समय सरकार भारत आये तो मालाबार (खम्मात) के बन्दरगाह पर उतरे इस शहर के भाग्य पर जितना भी गौरव किया जाये कम है क्यों कि हि0 282 यथा 871 ई0 में जब सरकार यहां आये कि इनकी हिदायत से भारत और भारत ही क्या पूरा संसार आपसे लाभान्वित होगा। सुफियों संतों की बाढ़ सी आ जायेगी। संसार को इस्लाम की किरणों से प्रकाशित कर देगा।

सरकार से पहले भारत में कोई चार या साढ़ें चार हजार वर्ष पहले आर्यो ने भारत की धरती पर अत्याचारों, हिसाओं का ताण्डव बजाकर यहां की सहिष्णुता भाईचारा एवं अहिंसा को नष्ट कर दिया। ये लोग सूर्य, अग्नि, चन्द्र आदि की पूजा करते थे तथा शासक थे। इनके बाद कोई 527 ई0पू0 महात्मा गौतम बुद्ध एवं महावीर जैन ने अपने धर्म का प्रचार किया गौतम बुद्ध भी शासक परिवार से थे तथा इन का देहान्त 783 ई0पू0 हुआ। 321 ई0पू0 भारत में मौर्य वंश का शासन स्थापित हुआ जो कि 150 ई0पू0 तक था चूंकि चन्द्रगुप्त मौर्य नामक शुद्र स्त्री का पुत्र था इस कारण इसे मौर्य कहते हैं इस वंश के महान शासक अशोक बर्द्धन के समय में प्रजा को बड़ी सुविधिएँ एवं शालीनता प्राप्त हुई थी। इसके काल में बौद्ध धर्म का प्रचार जोर से हुआ चूकि सम्राट अशोक स्वयं बौद्ध धर्म का अनुयायी था अतः उसने पडोसी राज्यों में भी धर्म प्रचार कराया तथा जनता ने इस धर्म को स्वीकार किया था। 900 वर्ष तक भारत एवं पडौसी देशों में बौद्ध धर्म ही प्रमुख धर्म के रूप में था जिसे चीन के हूंजसांग ने 15 वर्ष भारत में अपनी यात्रा में व्यतीत करते हुए बडें गौरव से लिखाहें वह भारत में 645 ई0 तक 15 वर्ष रहा तथा भारत के बडे भू–भाग पर घूमा था। उसने लिखा कि भारत एवं पडौसी देशों में इस समय प्रमुख

धर्म बौद्ध धर्म है। हिन्दू धर्म को कोई विशेष महत्व नहीं प्राप्त है। इसी समय मक्का में हुजूर सं0 ने अपनी नबुव्वत का एलान किया था।

अरब एवं भारत में व्यापारिक वर्ग की आवाजाही के कारण ही भारत में इस्लाम की सूचना पहुंची थी। तथा मोजिजा चांद के टुकडे होने के समय कुछ अरब के व्यापारियों को भारत में चांद के टुकडें होने की घटना का सुबूत मिला जिससे कि कुछ भारतीय मुसलमान भी हो गये।

मुहम्मद बिन कासिम से पूर्व कुछ सहाबी हजरात जैसे खुमैर बिन रबी रजि0 भारत आये थे। 93 हिजी (712 ई0) में मुसलमानों के जलयानों को सिन्ध के डाकुओं ने लूट लिया तथा राजा दाहिर ने उनकी कोई सहायता न ही की तब मुसलमानों ने भारत पर आक्रमण करके सिंध प्रान्त पर कब्जा कर लिया था। इस समय मुसलमानों का शासन पुर्तगाल, स्पेन, रोडस द्वीप, अफ्रीका महाद्वीप, शाम फिलस्तीन, अरब, यमन, ईरान, काबुल, कंधार, रूस, तुर्की एवं चीन आदि पर स्थापित हो चुका था। परन्तु भारत के बारे में मुसलमानों में कोई सोच भी नहीं थी। किन्तु जहाज लूटे जाने के बाद हजाज बिन यूसुफ ने मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में मुस्लिम सेना को भारत पर आक्रमण के लिए भेजा तथा विजय भी प्राप्त की। किन्तु इस्लाम का प्रचार सेनाओं ने नहीं बल्कि सूफी सन्तों ने किया। और ऐसे बुजुर्गो में शाहमदार का नाम सर्वोपरि है क्यों कि आप ही सर्वप्रथम आने वालों बुजुर्ग है। जिस समय आप हिन्द आये तब यहां अत्यधिक देवी देवता आदि की पूजा होती थी। वृक्षों , सूर्य , चन्द्र , जल , गाये आदि की पूजा की जाती थी। स्थिति यह थी कि जो व्यक्ति जितना बड़ा जादूगर था वह उतना बढ़ा देवता माना जाता था। जो व्यक्ति आसन्न पद इन्द्रियों को बन्द करके जितनी देर तक बन्द

करके सांस रोक लेता वह उतना बड़ा गुरू होता था। चूंकि भारत में ऐसे तरीके से ही ऋषियां मुनियों को सम्मान प्राप्त था। अतः सरकार मदार ने इस्लाम के प्रचार के लिए अनोखे ढंग से इबादत करना प्रारम्भ की जिसे कि "हबस दम" कहते हैं। आप स्वयं तो हबस दम करते थे साथ ही साथ अपने खलीफा चेलों आदि को भी हबस दम का आदेश दिया । इस प्रकार आपके साथी भी आंखों को बन्द करके लीन हो जाते थे तथा ऐसे लीन होते थे कि छःछः मास तक सांस नहीं लेते थे। पहली सांस लाइलाह इल्लल्लाह कहते हुए लेते तथा दूसरी सांस मुहम्मदर्रसूलुल्लाह कहते हुये लेते थे। यूं भी चेहरे पर कई–2 नकाब पड़ी रहती थी। भोजन वस्त्रादि की आवश्यकता थी नहीं। अतः आपके पास लोगों की भीड़ लग जाती थी। जब आप आंख खोलते तो लोगो के दुःखों, कष्टों को दूर करते और बीमार लोगों की बीमारी दूर कर देते थे। निःसन्तान लोगों को सन्तान रत्न मिलता आप जिस के लिए दुआ कर देते वह कुबूल हो जाती । अब लोग सुखी थे। अतः लोगों में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ी हुई थी इसलिये आपका हर आदेश मानने को तैयार थे। आप जनता को इस्लाम के आदर्श–शिला से अवगत कराते तथा उनको समाज में प्रचलित अंधविश्वास, कर्मकाण्ड आदि की बुराई से अवगत करते फलतः इस्लाम का प्रसार तेजी से होने लगा। पांच वक्त अजान की आवाजें आना प्रारम्भ हो गयीं ।

14
अन्धे ने आँखें पाई

खम्बात से आप सूरत आये। सूरत में उस समय काफी सुकून था आबादी कम थीं चारों ओर हरे–2 बाग और खेती लहलहा रही थी। शीतल वायु फूलों की सुगन्ध को चारों ओर फैला रही थी। लोगों ने हजरत मदार साहब की चर्चा तो सुनी थी अब देखने का मौका भी मिल गया बस फिर तो खम्बात से भी अधिक भीड़ आप के पास आती और अपनी मन्नतें पूरी कराती शहर पहुंचते ही आपको एक अंधा (नेत्रहीन) भिखारी मिला जो कि लोगों की दया पर ही निर्भर था। आपने वुजू बनाया और बचे हुए पानी से अंधे की आंखों को मल दिया फलतः उसकी आंखों में चमक आ गयी संसार की रंगीनियां वह अब देख सकता था। लोगों में हर्ष की लहर दौड़ गयी अब क्या था लोग आपके बताये रास्ते पर चल दिये और इस्लाम धर्म को कुबूल करना प्रारम्भ कर दिया।

15
शेख मुहम्मद लाहौरी का हज

हजरत मदार साहब भारत से कई बार हजके लिए गये और विभिन्न देशों राज्यों होते हुए फिर भारत आजाते थे। अब आप सूरत में एक बार फिर आये और दूर–2 तक आप का चर्चा होना प्रारम्भ हो गया इसी समय हजरत शेख मुहम्मद लाहौरी हज के लिए जा रहे थे जब आपने हजरतमदार साहब के बारे में सुना
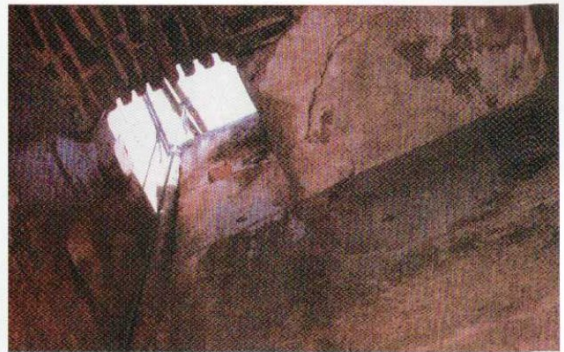
खम्बात में पहाड़ी के ऊपर चिल्ला है इस रास्ते पहाड़ी के अन्दर है दालान आज भी देखा जा सकता है जिसका तारीखे मदारे आलम में ज़िक्र है।

चिल्ला गाह सरकार मदार – भीड़वाड़ा, राजकोट।

तो फौरन ही मुलाकात के लिए चले आये। जैसे ही इनकी नजर हजरत मदार साहब पर पड़ी । देखते ही रह गये यद्यपि चेहरे पर नकाबे पडी है मगर तेज की छटा साफ जाहिर है विलायत की शमा (मदार) के आस पास परवानों की भीड़ उमड़ी आ रही है। लोग अपनी अपनी इक्षानुसार झोलियाँ भर रहे हैं – दयालू मदार बाबा के गीत गा रहे हैं। शेख मुहम्मद लाहौरी गुरू जी की सेवा में उपस्थित होकर भूल गये कि हज यात्रा पर निकले थे। शेख मुहम्मद लाहौरी को गुरू मदार ने अपने सिलसिले में मुरीद एवं खलीफा बनाने की आज्ञा प्रदान की वे इसी नुर व रहमत की वर्षा में मग्न नहाते रहें। अचानक उन को याद आया कि घर से हज यात्रा पर निकले थे लेकिन अब क्या था हज का समय नज़दीक आ चुका था। इतने समये में सूरत से मक्का नहीं पहुँच सक्ते थे। इसी विचार से व्याकुल हो गये। दुखियारों के दयानिधे ने दया की दृष्ट से देखा और मीठी मीठी प्रेम भावना की आवाज से पुकारा–मुहम्मद लाहौरी ! क्या विचार है क्यूँ व्याकुल हो ? क्या हज न कर पाने का गम है? गम न करो तुम मेरा तवाफ कर लो तुम्हारा हज हो जायेगा – शेख मुहम्मद लाहौरी ने गुरूजी का आदेश पाते ही खुशी खुशी हजरत मदार साहब का तवाफ कर लिया (चक्कर लगाये) उस समय उन्होंने देखा कि गुरू महाराज हजरत मदार साहब तो हैं नहीं परन्तु काबा है जिसका मैं तवाफ कर रहा हूँ – जब चक्कर पूरे हो गये तो अपने आप को गुरू जी की सेवा में उपस्थिति देखा कुछ दिन बीत जाने के बाद एक दिन सोचने लगे कि अल्लाह जाने ये हज हुआ भी कि नहीं इसी चिन्ता में परेशान रहने लगे मगर गुरू जी पर ये भेद भी खुल गया मदार साहब बाबा ने उनको अपने पास बुलाया और अपना हाथ उनकी आँखों पर रख दिया तो शेख मुहम्मद ने देखा कि खाना–ए–काबा में हाजिर हैं हजरत मदार साहब ने फरमाया कि हज की सारी रसमें पूरी करलो। आदेशानुसार शेख मुहम्मद ने हज व जियारत

की तमाम रसमें पुरी कर ली पॉच महीने अरब की पवित्र धरती पर रहे। उसके बाद फिर अपने आपको गुरू मदार साहब की सेवा में उपस्थित देखा। जब वे लोग हज से लौटे जिनकी भेंट वार्ता मुहम्मद लाहौरी से हज के समय हुई थी और उन्होंने भेंट वार्ता का सारा हाल मुहम्मद लाहौरी को बताया तो मुहम्मद लाहौरी को विश्वास हो गया कि हमारा हज अदा हो गया और मदीना ए पाक की हाजिरी कुबूल हो गई।

16
शहर सूरत में कयाम

अल्लाह वालों का नूरानी काफिला सूरत में रूका हुआ था और जहाँ हजरत मदार साहब का स्थान होता सैकडों लोग सेवा में उपस्थित रहते नागरिक आपकी आवभगत में लगे रहते मुसलमानों के प्रेम व्यवहार से प्रसन्न होकर उन के करीब होते जाते मुसलमान नमाज़ पढ़ते तो उनका एक इमाम होता बाकी लोग उस के पीछे नियत बाँधे खडे होते और नमाज़ अदा करते लोग मुसलमानों की इस ढंग की तपस्सिया की सराहना करते और देखने वालों का मेला लग जाता मदार बाबा अपने मुख पर से नकाब अगर उठा देते थे तो सब के सब बेहोश हो जाते और जब होश में आते तो लाइलाहः इल्ललाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहे पढ़कर मुसलमान बनजाते थे। (अनेकों लोग इस प्रकार मुसलमान हुये) इन दिनों शहर सूरत का बडा अनोखा हाल था लगता था कि जैसे हर घर में शादी है हजरत मदार साहब क्या पधारे जैसे खुशियों का मेला आ गया हो। लोग दौड़े हुये चले जा रहे हैं कोई निसन्तान है तो सन्तान के लिये कोई बीमार है तो बीमारी से छुटकारे के लिये कोई मुकद्में में फँसा है तो कामियाबी के लिये

कोई दुखी है तो सुख के लिये सरकार मदारूल आलमीन के आश्रम में हाजिर होता। सरकार जिस के लिये दुआ कर देते उस की मनोकामना पूरी हो जाती हजारों की तमन्नायें पूरी हुई – सैकड़ों मुसलमान हुये सूरत में आप ने तीन जगहों पर कयाम किया तीनों स्थान "मदार चिल्ला" के नाम से आज भी चर्चित हैं – एक दिन क्षण भर में यह समाचार लोगों में घूम गया कि सय्यद बदी उद्दीन कुत्बुल मदार रजि० शहर से प्रस्थान करने वाले हैं। तो लोग बहुत दुखी हुये जैसे उन के पाँव के नीचे से जमीन सरक गई हो। समय की गति रूक गयी हो दीवानों का अनौखा रंग ढंग था। कई दिनों से महाराज की सेवा में लगे थे। लेकिन उन्हें यह लगता था कि हुजूर अभी पधारे हैं उन्हें यह कहॉ लगता था कि हुजूर इतनी जल्दी छोड़ कर चले जायेगें जिस को भी यह समाचार मिलता कि हुजूर प्रस्थान करने वाले हैं वो ही दुःखी हो जाता लोग रोते हुए आपके पास आये और विनती की कि मुझसे जो गलती हो गयी हो आप क्षमा कर दें कि चाहे सजा दें किन्तु मुझे अपने दर्शन से वंचित न करें। सरकार मदार फरमाने लगे कि नहीं मैं एक स्थान पर नहीं रूक सकता तुम लोग चिंतित न हो मैं तुम सब को लाभाविन्त अवश्य करता रहूँगा । मैं फिर जल्दी ही वापस आजाऊँगा क्योंकि मे भारत के प्रत्येक शहर में इस्लाम फैलाने के लिए भेजा गया हूँ फिर भी मैं तुम्हारे बीच अपने कुछ साथियों को छोड़कर जाऊँगा जो तुम्हें इस्लाम की शिक्षा देते रहेंगे और तुम सभी की मुरादें पूरी करते रहेंगे और खूब ध्यान से सुनो जो कुछ मैंने तुम को सिखाया है वे सभी इस्लाम की शिक्षाएं तुम सब याद रखना और कुरानो सुन्नत पर कायम रहना । दीन इस्लाम को भी न छोड़ना यह धर्म तुम्हें मुझसे पहुंचा है जो कि हमे भी हज़रत मुहम्मद स०. से पहुंचा है। यह धर्म ईश्वर का पसंदीदाह धर्म है। इन्नद्दीनः इन्दल्लाहिल इस्लाम इसी प्रकार आपने और भी बातें बताई।

17
हुजूर खम्बात में

फिर आप सूरत से खम्बात पहुंचे यहां पर एक चिल्ला किया जो कि शिक्षा एवं अहिंसा के लिए सदैव प्रज्जवलित रहने वाली मशाल है। यहां का राजा "जसवंत सिंह" आपसे प्रभावित होकर आपके पास आया और मुसलमान हो गया सरकार ने इसका नाम जाफ़र खां रखा। जसवंत सिंह ने मुसलमान होने के बाद कई मस्जिदों का निर्माण कराया जो कलान्तर में जाफ़र खां के नाम से जुड़कर इसी नाम से प्रस्द्धि हुईं। फिर अनैकों गांवों शहरों से होते हुए भड़ोच पधारे।

18
ज़िन्दाशाह मदार भड़ोच में

भड़ौच में आपके चमत्कारों एवं आदर्शो से प्रभावित होकर 3600.0 व्यक्ति एक साथ मुसलमान हो गये। हजरत मदार साहब जब कभी किसी दूसरे स्थान को प्रस्थान करते तो अपने कुछ मुरीदीन छोड़ देते ताकि वे नये मुसलमानों को इस्लाम की शिक्षा दे सकें। भड़ौच की जनता के साथ–2 राजा भी हजरत की प्रतीक्षा करते थे तथा प्रार्थी थे कि हुजूर एक बार अवश्य इस द्दारती को गौरवान्वित करें। यहां की भूमि कृषि के लिए सर्वोत्तम भूमि में से है। लोग प्रसन्नचित एवं उदारवादी सोच के थे। हज़रत लोगों को हर प्रकार से भलाई एवं उत्थान की शिक्षा देते रहे। लोग

आपके पास आते और अपने कष्टों की व्यथा सुनाते सरकार सभी के लिए आर्शीवाद की दौलत लुटा रहे थे अंपने खुदा से सभी की भलाई एवं इस्लाम के उत्थान की प्रार्थना करते लोगों में अब हर्ष की लहर दौड़ गयी किसी की आंखों में रोशनी आ गयी तो कोई सन्तान पा गया किसी के कष्ट दूर हो गये तो किसी के दुःख समाप्त हो गये फलतः हजरत की चर्चा राजा के दरबार में किसी न किसी प्रकार अवश्य होने लगी। यहां भी आपने कई चिल्ले किये। जिनके अवशेष आज भी मौजूद हैं फिर आप पादरा के लिए चल दिये यहां भी आपकी चर्चा जनता की जबान पर आम थी लोगों ने आज तक आप को सुना था अब देख रहे थे कि यह वही मनीषी बुजुर्ग हैं जो कि चेहरे पर कई नकाब डाले रहते हैं। किन्तु मुख की छटा एवं तेज छुपाये नहीं छुपती है। जो चेहरे पर गौर से देख लेता वह सीधे–2 सज्दे में गिर जाता और फिर जब उठता तो पढ़ लेता लाहलाहः इल्लल्लाहो मुहम्मदुर्ररसूल्लाहे। लोगों में इस्लाम के प्रति रूचि बढ़ती जा रही थी काफी लोगों के मुसलमान हो जाने के बाद हजरत मदार साहब खम्बात की ओर आये।

19
दूसरे हज का सफ़र

फ़िर यहां से आप हज के लिए जलयान द्वारा अरब पहुँचे। और हज अदा किया फिर आपने काबा शरीफ में तकरीर की कि भारत एक ऐसा देश है कि जहां की जनता बहुत ही शालीन और सभ्य है उनको इस्लाम की शिक्षा की आवश्यकता है। इस तकरीर के प्रभाव से आपके साथ बहुत से लोग हो गये जो कि विभिन्न देशों के थे। अब आप इराक पहुंचे जहां आपने इस्लाम का झण्डा ऊँचा किया इराक के विभिन्न शहरों से होते हुए और

लोगों की मुरादें पूरी करते हुए आप बगदाद शहर पहुंच गये और कुछ दिन ठहर कर लोगों को आपने इस्लाम की शिक्षा दी और फिर बुखारा आये। आपके साथ सय्यद ताहिर नामक महान सूफी हर समय रहा करते थे और मात्र एक चावल खाते थे। उनसे आपने फरमाया कि बहुत ही जल्द यहां के कुतुब का देहान्त होने वाला है। यदि तुम चाहों तो मैं तुमको यहां का कुतुब बना दूँ। सय्यद ताहिर ने विनती की कि हुजूर मुझे पूरे संसार का कुतुब बनाया जाये और इस के लिए आपसे जुदा होना पड़े तो मैं यह पद कभी न लूगा। मैं आपसे बिछड़कर जी न पाऊँगा। यद्यपि आप मात्र एक चावल ही खाते थे फिर भी सरकार ने कहा कि तुमसे भोजन की गंध मैं कब तक सहन करूँ फिर आप वह खाना भी छोड़ दिया।

20
कुत्बुल मदार इस्राईल के जंगल में

कशफूल महजूब के पेज 326 पर दातागंज बख्श लाहौरी ने लिखा है कि हजरत अबूबक्र वर्राक़ कहते है कि एक दिन हकीम तिरमिजी ने मुझसे कहा कि ऐ अबू बक्र आज मैं तुम को अपने साथ ले जाऊँगा । मैंने कहा कि शेख का आदेश मेरे सिर आंखों पर और मैं पीछे–2 चल दिया कुछ देर बाद मैं एक घने जंगल मे था जहां एक हरे भरे पेड के नीचे एक तख्त पर एक व्यक्ति बढ़िया वस्त्र धारण किये हुए बैठे थे। पास ही जल प्रपात था। जब हकीम तिरमिजी उनके पास पहुंचे तो थोड़ी देर के बाद वहां लगभग और लोग पहुंचे यहां तक कि सब चालीस लोग एकत्र हो गये । तख्त पर बैठे हुए बुजुर्ग ने उसी वक्त आकाश

की ओर अपनी उंगली से इशारा किया तो खाद्य पदार्थ आकाश से नीचे आने लगे जिसे सभी ने खाया। हकीम ने कोई प्रश्न पूछा तो बुजुर्ग ने व्याख्यात्मक उत्तर दिये जिसे मैं समझ तक नहीं सका। फिर थोडी देर के बाद आने की आज्ञा प्राप्त कर हम वापस लौट आये कुछ समय के बाद तिरमिजी फिर आये तो मैंने पूछा कि वह बुजुर्ग कौन थे तो हकीम ने जबाव दिया कि वह बुजुर्ग हजरत कुतबे मदार थे और वह स्थान इस्राईल का घना जंगल था।

21
मदार साहब मुल्क शाम में

हजरत मदार साहब इस्लाम का प्रचार करते हुए मुल्क शाम (सीरिया) पहुंचे और विभिन्न शहरों गावों में होते हुए शहर हलब आये और अपने घर परिवार से मिले फिर कुछ दिन पश्चात भारत की ओर पुनः प्रस्थान किया । शेख शाह जाफ़र कुदससिर्रहु ने एक बार बारह वर्ष की तपस्या की यहां तक कि धूल गर्दा शरीर पर इतना एकत्र हो गया कि शरीर पर घास फूस उग आयी। तमाम ठण्ड, गर्मी और वर्षा ऋतुएं बुजर्ग पर यूँ ही कट गयी मगर यह अल्लाह की याद में कुछ ऐसे डूबे कोई पता ही न चल सका और जब तपस्या समापत हुई तो सीधे हजरत मदार साहब की सेवा में उपस्थिति हुए आपने बड़े प्यार एवं प्रेमभावना से अपने पास बिठा कर उनका हौसला बढ़ाया और उन पर दया की वर्षा की।

हज़रत मदार साहब की आदत में था कि जब कोई घोर तपस्या करके आता तो आप ऐसा व्यवहार करते कि सारे दुःख और कष्ट क्षण भर में भूल जाता था।

22
शाहे तबकात अहमदाबाद की धरती पर

हजरत मदार साहब ने भारत आकर यहां के कई शहरों एवं गांवों में इस्लाम धर्म की शिक्षाओं एवं आदर्शों से लोगों को अवगत कराया और फिर गुजरात पहुंचे गुजरात के शहर अहमदाबाद में जिन स्थानों पर आप ठहरे थे वहां आज भी प्रमाण के तौर पर अवशेष पाये जाते हैं चूंकि भारत में धीरे–2 आपको प्रसिद्धि प्राप्त हो चुकी थी। इसलिये आप जहां जाते वहां लोग आपकी प्रतीक्षा में व्याकुल मिलते । हजरत शम्स उद्दीन हसन अरब का बयान है कि जब आप अहमदाबाद पहुंचे तो तुरन्त ही लोगों की भीड़ एकत्र होना प्रारम्भ होगयी और यह भीड़ दिन प्रतिदिन बढ़ती गयी आपके आगमन का समाचार सुनकर लोग आपकी सेवा में उपस्थित होते रहे और आप की दुआओं वरदानों से मन की मुराद पाते रहे लोगों में आप इस्लाम के प्रति रूझान बनाते और समय–2 पर इस्लाम की शिक्षाओं से अवगत कराते लोग इस्लाम को कुबूल कर लेते । मीर शम्सउद्दीन कहते हैं कि कुछ ही दिनों में 36000 व्यक्ति इस्लाम के दामन में आ चुके थे। जिन्होंने हुजूर के आदेशानुसार मस्जिदों, कुओं एवं शिक्षण संस्थानों की स्थापना प्रारम्भ की । यहां का राजा बलवान सिंह आपसे मिलने आया तो जैसा सुना था उससे अधिक पाया बस आपके आदर्शों से हार गया और तुरन्त इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया । सरकार ने उसका नाम जोर आवर रखा और आदेश दिया कि कुछ मस्जिदों और कुओं का निर्माण कराओ।

राजा जोर आवर खां ने कई मस्जिदों तथा कुओं का निर्माण कराया। पालनपुर में आपके आगमन के अवशेष चिन्ह जैसे मदारचिल्ला एवं जोर आवर पैलेस इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

मदार चिल्ला शरीफ – अदनादा, दातार ।

23
वलियों का महाराजा खम्बात में

फिर गुजरात के कई शहरों से होते हुए खम्बात पहुंचे यहां का राजा जसवन्त सिंह सरकार की सेवा में उपस्थित हुआ और ऐसा प्रभावित हुआ कि समय–समय पर आपकी सेवा में उपस्थित होने लगा। फिर एक दिन कहा कि हुजूर मुझे भी आप संसार के कर्मकाण्डों एवं प्रचण्डों से बचाइये अपने दामन में ले लीजिए। सरकार ने फिर राजा जसवन्त सिंह को मुसलमान किया तथा राजा के साथ स्वेच्छा से इस्लाम .कुबुल करने वाली प्रजा की संख्या भी बहुत अधिक थी। राजा का नाम सरकार ने जाफर खां रखा और फिर आप दुबारा हज के इरादे से मक्का की तरफ चल दिये, जब आप मक्का पहुंचे तो कुछ समय के बाद हज अदा करने का समय आ गया आपने हज अदा किया और फिर मदीना पहुंचकर अपने सरकार के हुजूर सलाम अर्ज किया तत्पश्चात आप इराक़ आये और यहां नजफ्फे अशरफ, कर्बला फिर बग़दाद आये।

24
बग़दाद में बड़े पीर साहब से मुलाक़ात

इसी समय सय्यदना गौस पाक (बड़े पीर) वल़ायत की मंजिलें तै कर रहे थे आप पर जलाल का आलम था जब किसी पक्षी पर आपकी नजर पड़ जाती तो वह तुरन्त जल जाता था कोई मनुष्य आपके सामने टिक न पाता था। किन्तु जब सय्यद बदीउद्दीन मदार साहब ने आपकी यह स्थिति देखी तो आपने

पास पहुंचकर फरमाया कि ऐ मेरे भाई हमारे दादा मुहतरम रहमतुल्लिल आलमीन हैं बस फिर क्या था आपकी यह स्थिति बदल गई जलाली से जमाली हो गये सब कुछ शीतल –शीतल होगया आंखों से गर्मी समाप्त हो गयी । सय्यदना गौस पाक रजि0 हुजूर मदार पाक की यह पहली मुलाकात थी। फिर आप बदखशान गये।

25
बदख्शान में प्रस्थान

बदख्शान में आप एक जगह एतकाफ में नमाज पढ़ रहे थे और जब अल्लाहुअकबर तकबीर कही तो मौलाना हुसैन तथा दूसरे साथी बेहोश हो गये जब लोग होश में आये तो मौलाना हुसैन साहब को उनके साथी आपके समक्ष लाये हुजूर ने मौलाना को उनके साथियों सहित मुरीद किया तथा खिलाफत भी दी । हजरत फजलुल्लाह बदख्शानी को भी आपने अपना मुरीद व खलीफ़ा बनाया। मौलाना हुसैन और फजलुल्लाह बड़े करामाती चमत्कारिक बुजुर्ग हुए जिन से लोगों ने खूब फैजेमदार पाया। बदख्शान के बाद हुजूर मदार पाक मिस्र देश की ओर चले।

26
मिस्र की धरती पर

मिस्र देश के अनेकों देहाती क्षेत्रों शहरों और गावों में आपने इस्लाम के मिशन का तेजी से प्रचार किया सहस्त्रों की अंधकारमयी शैली को इस्लामी ढंग–रंग में बदल दिया। बड़े–बड़े

बुजुर्ग और अल्लाह वालों की जमात तैयार कर दी मदरसे और मस्जिदें निर्माणधीन होकर पृथ्वी पर सिर मोर्य हुई।

एक बार मिस्र देश के प्रसिद्ध हकीम अहमद मिस्री नदी में गुस्ल कर हरे थे । उनसे उनके शागिर्द ने पूछा कि क्या हो गया ? कहने लगे कि मिजाज एत्दाल पर है। थोड़ी ही देर में विशैली वायू का प्रभाव हो जायेगा और यह कह कर नदी के बाहर आ गये । इसी समय ऐसी विषैली वायु चली कि पूरे शहर में बीमारी फैल गयी। हकीम साहब ने बीमारों के इलाज में पूरा जोर लगा दिया किन्तु खुदा की मर्जी दूर न हुई। उस समय मदार साहब वहां से गुजरे। फरमाया हकीम अहमद तुम खुदा के अजाब को दूर नहीं कर सकते। यह खुदा का अजाब है और जब तक शहरवासी यतीम बच्चों का माल नहीं देगें दूर नहीं होगा। इसके बाद हकीम अहमद मिस्री हुजूर से मुरीद हुए तथा शहर के अधिकांश लोग भी आपके पास आकर मुरीद हुए तथा तौबा की गुनाहों से और यतीमों का माल वापस कर दिया। इसके बाद शहर से बीमारी दूर हो गई और लोगों ने राहत महसूस की ।

27
जिन्दावली नीम रोज़ में

फिर आप नीमरोज देश में गये वहां के बड़े मरतबे के बुजुर्ग हजरत शाह लुत्फुल्लाह ने इस दिन स्वप्न में देखा कि हुजूर रहमते आलम स0 ने हुजूर मदारेपाक की सेवा में जाने का आदेश दिया बस उसी समय वह सरकार की खिदमत में आने को व्याकुल हो गये जब इन को ज्ञात हुआ कि हजरत मदार साहब नीमरोज में हैं तो वह तुरन्त उनके पास पहुंचने के लिए घर से

चल दिये। जब आप नीमरोज में हुजूर की सेवा में पहुंचे तो देखा कि हुजूर स0 के करम और कृपा का ऐसा समन्दर ठाठेमार रहा है जिसमें सहस्रों लोग लाभान्वित हो रहे हैं। आप हुजूर के समक्ष पहुंचकर बैठ गये किन्तु कोई बात न हुई ऐसे ही कितने दिन बीत गये । अन्ततः एक दिन सरकार ने उन पर कृपाभरी नजर डाली तो यह स्थिति हो गयी कि अब न तो भूख थी न प्यास यदि कपड़े गन्दे हो जाते तो तुरन्त ही कपड़ों को आग में डालकर साफ कर लेते थे। हजरत ने उनको लुत्फेमदार नाम दिया तथा नजफ्फे अशरफ भेज दिया ताकि जनता को कुरान व हदीस की शिक्षा देते रहे।

इसके बाद आप अनेकों देशों से घूमते हुए लोगों को अल्लाह और उसके रसूल की शिक्षाओं आदर्शो का पाठ पढ़ाते हुए वापस भारत आ गये जहां आपने बगाल, उड़ीसा, बिहार, पंजाब, सिंध, गुजरात, मध्य प्रदेश, केरल, महाराष्ट्र, उत्तरी भारत, अण्डमान, पुष्पों का क्षेत्र कश्मीर, बंग्लादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान क्षेत्र आदि में लोगों को इस्लाम की शिक्षा एवं आदर्शो के पालन पर जोर दिया मस्जिदों, कुओं तथा मदरसों का निर्माण कराया स्थान–स्थान पर अपने मुरीदीन व खुलफा लोगों को छोड़ दिया ताकि वे नव मुस्लिमों की शिक्षा दीक्षा पर ध्यान देते रहें।

जब आप राजस्थान के गांवों में शहरों में लोगों को इस्लाम की शिक्षा एवं मानवता के मिशन को आम करते हुए शहर अजमेर में ठहर गये।

28
अजमेर में शहीदों की लाशें

इतिहास साक्षी है कि जब मदार साहब अजमेर पहुंचे तो इनसे पहले कुछ मुसलमान जिहाद के लिए आये और अजमेर में तारागढ़ पर ठहर गये तथा एलान किया कि अल्लाह एक है यहाँ के लोगों राजाओं तथा सेनाओं ने सामूहिक रूप से इस्लामी सेना पर आक्रमण कर दिया । इस्लामी सेना यद्यपि संख्या में कम थी किन्तु बराबर से लोहा लेती रही परन्तु कब तक ? क्षेत्रीय राजाओं ने पड़ोसी राज्यों से सैन्य सहायता प्राप्त कर इस्लामी सेना पर बर्बरता पूर्वक आक्रमण कर दिया और मुसलमान सेना शहीद होने लगीं और हिन्दुसतानी फौजें विजय प्राप्ति का जश्न मनाने लगीं किन्तु जब सूर्य यह अन्यायपूर्वक युद्ध देखकर रोता बिलखता हुआ पश्चिम में छुप गया तो युद्ध क्षेत्र से बड़ी ही डरावनी एवं तेज–2 आवाजें उठने लगीं। यद्यपि रात्रि का अंधकार दिशाज्ञान में भी बाधक हो रहा था तथा लोग अपनी विजय के नशे के साथ–2 शराब के नशे में भी डूबे हुए थे किन्तु जब यह ध्वनियाँ नारे तकबीर अल्लाहुअकबर आना प्रारम्भ हुई तो लोग जान गये कि ये आवाजें रण क्षेत्र से ही आ रही हैं। स्थानीय नागरिकों में यह डर इतना पैदा हो गया कि विभिन्न प्रकार के वसवसे हृदय में जन्म लेने लगे किन्तु जब ईश्वर के आदेशानुसार सूर्य पूर्व से उभरकर आया तो आवाजें समाप्त हो गयीं। सूर्य देख रहा था कि इस्लाम के जाबांज सिपाहियों के शरीर क्षत विक्षत रण क्षेत्र में पड़े हैं बड़े–2 बहादुर और रण बांकुरे सो रहे हैं। तो वह फिर उदास और दुःखी मन से शनैः शनैः पश्चिम में चला गया और ध्वनियां आना प्रारम्भ हो गयी अब ये एक ऐसी होनी हो गयी कि इसे कोई टाल नहीं पा रहा

था और हर रात को आवाजें आती । दिन को सब कुछ सामान्य रहता इस घटना को आतंक के रूप में लोगों ने आभास किया और इतना डरे कि स्त्रियाँ मां बनने के सुख से भी वांचित होने लगीं। कृषि वीरान एवं मार्ग सुनसान हो गये।

29
कुत्बे हकीकी अजमेर की धरती पर

काल बीत गया अब भारत में हजरत मदार साहब का चर्चा आम था और आप अजमेर ही में पधारे हुए थे कुछ लोगों में चर्चा हुई कि अल्लाहुअकबर कहने वालों की एक मण्डली अजमेर के पहाड़–तारागढ़ पर ठहरी है। तो वे एकत्र होकर सरकार के समक्ष उपस्थित होकर विनती करने लगे कि हे बुजुर्ग एवं महान–व्यक्ति तुम से पहले ऐसे ही लोग यहां पर आये थे जिन को हमारी सेना ने परास्त कर मौत के घाट उतार दिया किन्तु उनकी आवाजें हम सभी को व्याकुल किये हुए हैं। अतः आप से विनती करते हैं कि आप लोग चले जायें अन्यथा आप के कारण हम लोग विभिन्न प्रकार से ग्रस्त हो जायेंगे। तब हजरत मदार साहब ने पूछा कि यदि तुम्हारे शहर से यह भयानक चीखें समाप्त हो जायें तो क्या तुम सभी लोग मेरे आदेशों का पालन करोगे ? उन सभी लोगों ने मान लिया और विनती की कि यदि हुजूर हम पर दया करें तो पीढ़ियों तक आपकी सेवा में रहेंगे। इसके बाद हुजूर ने उन सभी पर दया एवं समानता के व्यवहार के साथ–2 प्रेम की वर्षा की और सभी को घर जाने का आदेश दिया तत्पश्चात आप अपने साथियों से कहने लगे कि तारागढ़ पहाड़ पर इस्लाम के जांबाज सिपाही बे गौरो कफन पड़े हैं चलो उन

सभी को कब्र में दफन करने की व्यवस्था करो फिर उनकी नमाज जनाजा पढ़ी और उन्हें आराम के लिए कब्र में लिटा दिया। जब आप सभी लोगों ने शवों को दफना दिया और रात को पहले जैसी आवाजें नहीं आयीं तो लोगों में विभिन्न प्रकार के विचारों का आदान प्रदान होने लगा कुछ लोगों ने कहा कि यदि हम लोग उन के आदेशों का पालन करेंगे तो हमें मुसलमान होना पड़ेगा और यदि उनको चलकर हम लोग आतंकित करें तो सम्भवतः वे लोग यहां से चले जायें अन्यथा उनके आदेशों पर चलने के लिए हमें अपने पूर्वजों के धर्म का त्याग करना पड़ेगा। कुछ लोगों ने कहा कि इस समय हमें विवेक से कार्य करना चाहिए और हम जो भी फैसला करें उसके परिणामों को भलीभांति विचार कर लेना चाहिए क्योंकि यदि जो बुजुर्ग हमें उस दुःखद कष्ट को क्षणभर में सुखद बना दें जिसे आज तक बड़े–2 ऋषि–मुनि सनत न कर सकें तोवे हमें सदैव के लिए प्रकोप से ग्रस्त भी कर सकते हैं उनके साथ धोखा नहीं करना चाहिए। अन्ततः लोगों ने सदबुद्धि का प्रयोग किया और सभी लोग अपने मुखिया के आदेशानुसार हुजूर की सेवा में उपस्थित हुए तथा अपने पापों का का प्रायश्चित चाहा एवं सामूहिक रूप से सभी ने आपके आदर्शों पर चलने की प्रतिज्ञा की। सरकार ने फिर उन सभी को इस्लाम की शिक्षा दी उन्हें इस्लाम का अनुयायी बनाया और बहुत समय तक उनको धार्मिक सहिष्णुता, मानवता एवं प्रेम तथा अहिंसा का पाठ पढ़ाया। इस्लाम की शिक्षा एवं आदर्शों पर कायम रहने की हिम्मत पैदा की।

30
जादूगर अधर नाथ का मुसलमान होना

उधर–अधर नाथ नाम का एक जोगी जो कि जनता पर पकड़ रखता था। आपका बोल बाला देख अत्यधिक चिंतित रहने लगा और जादुई हमले करना प्रारम्भ कर दिये किन्तु सरकार को किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं पहुंचा तो वह लोहे के चने लेकर आपके समक्ष उपस्थित हुआ और कहने लगा कि यदि आप वास्तव में बड़े बुजुर्ग हैं तो ये लोहे के चने हैं आप इन्हें खाइये। तब सरकार ने फरमाया कि मैंने तो जीवन भर का वृत रखा हुआ है। अतः मैं नहीं खा सकता, हां तुम इन्हें मेरे चेलों में बांट दो वे इन्हें खालेंगे और स्वयं एक चना लेकर भूमि में बो दिया देखते ही देखते कोकिला पहाड़ पर चने का एक ऐसा पेड़ उगा कि झाड़ियों से ऊंचा हो गया और फल लग गये।

अब अधर नाथ जोगी को बड़ा ही अचम्भा हुआ कि एक तो इनके चेले लोहे के चने खा गये और फिर इन्होंने लोहे का चना बो दिया तो उससे पूरा वृक्ष उग आया। अधर नाथ पर इस चमत्कार का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसे हज़रत से अब कुछ कहने की हिम्मत न हुई तब वह दौड़कर आपके चरणों में गिर पड़ा और गिड़गिड़ाकर कहने लगा कि हुजूर मुझे अपने चरणों में दास बनाकर रखें। अब मैं आपसे अपने पापों का प्रायश्चित चाहता हूँ।

सरकार ने उसे प्रेम से उठाया और उस पर अपनी विशेष कृपा की तथा इस्लाम के मार्ग पर चलने के लिए उसे भी मुसलमान बना दिया।

उस दिन से यह कहावत हो गई कि फकीरी लौहे के चने चबाना है। फिर आप कोकिला पहाड़ी जिसे अब मदार टीकरी कहते हैं से नीचे आकर एक नदी के समीप पहुंचे।

हजरत बाबा पयारे मदारी – मांडा नाका ससीनोर, जिला बड़ौदा (गुजरात)।

चिल्ला गाह सरकार मदार – अहमदाबाद (गुजरात)।

31
साहू सालार ग़ाज़ी को सय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी के जन्म की शुभ सूचना

तवारीख–ए–महमूदी में लेखक हजरत मुल्ला महमूद गजनवी ने लिखा है कि जब हजरत 'साहुसालार' अजमेर शरीफ के करीब पहुंचे मुजफ्फर खां अजमेरी की सहायता के लिए गये तो नदी के किनारे अपना खैमा लगाया। तो उस समय बहुत बड़े सूफी वहां पधारे हुए थे जिनकी विशेष कृपा हुई तथा उन्हीं बुजुर्ग ने भविष्यवाणी की थी कि बहुत जल्द तुम्हारे यहां एक बच्चा पैदा होगा जो गाजी होगा। यह बुजुर्ग हुजूर सय्यद बदीउद्दीन अहमद थे जिन्होंने फरमाया कि मेरे सात नाम हैं जो सातों आसमानों (आकाश) पर लिखे हैं तथा अल्लाह पाक के आदेशानुसार पवित्र फरिश्ते पढ़ते हैं। तुम भी उन्हें पढ़ो तो तुम्हारे दुःख एवं कष्ट समाप्त हो जायेंगे तथा तुम पर खुदा अपनी विशेष कृपा करेगा फिर उन्हें सातों नाम सिखाये कुछ ही समय बीता था कि सय्यद सांहु के घर पर एक अति सुन्दर एवं तेजस्वी पुत्र ने जन्म लिया जिसका नाम उन्होंने सय्यद सालार मसूद रखा तथा कालान्तर में यह बच्चा सय्यद सालार मसूद गाजी के नाम से विख्यात हुआ।

उन्हीं दिनों आप ने अपने एक खलीफा शेख अली रावती को जो आप ही से कुछ समय पहले मुसलमान हुये थे मथुरा में तबलीग़ को भेजा। फिर सरकार ने हज के लिए यात्रा प्रारम्भ कर दी और देश–प्रदेश में इस्लाम का झण्डा ऊंचा करते लोगों की ध ार्मिक सहिष्णुता, भाईचारा आदि का पाठ पढ़ाते हुए मक्का पहुंचे और हज अदा किया। फिर आप अपने आका व मौला हुजूर

नबी–ए–करीम की मज़ार पर हाजिरी देने के लिए मदींना चले गये। फिर आप जियारत के लिए काजिमैन की ओर चले गये। काजिमैन पहुंचकर आपने कई दिन अल्लाह के हुजूर सज्दे में गुज़ार दिये। फिर अपने साथियो के साथ आप बगदाद तशरीफ ले आये।

32

बगदाद में बीबी नसीबा की फरियाद

बगदाद में पीड़ितों, दुखियों का तांता लगा रहता था कोई ऐसा बीमार था कि हकीम वैद्य की सारी चेष्टायें बेकार हो चुकी थी तो कोई ऐसा दुःखी था कि उसके दुःखों का हल नहीं था परन्तु यहां जो रोता हुआ आता सुख एवं खुशी के खजाने ले जाता, कोई अपनी विपता सुनाता और तुरन्त उसको शांति प्राप्त हो जाती। ऐसे ही पीड़ितों में एक स्त्री भी थी जिसके मुख पर निराशा भाव स्पष्ट था जो कि संसार के सभी सुख समृद्धि पाकर भी प्रसन्न नहीं थी। स्त्रियां यू भी अबला होती हैं। थोड़ा, दुःख भी उनसे सहन नहीं हो पाता परन्तु यह स्त्री तो सम्भवतः अपने हृदय में कोई बड़ा दुःख छुपाये थी जिसकी पीड़ा उसके मुख पर स्पष्ट थी। जब आपकी उस स्त्री पर कृपा हुई तो फूट–2 कर रो दी और विनती की आका मेरे पास संसार का हर सुख है मुझे रब्बे कदीर ने हर सुख, धन, धान से परिपूर्ण किया है किन्तु मेरे बाद मेरे घर में कोई दीपक न जलेगा। मैं एक सन्तान के लिए तड़प–2 कर रह रही हूँ मेरे पिता का नाम अबू सालेह तथा मेरा भाई अब्दुल कादिर जीलानी है जिससे सहस्रों को सुख शांति प्राप्त हुई किन्तु मेरी पिपासा आज भी शान्त न हो सकी मुझे मेरे भाई ने ही बताया था कि आप (बदीउद्दीन) बगदाद आ रहे हैं और

मेरे लिए आप ही वरदान देकर मुझे प्रसन्न करेंगे। मेरे कष्ट मेरे दुःख आप क्षण मात्र में दूर कर देंगे। अतः अब आप से मैं विनती करती हूँ कि आप मुझ पर कृपा करें सरकार मैं संसार के सभी प्रमुख पवित्र स्थानों से निराश लौटी हूँ क्योंकि मेरे भाई अब्दुल कादिर जीलानी रजि0. ने कह दिया कि मैं लोहे महफूज देख रहा हूँ। तुम्हारा दुःख सिर्फ बदीउद्दीन नाम के बुजुर्ग ही समाप्त कर सकते हैं। अतः मैं आपके समक्ष उपस्थित हुई हूँ। कृपया मुझे वरदान दीजिए। इतिहासकारों ने लिखा है कि सरकार ने अब्दुल कादिर जीलानी गौस पाक ने अपनी बहन को सरकार मदार–पाक का हुलिया एवं नाम बताकर चिन्हित करते हुए कहा कि मेरी बहन बहुत जल्द बग़दाद शहर में एक बुजुर्ग जिनके मुंह पर नकाबे पड़ी होगी तथा तख्त पर सवारी करते हैं उनके साथ बहुत से बड़े–2 बुजुर्ग होंगे आ रहे हैं तुम उनसे विनती करना। यदि वे तुम्हारे लिए दुआ कर देंगे तो अवश्य ही तुम्हारे भाग्य में पुत्र रत्न हो जायेगा क्योंकि वे कुत्बे वहदत हैं तथा उनको अधिकार है कि किस्मत का लिखा बदल दें।

बहरहाल सरकार ने उक्त, महिला जिनका नाम बीबी नसीबा था से फरमाया कि बहुत ही जल्द तुम्हारे आंगन में दो फूल खिलेंगे जिनसे तुम्हारा नाम और इस्लाम का नाम संसार में फैल जायेगा और अपनी सुगंध से संसार को मुग्ध कर देंगे किन्तु एक बेटा तुम मुझे देना।

फिर तो ताहिरा को अपने भाग्य पर बड़ी प्रसन्नता थी उन्होंने प्रतिज्ञा की यदि दो पुत्र हुए तो एक वह सरकार की सेवा के लिए सरकार के चरणों में अर्पित कर देगी। फिर सरकार कुछ दिनों के बाद बगदाद से प्रस्थान कर गये और इसके बाद ताहिरा को लोग 'नसीबा' के नाम से पुकारने लगे। कुछ ही समय बीता था कि नसीबा के घर दो पुत्रों ने जन्म लिया।

33
डूबी हुई नाव तैर गई

एक दिन आप एक नदी के पास ही ठहरे हुए थे। एक व्यापारी अपना माल लेकर नदी पार कर रहा था कि तूफान ने उसकी कश्ती (नाव) को नदी में डुबो दिया। दूसरा व्यापारी जो नदी के किनारे खड़ा था आपके पास रोता हुआ आया और विनती की कि मुझे बर्बाद होने से बचा लीजिये तब आपने एक मुट्ठी मिट्टी जैसे ही नदी में डाली। कश्ती पानी पर तैरने लगी उस पर सामान वैसे ही लदा हुआ था। यह देखकर व्यापारी को बड़ा अचम्भा हुआ उसके हर्ष की कोई सीमा नहीं थी। वह अपने सभी साथियों सहित आकर मुसलमान हो गया।

34
पानी कुंए से बाहर आ गया

हज़रतमदार साहब ने ऐसे ही कितने वर्ष अपने मिशन इस्लाम के प्रचार प्रसार में व्यतीत कर दिये। अब आपको पुनः अपने आका हुज़ूर स0 की ज़ियारत और हज का खयाल आया। आप हज के लिए चले और अफगानिस्तान पहुंचे काबुल में ठहर गये। अभी आप के साथी लोग ठहरे ही थे कि पानी की आवश्यकता हुई। सरकार ने कुछ सेवको को पानी लाने को भेजा। जब ये लोग कुएं पर पहुंचे तो वहा के लोगों ने आपके साथियों को पानी नहीं लेने दिया। सेवक निराश होकर वापस

लौट आये। अब आपने सेवकों से कहा कि जाओ कुएं से कहो कि तेरे पानी की आवश्यकता हज़रत इमाम हुसैन के प्रपोत्र की है। सेवक पुनः कुएं पर गये तो स्थानीय लोगों ने कहा कि तुम पुनः आ गये याद रखो मैं तुम्हें पानी का एक बूंद भी न लेने दूंगा और न ही डोल कुएं में डालने दूगा तब एक सेवक ने कहा कि हमको कुंए से कुछ कहना है। हम कुंए में डोल नहीं डालेंगे फिर कुंए की जगत पर खड़े होकर कहा कि ऐ शीतल–2 जल तुझे इमाम हुसैन के प्रपौत्र बुलाते हैं। ये शब्द सुनते ही कुएं का पानी उबलता हुआ ऊपर आ गया और हज़रत मदार साहब के आश्रम की ओर बहने लगा। सेवकों ने अपने–अपने बर्तनों को पानी से भर लिया तब पानी पुनः कुएं की तली में वापस लौट गया। स्थानीय लोग यह सब देखकर आश्चर्य चकित रह गये और आपके पास आकर अपनी गलती की माफी मांगी कि हुजूर हमें क्षमा करें अन्यथा पूरा काबुल शहर तबाह व बर्वाद हो जायेगा। हुजूर मदारे आजम ने सभी को क्षमादान दिया और सभी को मुसलमान किया और कुछ दिन के लिए ठहर कर नव मुस्लिमों को इस्लामी शिक्षा एवं आदर्शो का पाठ पढ़ाते रहे फिर आप नैपाल देश गये जहां एक पहाड़ पर ठहरे जो आज भी मदारिया पहाड़ कहलाता है। और सात माठ पहाड़ है। एक चिल्ला (कुटी) आप का 'माल भारी– गांव पहाड़ के नीचे तथा दूसरा मदारिया पहाड़ की अन्तिम चोटी से उतर कर मनमोहक एवं शीतल झील के किनारे है। यहां से कुछ ही दूरी पर चीनी एवं नेपाल की अन्तर्राष्ट्रीय सरहद है। इस पुस्तक के लेखक ने स्वयं इन चिल्लो का दर्शन किया। यहां के लोगों ने बताया कि सरकार मदार यहां से फिर चीन की ओर चले गये थे। आप इन देशों में इस्लाम का झण्डा ऊंचा करते रहे। लोगों के कष्टों एवं दुःखों को दूर करते रहे फिर आप कुछ साथियों को नवमुस्लिमों की शिक्षा दीक्षा के लिये छोड़कर भारत वापस आ गये। यहां आप पीलीभीत, रामपुर,

बरेली, मुरादाबाद आदि शहरों में तशरीफ लाये गये और यहाँ सैकड़ों व्यक्तियों को इस्लाम की दौलत से नवाज दिया फिर आप गुजरात होते हुए हज अदा करने गये। मक्का से आप मदीना शरीफ में सरकार में हाज़िरी देने के बाद पुनः इस्लाम के मिशन को आम करने के लिए चले गये।

नोट – जद्दा में भी सरकार का एक चिल्ला है जहां आपने इबादतो रियाज़त काफी समय तक की थी।

अब आप इराक की आबादियों में अपनी कुटी बनवाकर रह रहे थे। लोग आप के पास आते और अपने लिए वरदान प्राप्त करते किसी को निराश नहीं लौटाते किसी पर कोई संकट है किसी के दुखड़े सुनने वाला कोई नहीं है, किसी को नत्रहीन होकर लोगों की दया पर निर्भर रहना पड़ रहा है, सभी आ रहे है और अपनी मुरादें पूरी कराना चाहते हैं सभी की मुरादें पूरी हो रही हैं। किसी की आंखों में रोशनी पैदा की जा रही है तो किसी के कभी न समाप्त होने वाले दुःखों को क्षण भर में दूर किया तो किसी को संसार के घटाटोक अंधकार से निकालकर इस्लाम के प्रकाश से प्रकाशित किया तो किसी को मानवता, दया एवं समानता का व्यवहार करने का पाठ पढ़ाया और घूमते हुए बगदाद आ गये।

34
जम्मन जती जब हो गये जिन्दा

जब आपके बग़दाद आने का समाचार सय्यदा नसीबा बीबी ने सुना तो आपकी सेवा में दोनों बच्चों को लाना चाहती थी आपने बच्चों को गुस्ल कराया और अच्छे–2 कपड़े पहनाकर उन्हें हुज़ूर की सेवा में ला रही थी कि बड़ा पुत्र मुहम्मद सययद छत

पर किसी काम से गया और अल्लाह की मरज़ी से छत से गिर गया और उसकी मृत्यु हो गयी।

अभी घर में खुशियों का जश्न था और अब एक ऐसा मातम कि लोगों को समझ नहीं आ रहा था कि इस घर को किसी की नज़र लग गयी या भाग्य यह क्या खेल खेल रहा है। एक मां जिस के सामने एक पुत्र की लाश हो और दूसरे का सदैव को बिछड़ जाने का भय क्या करे। अन्ततः नसीबा हुजूर की सेवा में 'मुहम्मद' (बड़े पुत्र का नाम) को लेकर आयी और विनती की हुजूर यह बड़ा पुत्र था जिसे मैं आपकी सेवा में देना चाहती थी किन्तु आज यह छत से गिर कर अपनी अन्तिम यात्रा पर चला गया। सरकार ने फरमाया कि तुम मुझे यह लाश ही दे दो और फिर लाश के समीप जाकर बाल पकड़कर कहा 'ऐ जानेमन जन्नती अल्लाह के आदेश पर उठो, मृत शरीर में जैसे जीवन फूंक दिया गया हो बस फिर क्या था जानेमन जन्नती (मुहम्मद) उठकर बैठ गये और उनकी ज़बान पर कल्म–ए–शहादत का विर्द था।

हज़रत मदार साहब की यह करामत पलक झपकते ही पूरे शहर बगदाद में फैल गयी एक चर्चा होने लगी कि नसीबा का भाग्य भी कितना अच्छा है कि मरा हुआ बच्चा भी जीवित हो गया जिस ताहिरा के भाग्य में भावना नहीं था उसी ताहिरा के भाग्य पर आज सारी मायें गौर्व कर रही थीं। इसके बाद आपकी सेवा के लिए बीबी ने अपने दोनों पुत्रों (अहमद, मुहम्मद) तथा अपने दो भतीजों सय्यद रुक्नउद्दीन तथा शमसुद्दीन को भी आपकी सेवा में दे दिया।

हाशिया :–सय्यदना हुजूर गौस–ए–पाक की जीवनी लिखने वालों ने आपकी बहनों के बारे में मतभेद किया है।

मशहूर आलिम मुहदिदस मुल्ला अली कारी के अनुसार

गौस पाक की एक बहन थी जिनका नाम आयशा था तथा बड़ी करामाती एवं धार्मिक प्रवृत्ति की स्त्री थी। उपरोक्त कथन इस्लामी स्टीम प्रेस लाहौर पाकिस्तान द्वारा छपी महबूबुल अतक़िया फी जिक्र–ए–सुल्तानिल औलिया के पेज 5 पर लिखी है।

उक्त पुस्तक नुजहतुल खातिर फी तरजमति स्सय्यद अब्दिल क़ादिर का उर्दू अनुवाद है।

दुर्रुल मुनज्ज़म में है कि गौस पाक की दो बहनें थी एक का नाम नसीबा तथा दूसरी का नाम जैनब था। दुर्रुल मुनज्ज़म फी मनाकिब–ए–गौसे आज़म के पेज 431 पर अनवर अली शाह कलन्दरी ने लिखा है कि गौस पाक की एक बहन जलिय्या तथा दूसरी का नाम रूकय्या था। (कन्जुल अनसाब से)

लफरीहुल आशिकीन में है कि हुजूर गौस पाक की एक बहन थी जिनका नाम 'नसीबा' था जो बड़ी बुजुर्ग थी।

तज़किरतुल आरिफीन फी अहवाले सय्यदिल कामिलीन अब्दिल कदिर जीलानी के पेज 7 पर अल्लामा अबुल हसन बिन हुसैन अलवी कादिरी काकोरी।

मौलाना हिदायत रसूल कादिरी बरकाती नूरी जो मुफ्ती रजा खां नूरी बरेलवी के मुरीद एवं खलीफा है। आप के पुत्र मौलाना मुहम्मद उमर कादिरी बरकाती रिजवी अपनी किताब ज़ीनतुलमीलाद में लिखते है कि मीर सालेह फात्मा सानी असामी वालिदैन। बू सईदे पीरे ईशाँ मर्दे हक मरदाना ई। जैनबो बीबी नसीबा ख्वाहिराने हजरतन्द। बाद अज़ाँ फरजन्द ईशां जुमलगी जाना न ई।

अर्थात् आपके पिता का नाम मीर अबू सालह है माँ का नाम फात्मा सानी और शेख मुहतरम अबू सईद है जैनब व बीबी नसीबा आपकी बहने हैं।
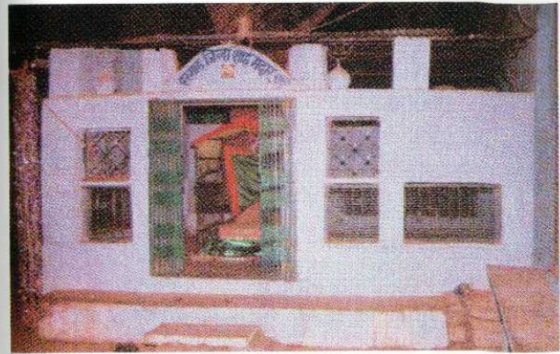
चिल्ला गाह सरकार मदार – चेचट कूना (राजस्थान)।
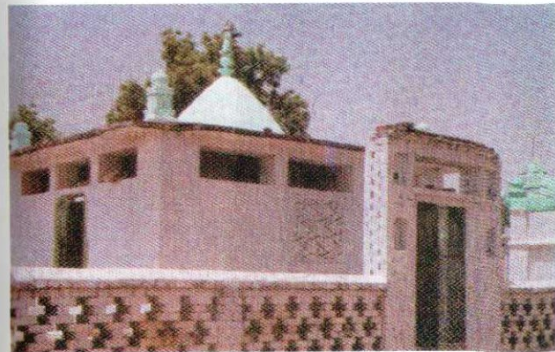
दरगाह शरीफ हज़रत मीर रूकनुददन हसन–अरबगांव, गोजेपुर, कानपुर।

नसब नामें की प्रमुख पुस्तक मिर्रतुल अन्साब में हुजूर मदारे पाक का शजरा हर सह ख्वाजगान तक है, में लिखा है कि जब हुजूर मदारे आलम ने हज का इरादा किया और यात्रा में बगदाद पहुंचे तो उनके पास गौस पाक की बहन जिनके बच्चे नहीं होते थे। आपके पास आयी। आपने बीबी के लिए दुआ की जिसकी बरकत से उनके बच्चे हुए।

(पेज 158 लेखक जिया उद्दीन अहमद मुजद्दिदी अमरोहवी (प्रकाशन त्रिपोलिया बाजार जयपुर)

खुम–खान–ए–तसव्वुफ़ के पेज 268 पर लेखक डाक्टर जहूरूल हसन शारिब ने लिखा है कि जब कुत्बुल मदार बग़दाद गये तो बीबी नसीबा आपसे पुत्र वरदान के लिए प्रार्थी हुई। आपने उनके लिए दुआ की तो उनको दो पुत्र हुए।

मुम्बई के प्रख्यात आलिम (विद्वान) मौलाना फसीह अकमल कादिरी ने अपनी पुस्तक सीरते कुत्बे आलम में लिखा है कि जब हुजूर मदार साहब दूसरी बार बगदाद पधारे तो हुज़ूर गौसे पाक की बहन नसीबा ने अपने लिए दुआ चाही। आपने दुआ दी और उनको दो पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः मुहम्मद और अहमद रखे।

नोट – सय्यद मुहम्मद जमालउद्दीन जानेमन जन्नती भारत एवं विदेशों में जुम्मन शाह दातार और दूसरे नामों से जाने जाते हैं। आपके चिल्ले कई स्थानों पर अवशेष के रूप में उपलब्ध हैं तथा मज़ार मुबारक हेलसा जत्तीनगर बिहार प्रान्त में है। जहां से लोगों की आज भी अपनी–2 मुरादें पूरी होती हैं तथा लोगों को खुदा की याद के साथ–साथ मानवता, सहिष्णुता, भाईचारा का पाठ मिलता है।

हज़रत जमालुद्दीन जाने मन जन्नती ने आजीवन बाल नहीं कटवाये थे आप सिंह पर सवारी करते थे तथा सर्प का कोड़ा चाबुक रखते थे।

मलंगों का गरोह आप से ही जारी हुआ तथा आप सहाबी–ए–रसूल अबूमहजूरा की सुन्नत पर थे। क्योंकि अबू महजूरा रज़ि0 ने भी कभी बाल नहीं कटाये और न ही विवाह किया था। (अनुवादक) अब हुजूर के साथ गौस पाक के दो भतीजे मीर रूक्नुद्दीन एवं दो भांजे सय्यद अहमद एवं सय्यद मुहम्मद भी थे। जब आप बगदाद से चले तो ये चारों आप की सेवा के लिए साथ–साथ थे। चूँकि हजरत मदार साहब कुछ खाते नहीं थे। अतः आप के साथ किसी प्रकार के भोज्य पदार्थ नहीं होते थे। इसलिए बच्चे भूख से निढाल होने लगे। बीबी नसीबा के छोटे पुत्र सय्यद अहमद भूख से इतने निढाल हो गये कि आपसे चलना भी मुश्किल हो गया। सरकार को इसका पता चला तो आपने फरमाया कि अहमद तुम पश्चिम की ओर जाओ वहां एक झील के पास एक व्यक्ति अपने सात साथियों की प्रतीक्षा में भोजन लिए मिलेगा वह तुम को देखकर भोजन दे देगा। जब तुम भोजन कर लेना तो कहना कि खुदा तुम को सातों महाद्वीपों का राज दे दे।

सय्यद अहमद आपके आदेशानुसार चले तो थोड़ी ही दूर पर झील के पास देखा एक व्यक्ति भोजन लिये है चेहरे से बुजुर्गी मानवता एवं प्रेम भावना टपकती है। इस बुजुर्ग ने सय्यद अहमद को बड़े प्रेम से पास बुलाकर कहा कि बेटे तुम भूखे हो लो भोजन कर लो तुम बच्चे हो तुमसे भूख न सहन हो सकेगी जबकि मेरे साथी भूख को सहन कर लेंगे। तब सय्यद अहमद ने कहा कि मुझसे हुज़ूर कुत्बुलमदार रज़ि ने फरमाया था कि जब तुम भोजन कर लेना तो कहना कि तुमने मुझे सात लोगों का भोजन दिया खुदा तुमको सातों महाद्वीपों का राज्य दे दे। उस व्यक्ति ने कहा कि अभी मैं अजमेर की ओर जा रहा हूँ और फिर बहुत जल्द कुत्बुलमदार की सेवा में उपस्थित हो रहा हूँ।

36

कुत्बुल मदार मेवात में

फिर आप हजरत मदार साहब घूमते हुए इस्लाम का प्रचार करते हुए मेवात तशरीफ ले आये जहां आपकी दीनी खिदमात सूर्य के प्रकाश के समान उज्जवल है। आप ही के अथक प्रयासों एवं सूझ बूझ भरे निर्णयों के कारण मेवात एवं आस–पास के क्षेत्रों में मस्जिदों का निर्माण सम्भव हो सका तथा पांच वक्त की अज़ाने आकाश में गूंजने लगीं।

नोटः– यहाँ के लोग आज भी मदार के सिलसिले से ही मुरीद होते हैं तथा उनकी अनेक रस्में जैसे मूडन आदि मकनपुर शरीफ़ में ही पूरी होती है। मेवात क्षेत्र में सरकार मदार रज़ि0 के कई चिल्ले (कुटी) है। जहां से लोगों की निराशायें आशाओं में बदल जाती हैं तथा भाग्य संवरते हैं।

37

मदार साहब भटिण्डा में

जब आप भटिण्डा में पहुँचे थे तो पता चला कि हज़रत बाबा रतन साहूक बिन जन्दल पधारे हैं तो सरकार उनसे मिलने गये। बाबा रतन साहूक के लिए इतिहासकारों ने लिखा है कि आप मोजिज़ा (शक्कुल कमर) चाँद के दो टुकड़े होने के समय ईमान लाये थे तथा 'सहाबी–ए–रसूल' थे एवं कोई छः सौ वर्ष की आयु पायी।

किताब मदारे आजम में लेखक हकीम फरीद अहमद नक्शबन्दी मुजदिद्दी ने लिखा है कि बाबा रतन बिन साहूक बिन सिकन्दर बाज कहते हैं रतन बिन नसर बिन कृपाल लम्बे समय तक छुपे रहे थे तथा छटी शताब्दी हिजी में जाहिर (प्रकट) हुए तथा कहते थे कि मैं हुजूर नबी–ए–करीम की सेवा में रहा हूँ।

बाबा रतन साहूक के पुत्रों हज़रत महमूद तथा हजरत अब्दुल्लाह ने उनसे रवायतें (अवतरण) की है।

साहब उसाबा कहते हैं कि मैंने इतिहासकारों शम्सउद्दीन मुहम्मद पुत्र इब्राहीम हुर्जमी की किताब में पढ़ा है। उन्होंने लिखा है कि मैंने नजीब अब्दुल वहाब पुत्र इस्माईल फ़ारसी सूफी से मिस्र में 712 हि में सुना कि शीराज़ में 675 हि में एक बूढ़े व्यक्ति जिनका नाम महमूद था आये जो कहते थे कि मेरे पिता बाबा रतन साहूक ने मोजिज़ा शक्कुल कमर (चांद के दो टुकड़े होना) देखा था तथा इसी कारण भारत से अरब की यात्रा की तथा हुजूर मुहम्मद स0 की इमली भेंट की थी। जिन को हुजूर स0 ने खाया और लम्बी आयु का वरदान भी दिया था। उस समय यह 100 वर्ष के थे तत्पश्चात् बाबा रतन भारत आ गये और 632 हि में इस संसार को त्याग कर सदैव के लिए स्वर्ग को सिधार गये।

समीक्षा एवं उद्धरण :–इस पुस्तक के लेखक (सै0.क़ारी महज़र अली) ने अपने पिता बुजुर्ग हज़रत मौलाना कुत्बे आलम सय्यद कल्बे अली रह से बाबा रतन के बारे में एक वाकिया बहुतायत से सुना जो कि किताब मदारे आजम में भी लिखा है।

मदारे आजम के पेज 107 से 111 तक लिखा है – इमाम इब्ने हजर असकलानी कहते हैं कि हमको अली पुत्र मुहम्मद पुत्र अबी मुहम्मद ने बयान किया वह उद्धरण करते एक हदीस बयान करते हैं कि जलालउद्दीन मुहम्मद सुलेमान से जो दमिश्क के मुंशी थे। उन्होंने कहा कि हमको काज़ी शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान

बिन साने उल हनफी ने कहा कि हमको काज़ी मोईनउद्दीन अब्दुलमुहसिन बिन काजी जलालउद्दीन अब्दुल्लाह बिन शाम ने 737 हि0 में खबर दी कि हमको काज़ी नूरूद्दीन ने बताया कि हमारे दादा हुसैन पुत्र मुहम्मद ने हदीस बयान की कहा कि मेरी आयु सत्तर वर्ष की थी। मैंने पिता और चाचा के साथ खुरासान से भारत व्यापार के संबंध में यात्रा की भारत के एक गांव से गुजर रहे थे कि कुछ लोगों ने बताया कि यहां हजरत बाबा रतन रहते हैं। हम लोगों ने वहां एक विशाल काय वृक्ष देखा जिसके नीचे बहुत लोग एकत्र थे। जब हम वहां पहुंचे तो उन लोगों ने हमारी आओ भगत की। हमने देखा कि वृक्ष में एक बड़ा सा थैला लटक रहा है। मैंने पूछा कि इस थैले में क्या है ? लोगों ने उत्तर दिया कि इसमें बाबा रतन है जिनको हुजूर स0 ने लम्बी आयु का छः बार वरदान दिया है। हमने कहा कि इन्हें नीचे उतारो ताकि हम इनका दर्शन करें। अब थैला नीचे उतारा गया और उसका मुंह खोला गया तो उसमें रूई (कपास) धुनी हुई भरी थी। जिसके बीच में बाबा रतन थे। एक व्यक्ति ने बाबा रतन के कान में कहा कि दादा जान ये लोग खुरासान से पधारे हैं तथा आपसे जानना चाहते हैं कि आपने हुजूर स0 को कब और कैसे देखा था। बाबा रतन यह सुनकर बोले कि मैं अपने पिता के साथ अरब व्यापार के लिए गया जब हम लोग मक्का पहुंचे तो वर्षा प्रारम्भ हो गई। इतना पानी बरसा कि पानी तेज एवं अधिक बह रहा था। जल बहाव के कारण एक अति सुन्दर तथा तेजस्वी बालक खड़ा था जिसका ऊँट पानी के उस पार खड़ा था और वह अपने पहुंचने के लिए जल बहाव में कमी आने की प्रतीक्षा कर रहा थां मैंने मानवता एवं दयाभाव से उस बच्चे को किनारे तक पहुंचा दिया उस बालक ने प्रेम पूर्व मेरी ओर देखते हुए अरबी भाषा में तीन बार 'बारकल्लाहो फी उम्रेका' कहा। हम लोग मक्का पहुंचे तथा अपने व्यापार में व्यस्त हो गये। फिर भारत लौट आये। इस घटना को बहुत समय हो गया तथा ध्यान से भी जाती रही। इस घटना

के काफी समयान्तराल के बाद ही हम लोग एक रात घर के आंगन में बैठे थे चांदनी रातें थीं। चांद स्पष्ट एवं साफ–2 दिखाई दे रहा था। अचानक ही चांद के दो टुकड़े हो गये। यहां तक कि एक पूर्व में चला गया तथा दसूरा पश्चिम में चला गया फिर दोनों टुकड़े वापस आकर जुड़ गये। हम लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ तथा मैंने लोगों से ज्ञात करने शुरू कर दिया यहां तक कि अरब से आने वाले व्यापारियों से ज्ञात हुआ कि अरब के शहर मक्का में हज़रत मुहम्मद नामक हाशमी वंश के व्यक्ति ने अपनी नबुव्वत का ऐलाना किया तथा यह उनका मोजिज़ा था जो लोगों की मांग पर आपने किया था। अब मुझे हजरत मुहम्मद स0 से भेंट करने की लालसा एवं जिज्ञासा सताने लगी यहां तक मैंने अपनी यात्रा को निश्चित कर मक्का के लिए प्रस्थान किया मक्का पहुंचकर लोगों से आपके घर का पता ज्ञात किया तथा घर पहुंच गये फिर आवाज दी मुझे अन्दर आने की इज़ाज़त हुई। जब मैं अन्दर गया तो देखा कि व्यक्ति जिसका मुख सूर्य के समान प्रकाशित चन्द्र के समान शीतल–2 प्रकाश फैला रहा था बैठे है। मानवता तथा दया फूटी पड़ती थी कुछ लोग जो आपके साथी थे बहुत आदर एवं शिष्टभाव स्पष्ट झलक रहा था तथा आपके सामने खजूरे रखी थी। मैं इस सभा को देखकर भयभीत हो गया तथा आपसे दूर बैठना चाहता था किन्तु मुझे पास बैठने का निर्देश दिया। जब मैं आपके सम्मुख बैठ गया तो मुझे अपने हाथ से खाने को खजूरें देते जाते थे। फिर मुझसे फरमाया कि तुम मुझे पहचाने मैंने कहा कि नहीं। हुजूर ने फरमाया कि जब मैं छोटा बच्चा था तो तुमने मेरे ऊँट तक मुझे पहुँचाया था चूँकि आपकी दाढ़ी उग आई थी और चेहरा काफी कुछ बदल चुका था। अतः वास्तव में मैं उन्हें पहचान न सका था। किन्तु अब मैं आपको खूब पहचान रहा था पूरी घटना मेरे मस्तिष्क में घूम रही थी। अतः मैंने कहा कि हां, मैं आपको पहचान गया हूँ। तब आपने मेरी ओर हाथ बढ़ाकर कहा

कि कहो 'अशहदो अनलाइलाहा इल्लल्लाहो व अशहदो अन्नः मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलोहू' मैंने आपके आदेश का पालन किया तथा पढ़ लिया फिर जब मैं चलने को हुआ तो आपने फिर तीन बार 'बारकल्लाहो उम्र का कहा फिर मैंने विदा ली अब मुझे हर दुआ के बदले 100 वर्ष की आयु प्राप्त हुई। अब मेरी छः सौ वर्ष की आयु हो चुकी। इस गांव में मेरी बहुत सी संतानें हैं तथा मुझसे कुछ हदीसों का भी उद्धरण है।

हज़रत बाबा रतन को हुजूर ने 'जुबैर' नाम दिया तथा इनका मज़ार मौजा रतन जो कि भटिण्डा क्षेत्र में है लोगों के लिए दया एवं मार्गदर्शन आदि का गढ़ बना हुआ है जहां से लोग आज भी लाभ प्राप्ति कर रहे हैं और भटिण्डा ही में हज़रत मदार साहब का चिल्ला भी है जो बाबा साहब से मदार साहब की भेंट वार्ता का साक्षी है।

28 मई सन् 2001 को मुम्बई से प्रकाशित 'इन्क्लाब पत्र में मौलाना कौसर नियाजी ने अपने लेख में लिखा है कि हिन्दुस्तान में हज़रत बाबा रतन पुत्र साहूक को सहाबी होने का गौरव प्राप्त है। यद्यपि उन्होंने सहाबी होने पर शक प्रकट किया किन्तु लिखा कि 'आशिके रसूल के लिए यह बहुत है कि 'रतन साहूक' सहाबी माना जाता है।

पाठको, सहाबी को देखने वाला 'ताबई' होता है और यदि 'बाबा रतन' सहाबी है तो 'हुजूर मदार साहब' ताबई है क्योंकि आप दोनों की भेंट इतिहासकारों ने एक राय से स्वीकारी है और जिस प्रकार 'रतन साहू' को छः सौ वर्ष से अधिक आयु प्राप्ति हुई तब क्या आश्चर्य कि मदार साहब की आयु 596 वर्ष की हुई।

यू भी आदम अलै0 1000 वर्ष तथा नूह अलै 950 वर्ष को प्राप्त हुए तथा हारिसा बिन अब्दुल कलवी 500 की आयु को प्राप्त हुए। फिर क्या आश्चर्य कि जब खिज्र पैगम्बर अलै. आज भी जीवित हैं तो मदार साहब की आयु 596 वर्ष की हुई।

38
52–डाकू औलिया बन गये

हुजुर सरकार मदारे पाक रजि0 जब मेवात के काले पहाड़ पर पधारे तो 52 डकैतों ने आपको लूटने की योजना बनाई वे समझते थे कि आप के पास अत्यधिक माल होगा तथा आप व्यापारी वर्ग से होंगे किन्तु उन्हें क्या मालूम कि सरकार के पास इश्के रसूल का खजाना है जिसको कोई बड़ी–2 ताकतें भी नहीं लूट सकती हैं बहरहाल जब आपकी ओर ये डकैत चले तो आपने मुख से नकाब उठा दिया फिर क्या था सभी की आंखे जाती रहीं डकैतों का सरदार चिल्लाने लगा कि मुझे कुछ दिखायी नहीं देता है। उसके साथियों ने भी यही शिकायत की तब सभी को समझ में आ गया कि निश्चित ही यह कोई बड़े बुजुर्ग हैं जिनको हम लोग लूटने जा रहे हैं। इसी कारण हम सभी अंधे हो गये। अब सभी को पश्चयाताप के अश्रु बहाने के सिवा कुछ समझ नहीं आ रहा था कि एक ने कहा कि हमको बुजुर्ग से माफी मांगनी चाहिए और सभी लोग आपकी सेवा में उपस्थित होकर अपने पांपों की माफी मांगने लगे। सरकार मदार ने उनसे कहा कि तुम लोग अकारण ही बबर्रता पूर्वक लोगों पर अत्याचार करते हो। उनको लूट लेते हों और उनके साथ निर्दयीता का व्यवहार करते हों इस अत्याचार को जीवन भर के लिए त्यागने की प्रतिज्ञा करो तब मैं ईश्वर से प्रार्थना करूंगा। इन लोगों ने आपकी बात मान ली। आपने फिर उन सभी की आंखों में अपनी लार लगा दी फलतः सभी की नेत्र ज्योति आ गयी और संसार की जगमग को देखने में सक्षम हो गये।
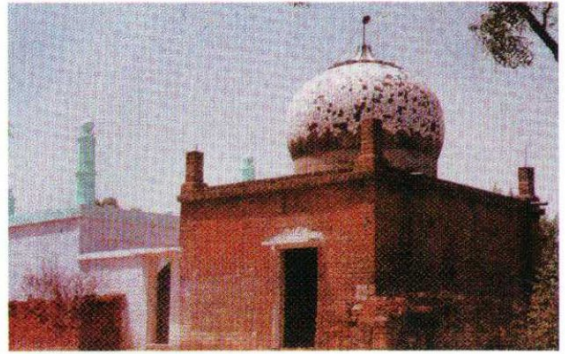
दरगाह शरीफ मीर शमसुदद्न हसन–अरबगांव, गोजेपुर, कानपुर।

चिल्ला गाह सरकार मदार – मुम्बई।

आपकी इस करामत से सभी प्रभावित हुए तथा इस्लाम कुबूल कर लिया। सरकार ने इन सभी को इस्लामी नामकरण किया तथा अपना खलीफा भी बनाया। इनमें अधिकांश अल्लाह के वली हुए तथा मेवात में उनका उर्स मनाया जाता है।

39
विभिन्न शहरों में प्रस्थान

इसके बाद हुजूर जबलपुर होते हुए अजमेर शरीफ पहुंचे और राजस्थान आदि के क्षेत्रों में इसलाम की शिक्षा देते हुए मंद सौर तशरीफ लाये। यहां आपके चरणों का स्पर्श पाकर धरती मानो स्वर्ण की हो गयी लोगों में हर्षोल्लास का वातावरण था एक दूसरे को बधाई देते कि हमारा मसीहा, हमारा दाता हमारे कष्टों एवं दुःखों को दूर करने आ गया आपने यहां भी में जनता में खूब इश्के रसूल की दौलत बांटी और खुदा की कृपा एवं दया से लोगों की समस्यायें दूर कर दी। अब क्या था आपके नाम की चर्चा खूब होने लगी। मन्दसौर में आपके चिल्ले मौजूद है जहां से लोगों की मन्नतें एवं मुरादें पूरी होती हैं।

फिर आप महाराष्ट्र केरल आदि के अनेक शहरों में ठहरें ताकि लोगों में इस्लाम का प्रचार प्रसार हो जाये। यहां से आप पंजाब एवं सिंध प्रदेशों में इस्लाम का प्रचार करते हुए लाहौर में ठहर गये और अपने उसूल के अनुसार दीन की खिदमत में वक्त गुजारने लगे। लाहौर से 'शरफ नगर' में आप थोड़े समय के लिए ठहर गये।

40
फीरोज शाह का मुरीद होना

शरफ नगर से देहली की ओर प्रस्थान किया। दिल्ली में आपके कई 'चिल्ले' हैं रिसाल–ए–औलिया में लेखक ने लिखा है कि उस समय गयास उसउद्दीन बलबन के पुत्र फिरोजशाह भी आपके मुरीद हुए तब आम जनता आपके हाथों पर मुरीद होने लगी और देखते ही देखते हजारो लोग आपके मुरीद हो गये। जब आपने देहली से जाने का इरादा किया वो लोग बेचैन हो गये तथा आपके पास आकर रोने लगे तथा विनती की कि हमारे बीच से आप न जायें। तब सरकार ने फ़रमाया कि मुझे संसार के हर देश में इस्लाम का प्रचार करना है मैं किसी एक स्थान पर रूक नहीं सकता हूँ। लोगों ने आपसे विनती की कि मुझे अपनी सेवा में ले ले तथा साथ चलने की इजाजत दे दें। अब सरकार ने अपने मुख पर पड़ी हुई नकाबें उठा दी। लोगों की नज़र आपके तेजस्वी मुख पर पड़ी तो सज्दे में गिर कर बेहोश हो गये। सरकार ने अपने सेवकों से तकबीर कहलायी तब लोगों को होश आया और आपके आदेशानुसार कुछ लोगों के साथ चलने तथा अधिकांश को घर वापस भेज देने का आदेश दिया।

जो लोग आपके साथ थे उनमें बादशाह फीरोज शाह तुगलक के 'मुख्यमंत्री' इलाह दाद खां थे जिन्होंने अपनी सारी दौलत गरीबों में बांट दी थी तथा अपने पद से त्याग पत्र दे दिया और आपकी सेवा में आ गये।

41
मदारे आज़म कालपी में

अब आप काल्पी शहर के भाग्य को जगमगा रहे थे जनता के दुःख दर्द पल भर में दूर कर रहे थे तो एक दिन हजरत मीर सद्र जहां ने एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने आपसे विनती की कि आका मुझे अपनी सेवा में लेकर मुझे भाग्यशाली बनांने की कृपा करें। मैं काल्पी आने में असमर्थ हूँ क्योंकि जौनपुर के बादशाह इब्राहीम शर्की ने मुझे मुख्यमंत्री के पद पर तैनात कर रखा है और काल्पी के बादशाह तथा जौनपुर के बादशाह एक दूसरे से सम्बन्ध विच्छेद किये हैं। यदि आप आज्ञा दें तो मैं अपने पद को त्याग कर आपकी सेवा में आ जाऊँ।

सरकार मदार साहब ने पत्र का उत्तर दिया और लिखा कि हुजूर सरवरे कायनात स0 ने मुझे भारत एवं अन्य देशों में जब इस्लाम के प्रसार एवं प्रचार के लिए भेजा तो मुझे एक विवरणिका भी दी जिसमें मुझसे लाभान्वित होने वालों के नाम हैं जिनमें तुम्हारा भी नाम है। अतः तुम मेरी सेवा में अवश्य आओगे। मीर सद्रजहाँ इस पत्र को पढ़कर प्रसन्नता से गदगद हो गये तथा उनके पास जो था सब कुछ दान कर दिया।

42
मदारे आजम जौनपुर में

कादिर शाह के इस प्रकरण के बाद आप काल्पी से जौनपुर पधारे। जहां आपकी प्रतीक्षा सुल्तान इब्राहीम एवं मीरसद्र जहां बहुत व्याकुलता से कर रहे थे। आपके आगमन को सुनकर लोग आपके स्वागत के लिए आये। अब अधिक से अधिक समय आप इस्लाम की शिक्षा एवं हुजूर नबी–ए–करीम स0 से मुहब्बत तथा इस्लामी रीति–रिवाज तथा मान्यताओं पर ध्यान दे रहे थे।

चूंकि मीर सद्र जहां को आपकी ओर से प्रतीक्षा का निर्देश था। अतः अब यह प्रतीक्षा समाप्त हो गयी थी और अब वह आपके समक्ष उपस्थित होने को व्याकुल थे। अन्ततः वह समय भी आ गया कि मीर सद्रजहां आपके मुरीद हुए तथा आपने अपना खलीफा भी बनाया। इस मौके पर मीर ने लगभग एक लाख रुपया गरीबों में बांट दिया तथा वस्त्र एवं अन्न अनाज के भण्डार लुटा कर खाली कर दिए। किताबों में लिखा है कि सरकार ने अपने चेहरे से जब नकाब हटायी तो मीर सद्रजहां बेहोश हो गये और जब उनको होश आया तो हजरत मूसा अलै0 का परतव उन के चेहरे पर दिखाई देता था तब सरकार ने फरमाया कि तुम पर हजरत मूसा अलै0 की झलक पड़ती है। मीर सद्र जहां ने विनती की तो आपने उनसे कहा कि बाहर लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम भी वहां चलो मैं अभी आ रहा हूँ। जब मीर सद्र जहां भी आपकी प्रतीक्षा में आ गये।

हाशिया–इतिहासकारों ने लिखा है कि कुत्बुल मदार के बारह शरीर होते है तो एक ही समय में 12 स्थानों पर रह सकते

हैं। इसी कारण आपके चिल्लों की संख्या का अन्दाजा लगांना असम्भव है।

सैरूल मदार में हजरत जहीर अहमद साहब निश्ती कादिरी सहसधानी ने लिखा है कि जौनपुर में जब हुजूर सरकार मदारूल आलमीन ठहरे हुए थे आपकी सेवा में हुजूर आली नसब मीर सद्र जहां रह0 उपस्थित हुए तथा आपकी सेवा से बहुत कुछ प्राप्त किया। मीर सद्र जहां की धर्म पत्नी बड़ी धर्म प्रवृत्ति की समझदार तथा नेक स्त्री थीं। उन्होंने अपने पति मीर सद्र जहां से सरकार के हालात सुने और कहा कि ऐसे बुजुर्ग सूफी मनुष्य के समक्ष अपनी विपदा कहना चाहिए तब मीर सद्र जहां आपकी सेवा में आये। सरकार मदार ने उनको देखकर फरमाया कि तुम्हारा वजीर बड़ा होशियार और बुद्धिमान है जाओ अब तुम भी वजीर (मुख्यमंत्री) हो गये। इसके बाद मीर सद्र जहां मुख्यमंत्री (वजीर) हो गये।

साहिबे तारीखे सलाती ने शर्किया व सूफिया–ए–जौनपुर लिखते हैं कि मीर सद्र जहां के दादा चंगेज खां के आतंक से दुःखी होकर 'तिरमुज' से देहली आकर आबाद हो गये थे। इसी समय काकोरी शरीफ के तकिये के सादात भारत आये थे। मीर सद्र जहां के पिता उस समय के बड़े–2 प्रकाण्ड विद्वानों में गिने जाते थे। जौनपुर में सुल्तान इब्राहीम शर्की की फकीरों के प्रति दया एवं मानवता तथा विद्वानों के सम्मान एवं शिक्षा संरक्षण की बड़ी चर्चा होती थी। इसी कारण से आप जौनपुर आ गये तथा कुछ समय के बाद मीर सद्र जहां को इब्राहीम शर्की ने मुख्यमंत्री के पद पर तैनात कर दिया। मीर सद्र जहां को शिक्षा प्राप्ति का शौक था। अतः वह हजरत सय्यद मीर अशरफ जहांगीर समनानी की सेवा में आये। हजरत ने फरमाया कि तुम्हारा हिस्सा मेरे यहां नहीं है। बहुत जल्दी ही तुम्हारे यहां एक बुजुर्ग आ रहे हैं।

जिनका नाम बदीउद्दीन अहमद होगा चेहरे पर नकाब डाले होंगे वह जब काल्पी आयें तो तुम उनसे मुरीद होना। चूँकि मीर सद्र जहां जौनपुर के वजीर थे और काल्पी तथा जौनपुर के शासकों में तनाव था इसी कारण वह काल्पी आने में असमर्थ रहे। (हाशिया समाप्त)

सरकार ने बाहर आकर लोगों के सामने अपने मुख से नकाब उठा दी। लोग आपके जमाल को देखते ही सज्दे में गिर पड़े और बेहोश हो गये। आपने एक किस्सा सुनाया जिससे सभी को होश आ गया और अपनी-2 मुरादें भी प्राप्त हो गई फिर लोग आपके मुरीद होने लगे और कुछ को खिलाफत भी प्राप्त हो गई।

मीर सद्र जहां ने चाहा कि वह राज्य एवं गृहस्थी का त्याग कर दें। किन्तु सरकार ने इसकी इजाज़त नहीं दी और उन्हें आदेश दिया कि तुमसे लोगों की सेवा इसी पद पर रहते हुए प्राप्त होगी और तुमको खुदा बड़ी कामयावी देगा तथा तुमको अल्लाह की विशेष कृपा एवं दया भी प्राप्त होगी।

मदारे आजम तथा तुहफतुल असरार में लिखा है कि हजरत मीर सद्र जहां हुज़ूर मीर अशरफ जहांगीर समनानी कछोछवी के मुरीद होना चाहते थे किन्तु आपने मना करते हुए फरमाया कि बहुत जल्द ही तुमको एक बड़े बुजुर्ग हुज़ूर सय्यद बदीउद्दीन से लाभ प्राप्त होगा। अतः तुम उनकी प्रतीक्षा करो और स्वयं हज के लिए चले गये।

सरकार मदार पाक जौनपरु में लोगों को फैज पहुंचा रहे थे। तमाम जनता आपसे अपनी दुःख गाथा सुनाती आप उनको शान्ति प्रदान करते काजी शहाब उद्दीन किदवई रह० जो कि बहुत सुन्दर थे और शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान था। आपसे मुरीद हुए तथा खिलाफत भी प्राप्त की।

आप काफी समय से ठहरे हुए थे। लोग आते और आपसे प्रार्थना करते आप उन सभी को प्रेम से ढारस बंधाते उनके लिए खुदा से दुआ करते। लोगों को इस्लाम धर्म की बातें बताते। एक दिन आपके साथी से किसी शहर वासी का झगड़ा हो गया और शहर वासी की मृत्यु हो गयी। लाश को लोग सुल्तान इब्राहीम शर्की के पास लाये और आपके चेले को भी उपस्थित किया। आपके सार्थी ने कहा कि यह एक पागल कुत्ता था जिसे मैंने मारा है। इस पर मुर्दे के ऊपर पड़ी चादर हटायी गयी अब देखने वाले देख रहे थे कि उनके सामने एक कुत्ते की लाश पड़ी थी। इब्राहीम शर्की यह करामत देखकर बड़े आश्चर्यचकित हुए और पूछा कि आप कौन हैं ?

बुजुर्ग ने अपने आका हुज़ूर मदारे पाक का नाम बताया। यह सुनकर सुल्तान अपने को रोक न पाये और तुरन्त आपकी सेवा में उपस्थित हो गये।

अभी आप जौनपुर में ही तशरीफ रखते थे कि हजरत मीर हुसैन मोइज बल्खी बिहार से चलकर सेवा में आये और प्रतीक्षार्थियों में बैठ गये। अन्दर से आवाज आयी कि हुसैन की प्रतीक्षा है हुसैन अन्दर आ जाओ। चूँकि हुसैन नामक और भी लोग बैठे थे। अतः आवाज आयी हुसैन मोईज अन्दर आयें तब हुसैन अन्दर गये। आपने फरमाया कि हुसैन करीब आ जाओ और पास आओ। तब हुसैन मोइज ने यह शेर पढ़ा-

अगर यक सरे मूए बरतर परम।
फरोग-ए-तजल्ला बसोज्द परम

आपने फरमाया कि तू तौहीद का समुन्दर है और पास आजा जब वह और पास आये तथा आपके मुख पर नजर पड़ी तो तुरन्त ही कह उठे-

"मी गोयन्द के हक सूरत न बन्दद।"

मन ई के दीदह अम जाते मुसव्विर और सज्दे में गिर गये। जब कुछ सुधार हुआ तो उनसे किताब अवारिफुल मआरिफ मांगी और वह पेज पढ़ाये। जिनके बारे में हजरत शेख शरफुउद्दीन यहया मुनीरी ने भविष्य वाणी की थी कि तुम यह किताब हुजूर मदार साहब से पढ़ोगे। जब आपको हुजूर मदार साहब ने यह किताब पढ़ाई तो उन पर एक अनोखा नशा चढ़ गया यह अजीब बात थी कि हजरत हुसैन मोइज नविश्त–ए–तौहीद किताब पढ़ते जाते और उसके रंग में डूबकर बदलते जाते। अब उन पर पूरी तरह अल्लाह का जमाल था वह इश्के मुहम्मद में डूब चुके थे। अब उन पर संसार के रचयिता की हर रचना का भेद खुल गया। वह एक अलौकिक शक्ति का आभास कर रहे थे। इसके बाद मदार साहब जौनपुर से लखनऊ आ गये।

जौनपुर में:– किताब "मलफूजात शाह मीना" में 213 पर लिखा है कि सरकार बदीउद्दीन जिन्दाशाहमदार जौनपुर में ठहरे हुए थे किन्तु नमाज जुमा के लिए मस्जिद नहीं आये। वहां के बादशाह सुल्तान इब्राहीम शर्की ने कुछ लोगों को भेजा ताकि आप जुमा की नमाज अदा करें तथा विशेष रूप से लोगों को आर्शीवाद प्रदान करें। जब लोग आपके पास आये और जुमा में न जाने का कारणवश पूछा तो आपने फरमाया कि तुम लोग मेरे और सुल्तान के बीच झूठ न बोलना। सुल्तान से कह देना कि जुमा तीन लोगों औरतों, गुलाम, मुसाफिर पर नहीं है। सुल्तान ने ज्ञात कराया कि आप कौन है तो आपने फरमाया कि मैं मुसाफिर हूँ। तब सुल्तान ने सवाल किया कि मुसाफिर किसे कहते हैं। आपने अपनी जानमाज उठायी और कहा कि मुसाफिर इसे कहते हैं तथा आप लखनऊ आ गये।

बहरहाल सुल्तान ने अपनी गलती की क्षमा चाही तथा आपको वापस बुला लाये सरकार से हजारों लोग मुरीद हुए कुछ
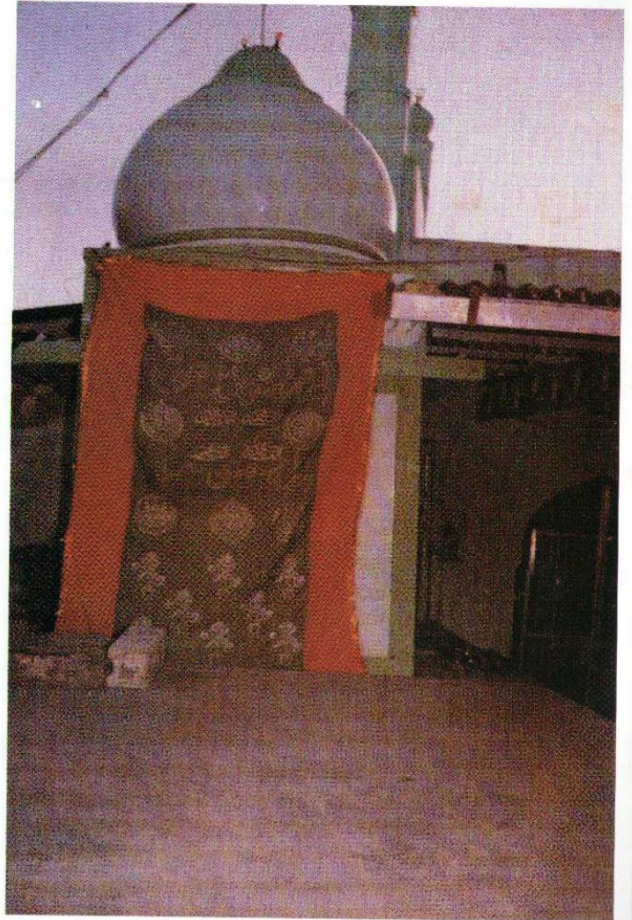
सरकार मदार चिल्ला मस्जिद – गोदीचौक, मन्दसूर (एम. पी.)।

को खिलाफत भी प्राप्त हुई। ऐसे भाग्यशाली व्यक्तियों में हजरत सय्यदना मौलाना शेख फौलाद रहमतुल्लाह अलैह भी थे जिनका मजार पाक मकनपुर शरीफ में हैं। इसी बीच शेख भिखारी मजजूब रह0 ने भी सरकार से फैज पाया इनका मजार कन्नौज में है। हजरत मुहम्मद इलियास रह0 ने भी आपसे फैज पाया तथा खिलाफत के ताज से भी मालामाल हुए।

43
सिराजउद्दीन सोख्ता जल गये

आपके साथ 1442 खलीफा हर समय रहते थे। पत्रिका 'इलियास' में लिखा है कि आपके साथ एक लाख चौबीस हजार खलीफा हर समय रहते थे। जिनका कार्य सरकार के लिए एक हुजरा (कुटिया) तैयार करना था। जहां सरकार पधारते ये सेवक तुरन्त ही हुजरा तैयार कर देते थे। आपके हुजरे की दरबानी का कार्य जिन्नातों के बादशाह इमादुलमुल्क करते थे।

शेख उब्दुर्रहमान चिश्ती कुदससिर्रहु ने 'मिर्रतुल असरार' के पेज 1096 पर लिखा है 'शेख बदी उद्दीन शाह मदार रजि0' 'हुर मुज' से होकर काल्पी में ठहरे हुए थे। आप अपने ढंग से आप जनता की भलाई एवं निष्ठा का कार्य करते थे। लोगों को आपसे हर प्रकार के कष्टों का निवारण हो रहा था। चारों ओर आपकी चर्चा हो रही थी और आप ही की जय-जयकार हो रही थी। काल्पी का बादशाह 'कादिर शाह' यह सब देखकर आपसे मिलने के लिए आया तथा अन्दर जाना चाहता था कि आपके दरबान इमादुल मुल्क ने अन्दर जाने से रोकते हुए कहा कि यह जलाल का समय है इस समय आप भेंट नहीं कर सकते हैं। इस

पर कादिर शाह ने अन्दर झांक कर देखना चाहा किन्तु दीवार ऊँची हो गयी। अब उसने घोड़े पर बैठकर झांकने का प्रयास किया तो दीवार फिर ऊँची हो गयी। अब उसने हाथी पर सवार होकर अन्दर झांकने का प्रयास किया किन्तु दीवार पुनः ऊँची हो गयी। इस पर कादिर शाह क्रोधित होकर चला गया और आदेश दिया कि आप मेरे राज्य से बाहर चले जायें। आपको जब यह बात मालूम हुई तो यमुना के पार चले गये और अपने सेवकों को आदेश दिया कि तीन दिन प्रतिज्ञा करो फिर जाकर देखना कि क्या समाचार है।

कादिर शाह जैसे ही बाहर निकला कुछ ही समय में उसके शरीर पर आबले छाले पड़ गये मानो भयानक रूप से जल गया हो जब उससे अपना कष्ट सहन न हो सका तब उसके पीर 'सिराजुद्दीन' ने अपने वस्त्र पहना दिये जिससे कि कादिर शाह स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर प्रसन्न हो गया। सरकार को यह घटना कश्फ के द्वारा मालूम हुई तो फरमाया कि 'सिराजुद्दीन चरा न सोख्त' सिराजुद्दीन क्यों न जल गया। अब क्या था सिराजुद्दीन बुरी तरह जल गये। इसी दिन से उन्हें सिराजउद्दीन सोखता कहा जाने लगा।

सिराजुद्दीन का देहान्त इसी बीमारी में हुआ और उन्होंने अपने चेलों को वसीयत की कि मुझे बिना गुस्ल दिये ही दफना देना। चूँकि इस्लामी तरीके के खिलाफ यह वसीयत थी इसलिए तय हुआ कि पहले एक उंगली धोकर देख ली जाये। अब जब उंगली पर पानी डाला गया तो वह राख हो गयी। किताबों में लिखा है कि जब कादिर शाह ने आपसे भेंट की इच्छा अपने पीर सिराजुद्दीन से प्रकट की तो उन्होंने किसी कारण से मना कर दिया चूँकि कादिर शाह की जिज्ञासा भड़क उठी और उसकी पिपासा शान्त नहीं हो रही थी। अतः वह अपने पीर की चोरी से

आप से भेंट करने आ पहुँचा। अब जबकि भेंट नहीं हो पाई थी तो अपने राज्य से चले जाने का निर्देश दे दिया फलतः उस पर मदार साहब का प्रकोप हो गया जिसे सिराजुद्दीन ने बिना आपसे क्षमा याचना किये ही दूर करने का प्रयास किया। जिसके परिणोपरान्त बिना गुस्ल के ही दफ्न किये गये।

{उद्धरण—(अवतरण)—मदारे आजम, नज्मुल कुतुब, तहफ्तुल अबरार}

44
मदारे पाक ने शाह मीना को कुतुब बनाया

मलफूजात हजरत शेख मीना साहब लखनवी के पेज 213 पर लिखा है कि जब हुजूर मदारुल आलमीन लखनऊ पधारे तो उस समय एक व्यक्ति की पत्नी चार महीने से बीमार थी तथा बीमारी के कारण वह मरणासन्न स्थिति में थीं। आपकी सेवा में आकर विनती की कि हुजूर में अपनी पत्नी से अथाह प्रेम करता हूँ मैं उसके वियोग से पागल हो जाऊँगा। वह इतनी बीमार है कि अब उसके जीवन की आशायें समाप्त होने लगी। अतः आप मुझ पर कृपा करें। आपने फरमाया कि तुम शेख शाह मीना की सेवा में चले जाओ तुम्हारे दुःखों का अन्त हो जायेगा। व्यक्ति ने फिर विनती की कि हुजूर मैं शेख शाह मीना को नहीं जानता हूँ। तब आपने अपने खलीफा व सेवक शेख शहाब उद्दीन को साथ भेजा और फरमाया कि वह इस समय हजरत कवाम उद्दीन के मजार पर हैं। उनको मेरी यह जानमाज एवं यह थैली दे देना और कहना कि इस व्यक्ति की पत्नी के लिए दुआ करें।

हुजूर के निर्देशानुसार जब शहाब उद्दीन वहां पहुँचे तो शेख शाह मीना जोकि उस समय किशोरवस्था में थे मिले। शेख

शहाब उद्दीन ने जानमाज और थैली देकर उनसे कहा कि आका मदारूल आलमीन ने आप को यह वस्तुयें भेजी हैं तथा इस स्त्री के लिए दुआ करने को कहा है। शेख मीना ने वुजू किया और जानमाज पर खड़े होना चाहते थे कि उनके पांव कंपकपाने लगे तब उन्होंने शहाबुद्दीन से दुआ करने के लिए कहा किन्तु उन्होने स्पष्ट मना करते हुए कहा कि आप दुआ करें मैं आमीन कहूँगा। फिर उन सभी ने नमाज पढ़ी और शेख शाह मीना ने उस स्त्री के लिए दुआ की शेख शहाबउद्दीन ने 'आमीन' कहा। उस स्त्री की बीमारी क्षण मात्र में ही दूर हो गयी तथा भूख के कारण भोजन मांगा। उसे चावल तथा सिरका खाने को दिया गया वह तुरन्त ही स्वस्थ हो गयी। अब क्या था शेख शहाबुद्दीन ने खड़े होकर पुकारा कि पूर्व से पश्चिम् तक तथा उत्तर से दक्षिण तक इस क्षेत्र के लोग शाह मीना की वलायत में आते हैं। अतः सभी लोग इनसे लाभन्वित हों किताब में लिखा है कि हुजूर शाह मीना ने हुजूर मदार पाक की जानमाज के सदके में दुआ मांगी थी। इसके बाद से लोगों मे हजरत शाह मीना की चर्चा आम हो गयी।

हाशिया (उद्धरण)–जब सरकार जौनपुर से लखनऊ पधारे तो उस समय वहां हजरत 'कवाम उद्दीन' कुतुब थे।

बदीउल अजायब केपेज 29 पर लिखा है कि हुजूर मदार पाक जब लखनऊ आये तो आपकी परीक्षा के लिए हजरत कवाम उद्दीन आये। उस समय काजी शहाब उद्दीन पर काला–ए–अतिश रह– आपकी सेवा में मूर्छल लिये हुए थे जो कि किशोरावस्था में थे। उनको देखकर कवाम उद्दीन ने कहा कि अच्छा तो यह लड़का भी तसव्वुफ सीखने आया है। इस पर हजरत मदार साहब ने फरमाया कि यहां जो कोई जिस नीयत से आता है उसे वहीं प्राप्त होता है आपके इस उत्तर से हज़रत कवाम उद्दीन की ऐसी स्थिति हो गयी कि घर आकर उनका देहान्त हो गया। इसी कारण

वहाँ कुतुब की जगह खाली हो गयी तो आपने शाहमीना को पदस्थ किया।

किताब बहरुलमआनी में मुहम्मद बिन मीर जाफर मक्की ने लिखा है कि कुत्बुल मदार को यह अधिकार प्राप्त है कि वह जिस कुतुब को चाहे माजुल (निलम्बित) कर दें और दूसरे को कुतुब बना दें।

दुर्रेलमुनज्जम में लिखा है कि एक कुतुब 16 आलमों (संसार) का अधिकारी होता है। एक–2 आलम इतना बड़ा होता है कि पूरा संसार (आकश पृथ्वी) उसमें सम्म जायें।

बदी उलअजायब के पेज 13 पर लिखा है कि हजरत कुतबुलमदार जब खुरासान पहुँचे और कुछ दिन के लिए ठहरे ये तो आपके खलीफा जमालउद्दीन जानेमन जन्नती शहर में घूमने लगे उनको हजरत नसीर उद्दीन जो कि उस शहर के कुतुब थे, मिले। हजरत ने नसीरउद्दीन से कहा कि तुम्हारे शहर में कुत्बुलमदार पधारे हैं। किन्तु तुम उनकी सेवा में नहीं आये। जाओ और उनसे लाभान्वित हो। हजरत नसीरउद्दीन ने कहा कि मैंने तुम्हारे जैसे बहुत से दीवाने देखे हैं। तुम अपना काम करो। यह सुनकर जमालुद्दीन बहुत दुःखी हुए और उनको कुतबियत से निलम्बित कर दिया। सरकार ने फरमाया कि नसीरउद्दीन ने तुम्हारा दिल दुखाया है वो आता ही होगा। जब नसीरउद्दीन कुतुब नहीं रह गये तो घबराये हुए आपके पास आये आपने फरमाया कि जानेमन जन्नती से माफी मांगो। फिर हजरत नसीरउद्दीन ने जानेमन जन्नती से क्षमा याचना की और पुनः कुतुब हो गये तब सरकार से और भी फैज पाया। सरकार मदार–ए–पाक ने नसीरउद्दीन को अपना खलीफा भी बनाया इसके बाद उनकी हालत ही कुछ और हो गई। फिर आप कन्तूर शरीफ तशरीफ ले गये।

हाशिया–लखनऊ में सरकार उस समय भी थे जब हुजूर कुत्बे आलम शाह मीना साहब रह का जन्म हुआ था। किताब मदारे आजम में अल्लामा हकीम फरीद अहमद अब्बासी नक्श बन्दी मुजदिद्दी ने लिखा है कि लखनऊ में एक बूढ़ी स्त्री हजरत मदार साहब की सेवा में उपस्थिति हुई और विनती की कि आज एक बच्चे ने जन्म लिया है और अभी तक उसने दुग्ध पान नहीं किया है। तब सरकार ने फरमाया कि रमजान का चांद निकल चुका है और यह बच्चा अल्लाह का वली है। इसी कारण वह दूध नहीं पी रहा है।

45
मदारूल आलमीन किन्तूर में

मदारे आजम के पेज नं0 124 पर लिखा है कि जब आप कन्तूर शरीफ पहुंचे और मस्जिद में ठहरे तो कुछ हीं समय के बाद नमाज का समय हो गया । आपने अपने सभी साथियों सहित नमाज अदा कर ली। थोड़े समय के बाद काजी महमूद नमाज अदा करने के लिये आये उन्होंने देखा कि मुसाफिर ने किसी की प्रतीक्षा किये बिना ही नमाज अदा कर ली तो उनको क्रोध आ गया क्योंकि वह दूसरी जमात को मकरूह मानते थे। उन्होंने कहा कि ऐ अजनबी तुने हमारी प्रतीक्षा के बिना ही नमाज अदा कर ली। हम लोगों की जमात नहीं होगी। हजरत मदार साहब ने फरमाया कि ऐ व्यक्ति नमाज को प्रथम समय में पढ़ना चाहिए तुमने आने में समय क्यों लिया ? इस पर काजी महमूद चिढ़ गये। सरकार मदार साहब ने कहा कि क्या तुमने कुरआन नहीं पढ़ी है वह कहने लगे कि पढ़ा है। सरकार ने फिर कहा कि कुरआन लाओ और मेरे सामने पढ़ो। जब काजी महमूद ने कुरआन लाकर खोला और पढ़ना चाहा तो उन्हें उसमें कुछ लिखा नजर नहीं

आया फिर तो इस करामत पर वह बहुत अचम्भित हुए और हुजूर का नाम ज्ञात किया । जब उन्हें मालूम हुआ कि वह बुजुर्ग हजरत बदीउद्दीन अहमद हैं जो कि मर्तब–ए–व्राउल वरा पर आसीन हैं तो तुरन्त ही उनको शेख अबुलफतह शत्तारी जौनपुरी की वसीयत याद आ गयी।

काजी महमूद की किशोरावस्था के समय उनके पिता शेख हमीद शेख महमूद को शेख अबुलफतह के समक्ष ले गये और दुआ के लिए विनीत हुए तो हजरत शेख अबुल फतह ने अपनी टोपी शेख महमूद के सिर पर रखी जिसे इस बच्चे ने उतार दी इसी प्रकार शेख अबुल फतह ने बच्चे के सिर टोपी 3 बार रखी किन्तु बच्चे ने हर बार टोपी उतार दी तब शेख ने गुस्से में होकर बच्चे को समाप्त कर देना चाहा किन्तु इसी समय उनको हजरत कुतबुलमदार रजि0 का ध्यान आ गया जिन्होंने फरमाया कि ऐ शेख यह बच्चा मेरे हिस्से में है। तब शेख अबुल फतह ने फरमाया कि ऐ शेख हमीद तुम्हारा बच्चा 'महमूद' जल्दी ही ऐसे व्यक्ति की शरण में जायेगा जो कि कुतबुल मदार होगा और उनका नाम बदीउद्दीन अहमद होगा।

जब काजी महमूद को अपने बचपन की यह घटना याद आयी तो उन्होंने समझ लिया कि यह बुजुर्ग वही बदीउद्दीन अहमद हैं कि जिन के लिए शेख अबुल फतह ने भविष्यवाणी वर्षो पहले की थी। तो उन्होंने हुजूर मदारे पाक से विनती की कि मुझे मुरीद कर लीजिए। सरकार ने फरमाया कि इल्म जाहिरी जो तुम्हारे लिए बड़ा पर्दा है इसे तुम जब तक भुला न दोगे तो मेरे मुरीद नहीं हो सकते हो काजी ने अर्ज किया कि यह मेरे लिए कठिन होगा तब सरकार ने अपनी लार काजी के होठों पर लगा दी जिससे उनकी दुनियां ही बदल गयी। इस काया पलट के बाद सरकार ने उनको मुरीद किया और रूहानी इल्म से नवाजा फिर तो काजी महमूद बड़े

सूफी और बुजुर्गों में गिने जाने लगे। काजी महमूद से सिलसिल–ए–मदारिया के तालिबान गिरोह का शुभारम्भ हुआ और हजरत मौलाना काजी महमूद कन्तूरी को सिलसिल–ए–मदारिया के बड़े बुजुर्गो में गिना जाता है।

46
घाटमपुर में सरकार का आगमन

उत्तर भारत के विभिन्न शहरों, गांवों, जंगलों एवं पर्वतों पर आपने कई जगह चिल्ले खींचे एवं आम लोगों तक ईश्वर भक्ति, शान्ति सद्भावना की शिक्षा देने हेतु अपने चेलों को छोड़कर आप दूसरे स्थान की ओर प्रस्थान करते हुए घाटमपुर आये। यहाँ का राजा आपके चमत्कारों से अत्यधिक प्रभावित था अतः आपके समक्ष उपस्थित होकर विनीत हुआ कि महाराज मैं निःसंतान हूँ मेरे भाग्य में सन्तान सुख प्रतीत नहीं होता है। हजरत मदार साहब ने कहा कि राजा तुम को दो पुत्र रत्न प्राप्त होंगे उनमें से एक तुम मुझे देना और एक तुम लेना। राजा ने आपसे वादा किया कुछ ही समय में राजा की दो रानियाँ माँ बनी अब तो राजा के महल में चारों ओर खुशियां ही खुशियां थीं। कुछ समय और गुज़रा और जब हजरत दुबारा घाटमपुर आये तो राजा ने एक पुत्र के आपकी सेवा में उपस्थित किया जो कि आपके साथ दस वर्षों तक रहा एक दिन लड़का यूँ ही रोने लगा तब हजरत ने मालूम किया कि क्यूँ रोता है जिस पर हजरत मदार साहब को बताया गया कि बच्चे को अपने घर की याद आ रही है। आपने उसको घर जाने की इजाजत दे दी। परन्तु लड़के ने घर जाने से मना किया कि मैं मुसलमान हूँ परन्तु मेरे घर वाले मुसलमान नहीं हैं अतः सम्भव
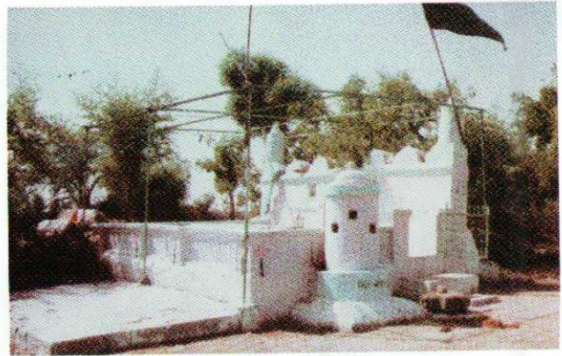
हजरत सिपाह सालार मदारी बसमी–जि. पाटन (गुजरात)।
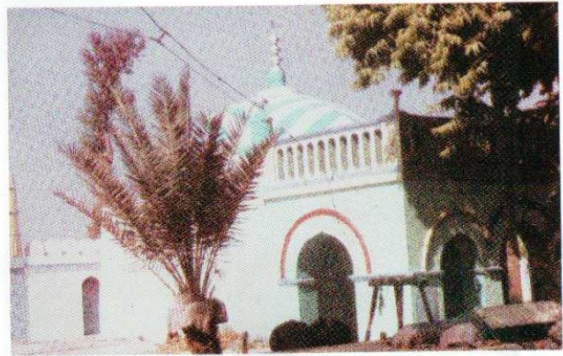
दरगाह शरीफ हजरत सधन सरमस्त मदारी–दीवानगान, पांडो सेवास।

है कि वे मुझे स्वीकार न करें और किसी प्रकार से प्रताड़ित करें तब हजरत मदार साहब ने कहा कि नहीं तुम अपने राज्य के उत्तराधिकारी हो और आगे चलकर राजा बनोगे। कालान्तर में ऐसा ही हुआ।

47
गुजरात में शेख इलियास का बेअत होना

घाटमपुर से आपने गुजरात की ओर प्रस्थान किया गुजरात पहुँच कर आपने शेख इलियास को मुरीद किया। इस संदर्भ में पुस्तक 'गुलजार–ए–मदार' के पेज 114–115 पर लिखा है कि शेख इलियास गुजरात के सुप्रसिद्ध व्यापारियों में गिने जाते थे। एक दिन उनकी मुलाकात हज़रत खिज्र अ० से हुई। शेख ने विनती की कि आप मुझे इल्म–ए–लदुन्नी (छुपे हुए रहस्यों को जानने का ज्ञान एक प्रकार की ईश्वरीय देन) हज़रत खिज्र अ० ने कहा कि गुजरात में एक प्रकाण्ड विद्वान का आगमन होने वाला है। वह तुम को ऐसी शिक्षा देंगे कि तुम आजीवन याद रखोगे। फिर एक प्याला शर्बत का पिलाया और कहा कि पहले सांसारिक शिक्षा प्राप्त करो तथा धार्मिक शिक्षा ग्रहण करो। इसके बाद शेख इलियास ने शिक्षा प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिया और शेखुल इस्लाम कहे जाने लगे। पाँच वर्ष गुज़र जाने के पश्चात् हुजूर मदारे आज़म जब गुजरात पहुँचे तो शेख ने वे सारे लक्षण आप में पाये जो हज़रत ख़िज़ अ० ने बताये थे। अब शेख का अधिकांश समय हजरत की सेवा में गुजरता था। एक दिन हज़रत मदार साहब ने शेख से कहा कि संसार को मृत्यु है तुम इसे छोड़ दो। उन्होंने वादा कर लिया परन्तु घर आकर संसार का मोह भंग न

कर सके और इस मायावी जाल में फँसे होने के कारण सोचा कि मैं क्यूँ वैराग्य लूँ। इसके बाद उन्होंने धीरे–धीरे हजरत की सेवा को त्याग दिया। इस पर उनको सफेद दाग़ का चर्म रोग हो गया जिस कारण उन्होंने घर से बाहर जाना बंद कर दिया।

कुछ समय बीता होगा कि अचानक उनको लगा कि यह रोग हज़रत मदार साहब का दिल दुखाने के कारण हुआ है। बस फिर क्या था दीवानों की तरह दौड़ते हुए आये और क्षमा याचना चाही हुज़ूर वाला ने उनको गले लगाया इसके बाद उनके दिल की दुनियां ही बदल गयी और पूरी उम्र आपकी सेवा में व्यतीत कर दी।

48
सातवाँ हज

आप गुजरात से खम्बात पहुँचे जहाँ से आपने सातवें हज की यात्रा प्रारम्भ कर दी। आपने कई हज़ किये हैं जिनमें से कुछ समुद्र को पार करके तथा कुछ शुष्क मार्ग (स्थल मार्ग) से किये हैं। आपके बारे में एक वाक़िया यूँ बताया जाता है कि जब हजरत ख़्वाजा गरीब नवाज़ (मोईनउद्दीन) चिश्ती रजि0 सिन्धु नदी के पुल से गुजरे तो आपने नदी से पूछा कि ऐ नदी तुम पर से अब तक कितने मोमिन गुजरे है ? दरिया ने उत्तर दिया कि मुझ से अब तक ढाई मोमिन गुज़रे हैं। ख्वाजा ने पूछा कि ढाई मोमिन कौन–2 से हैं ? नदी ने कहा पहला मोमिन हजरत सय्यद बदीउद्दीन और दूसरा मोमिन हजरत जकरिया मुल्तानी है। इसके बाद ख्वाजा लाहौर पहुँचे और वहाँ हजरत उस्मान अली हिज्वेरी दाता गंज बख्श लाहौरी के मज़ार के समीप चिल्ला खींचा और एक क़तआ कहा जिसके बाद की दो पंक्तियाँ निम्न हैं:–

गंजबख्श–ए–फैज–ए–आलम मजहर–ए–नूर–ए–खुदा।
नाकिसां रापीरे कामिल कामिलाँ रा रहनुमा।।

इसके बाद जब ख्वाजा वापस सिंध नदी पर से गुजरे तो नदी ने कहा कि अलहम्दोलिल्लाह अब मुझसे तीसरा मोमिन गुज़र रहा है। इसके सिवा आप जब हज के लिए स्थल मार्ग से जाते थे तो आप अनेक स्थानों पर चिल्ला फ़रमाते थे जिनके चिन्ह आज भी प्राप्त हैं।

49
ईरान का क़िस्सा

हजरत मदार साहब मुल्क ईरान के एक मैदान से गुज़र रहे थे। आपके साथ आपके मुरीद–व–खलीफा लोग भी थे। हज़रत अबू तुराब फ़ंसूर का बयान है। कि उस मैदान में एक व्यक्ति की खोपड़ी मिली। जब आप उस खोपड़ी के पास पहुँचे तो आपने खोपड़ी से पूछा कि तू कौन है और तेरा क़िस्सा क्या है ? रब्बे क़दीर ने उस खोपड़ी को बोलने की शक्ति दी। अब खोपड़ी ने अपना हाल बताया कि ऐ अल्लाह के वली मैं फलॉ बिन फलां हूँ और फलां बिन फलाँ की नौकरी करके अपने बच्चों का लालन पालन करता था। कि इसी समय हज़रत इज्राईल ने आकर मेरी रूह (आत्मा) निकाल ली। अब मैं 12 वर्षों से विभिन्न प्रकार के कष्टों एवं दुःखों को सहन कर रहा हूँ। हजरत को बड़ा दुःख हुआ। आपने उस खोपड़ी के लिए अपने रब से दुआ माँगी। फलस्वरूप उस खोपड़ी को एक नया जीवन मिला। उसका नाम आपने ज़मज़मा रखा जो 12 वर्ष तक जीवित रहा। मृत्यु पश्चात् उसको ईरान में दफ़न किया गया जहाँ से आज भी लोग अपनी मन्नतें एवं मुरादें माँगते हैं और खुशी से झोली भरते हैं। ज़मज़मा

का शाब्दिक अर्थ खोपड़ी है।

इसके बाद आपने रास्ता बदल कर सफर के लिए यात्रा प्रारम्भ की। ईरान, इराक आदि में आपके चिल्ले आदि आज भी पाये जाते हैं। यह सफर–ए–हज आपका अन्तिम हज था। इस संदर्भ में किताबों में लिखा है कि जब हजरत मदार साहब हज के बाद मदीने पाक अपने आका के रौज़े पर सलाम करने गये तो आकाए दोजहाँ स0 ने हुक्म दिया कि ऐ बदीउद्दीन अहमद हिन्दुस्तान में जाकर कन्नौज जाना कन्नौज के पास दक्षिण में एक तालाब है जिससे 'या अज़ीजो' या अज़ीजो' की आवाज आती है। जब तुम तालाब के समीप पहुँचोगे तो तत्काल सूख जायेगा तुम उसी स्थान पर ठहरना वह तुम्हारा अन्तिम निवास स्थान है।

50
काज़ी मसूद का मुरीद होना

जब आपको भारत में कन्नौज के पास तालाब के स्थान को अन्तिम निवास के रूप में स्थान बता दिया गया तो आप आज्ञानुसार इसी ओर चले। आप नजफ आये। इस संदर्भ में काजी मसूद र0 ने अपनी पुस्तक 'खजीनतुल अबरार' में लिखा है कि मैं अपने बचपन में एक नदी के किनारे खड़ा था। मेरा पैर फिसल गया और मैं नदी में गिर गया। एक नूरानी चेहरे वाले बुजुर्ग आये जिनके मुख पर तेजी की छटा बरसती थी उन्होंने मुझे डूबने से बचाया मैंने उन बुजुर्ग को खूब ध्यान से देखा। मुझे हज़रत मौलाना यहया नजफ ले गये जहाँ हज़रत ठहरे हुए थे। मुझे उनके समक्ष प्रस्तुत किया गया हुजूर ने मुझे मुरीद (गुरू दीक्षा) किया और खिलाफत से भी नवाज़ा। मैं उनकी सेवा में 40 वर्षों तक रहा। और वह बुजुर्ग कुत्बुल्मदार थे।

51
हजरत अहमद आरज

हजरत अहमद आरज नामी घुड़सवार थे एक रोज़ घोड़े का पांव फिसल गया आप ज़मीन पर गिर कर बेहोश हो गये। इसी समय हुजूर मदार पाक का आगमन हुआ उन्होंने फरमाया कि ऐ अहमद इस मृत संसार में कब तक मूर्छित (बेहोश) रहोगे आप ये सुन कर होश में आ गये और चाहा कि आपके पैर छू लूँ किन्तु दर्द से तड़प गये। हज़रत मदार साहब ने आपके घोड़े को पुकारा घोड़ा आपके समीप आ गया। आपकी दुआ से हजरत अहमद आरज पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गये।

मदारे आजम पे 59 पर मौलाना हकीम फरीद अहमद नक़्श बन्दी ने लिखा है।

52
हरसहे ख्वाजगान का आपके साथ यात्रा करना

नज़फ से आप सीरिया के शहर हलब के कस्बे चुनार आये जो कि आपका पैतृक कस्बा है वहाँ आप अपने कुन्बे से मिले तथा अपने भाई के पुत्र अब्दुल्लाह के तीनों पुत्रों के अपने लालन पालन में लेकर चल दिये।

यही तीनों पुत्र हज़रत ख्वाजा सय्यद अबू मुहम्मद अरगून, हजरत ख्वाजा सय्यद अबू तुराब फन्सूर तथा ख्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफूर के नाम से जाने जाते हैं।

आप अफगानिस्तान की राजधानी काबुल आये काबुल में एक व्यक्ति अपनी पुत्री को लाया जो कि आँखे खो चुकी थी। उस व्यक्ति ने आपसे विनती की थी कि हुजूर मेरी बेटी देख नहीं सकती है यदि आप दुआ कर दें तो इसकी नेत्र ज्योति वापस आ जाये हुजूर को उसके हाल पर दया आ गयी और आपकी दुआ से लड़की की आँखों में रोशनी आ गयी। आपकी यह करामत (चमत्कार) भी बहुत प्रसिद्ध हो गयी। बड़ी संख्या में लोगों ने इस्लाम धर्म के आदर्शों को अपनाने के लिए आपके हाथ पर इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लिया।

53
हजरत शेख ईसा के प्रश्न

आप अफगानिस्तान से भारत आये यहाँ जौनपुर शहर में आप कुछ दिनों के लिए ठहर गये तो हज़रत ईसा जौनपुरी आपके पास आये और कुछ प्रश्न पूछे।

हजरत ईसा जौनपुरी हजरत शहाबुद्दीन मलिकुल उलमा के शिष्य थे उन्होंने पूछा कि हुजूर आप कुछ खाते–पीते क्यूँ नहीं हैं ?

आपने फरमाया कि कुरआन पाक की तिलावत इस प्रकार करें कि उसके नुकूश हुरूफी (अक्षर) कलेमात तय्यबात शरीर की ताकत और अर्थ आत्मा की शक्ति हो जाये तो अलहम्दोलिल्लाह उस परवर दिगार ने अपने फज़लो करम से मुझे उसकी मुनासिबत अता फरमाई। मेरे प्यारे –

मिस्र में जब सूखा पड़ा था तब लोग हजरत यूसुफ अ० को देख लेते थे और उनकी भूख प्यास समाप्त हो जाती थी। तो

जो अपने रब का दीदार करता हो उसे भला भूख और प्यास कैसे लगेगी। हजरत सय्यद बदीउद्दीन तो ऐसे महव तजल्लियात–ए–अनवारे इलाही थे। कि नूरे खुदा आपके नूरानी चहरे से ऐसा ताबां था कि देखने वाले ताब न ला पाते और सज्दे में गिर जाते थे। इसी कारण आप अपने मुख पर नकाब डाले रहते थे।

54
सरकार से फूल की बातें

शीराज़ हिन्द जौनपुर का वाकिया इतिहासकारों ने कुछ इस प्रकार लिखा है कि सरकार की सेवा में एक दिन शेख ईसा जौनपुरी ने केवड़े का फूल पेश किया। सरकार ने फूल वापस कर दिया इस पर शेख ने कहा कि खुशबू को अस्वीकार करना और (दिल तोड़ना) जायज़ नहीं है। सरकार ने फरमाया कि यदि किसी प्रकार का सन्देहास्पद न हो। शेख कुछ कहते कि फूल ने कहा कि मैं एक हराम खाने वाले के घर से शेख के पास आया हूँ। अब शेख को पश्चाताप हुआ और हुजूरमदार पाक से क्षमा याचना करने लगे।

55
नमाज़ में बछड़े का ध्यान

हजरत मदार साहब एक बार जौनपुर की एक मस्जिद में नमाज़ पढ़ने गये। और जमाअत में सम्मिलित हो गये पहली रकअत समाप्त भी न हुई थी कि आपने नियत तोड़ दी और अकेले नमाज़ अदा करना प्रारम्भ कर दिया। जब नमाज पढ़ चुके तो आपसे इस सन्दर्भ में पूछा गया तो आपने फरमाया कि "ला

र'ज़ाता इल्ला बेहुज़ूरिल क़ल्ब' दिल को अल्लाह की तरफ रूजू (लगाब) किये बगैर नमाज़ नहीं होती और सन्तो वलियों की पूरी नमाज में ध्यान सिर्फ अल्लाह से लगाना अति आवश्यक (वाजिब) है। इमाम साहब को बछड़े का ख्याल था। जब मैंने इमाम को इस हालत में देखा तो मैं अलग हो गया। जब इमाम साहब से इस विषय में पूछा गया तो उन्होंने इसको मान लिया।

56
मदारे आलम के हुज़ूर में मलेकुलउल्मा के प्रश्न

हज़रत मलेकुल उलमा शहाबउद्दीन दौलताबादी सुल्तान 'इब्राहीम शर्की' जोनपुरी के दरबारी आलिम (धार्मिक विद्वान) थे। उनके लिए दरबार में चांदी की कुर्सी बादशाह के दरबार में बिछाई जाती थी। बादशाह इनको इतना प्रेम करता था कि एक बार मलकुल उलमा बीमार हुए तो जिस स्थान पर वह स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे वहाँ बादशाह ने अपने हाथों में एक प्याला पानी लेकर चारों ओर फेरे लगाये और कहा कि ऐ खुदा जो बीमारी मलकुल उलमा को है वह मुझे लगजाये मगर वह स्वस्थ हो जायें।

जब आप जौनपुर पहुँचे तो काज़ी शहाबउद्दीन मलकुल उलमा जबउचित समय पाते बादशाह से आपके विरूद्ध कुछ न कुछ अवश्य कह देते। किन्तु बादशाह को हजरत मदार साहब में अत्यधिक आस्था होने के कारण इन पर कोई प्रभाव नहीं होता था। दूसरी ओर हजरत मदार साहब से रोजाना कोई न कोई करामत लोगों को देखने को मिलती थी। और शहाबउद्दीन हर दिन लज्जित होते थे। अन्ततः उन्होंने हजरत मदार साहब के पास कुछ प्रश्न लिख कर भेजे। जिनका उत्तर आपने बहुत अच्छे ढंग से विवेचना सहित दे दिया। सरकार के इस वाक़िये को बडे

महत्वपूर्ण एवं प्रभावकारी ढंग से अरबी एवं फ़ारसी भाषा के इतिहासकारों ने सुरक्षित किया है जो बाद में उर्दू की किताबों में भी मिला है। इस संदर्भ में जो आपके पत्र हैं उनका फ़ारसी से हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करता हूँ। जो कि 'मदारे आजम' में लेखक हज़रत मौलाना हकीम फरीद अहमद नक़्शबन्दी ने लिखा है कि एक दिन मलकुल उलमा ने हजरत मदार साहब की सेवा में दो प्रश्न लिखकर भेजे जिनके उत्तर आपने लिखित दिये।

उत्तर का अनुवाद देखें :–मेरे भाई क़ाजी शहाबउद्दीन तुम ने दो प्रश्न किये हैं कि व्यक्ति श्रेष्ठ है या 'काबा'श्रेष्ठ है दूसरा यह कि उलमा (धार्मिक विद्वान) अम्बिया के उत्तराधिकारी हैं। इस इल्म (शिक्षा) से यही शिक्षा है जो मैंने प्राप्त की है अथवा कोई और ? तो पहले प्रश्न का उत्तर यह है कि काबे पर सिफात–ए–(लक्षण) खुदा की छाया है और आदमी पर जाति की छाया है। अतः आदमी श्रेष्ठ है। दूसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि ऐसे ज्ञान से तात्पर्य यह है कि संसार के रचयिता के रचना एवं संदर्भ में कि ईश्वर क्या चाहता है। क्योंकि खुदा की हर बात को नबी अवश्य जानते हैं और जो नबी के मिशन को बढ़ाने के प्रति जिम्मेदार हों वे भी जाने। जो लोग आरिफ बिल्लाह होते हैं उन पर खुदा का कोई भेद छुपा नहीं रहता है और यही वास्तविक उत्तराधिकारी होते हैं। प्रलय (कयामत) के बाद जब लोग हश्र के दिन हिसाब किताब के लिए खड़े होंगे तो इनका स्थान अलग एवं विशिष्ट होगा। और ये कोई ज्ञान सांसारिक ज्ञान से प्राप्त नहीं हो सकती है इसके लिए धर्म ज्ञान के साथ–साथ कठोर तपस्या एवं साधना करना पड़ती है। जो व्यक्ति जिस उद्देश्य के लिए पैदा किया जाता है वह कार्य उस पर आसान (सरल) हो जाता है। जो ज्ञान आपने प्राप्त किया है उसमें कठिन रास्तों से गुजरना पड़ा है। जिसमें समस्याओं से जूझना पड़ता है। जबकि यह ज्ञान वह ज्ञान है जिससे पूरे संसार के भेद खुल जाते हैं इससे हृदय को एक

पूर्ण सन्तोष प्राप्त हो जाता है तथा कुरआन व हदीस का पूर्ण संदर्भ सहित सार प्राप्त होता है। इस प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए वाद--विवाद की कोई आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि वाद–विवाद से लोगों तथा खुदा के बीच पर्दा पड़ जाता है।

'अल इल्मु हिजाबुल अकबर' का शाब्दिक अर्थ भी यही है। तात्पर्य यह है ज़ाहिरी इल्म से खुदा और उसके बन्दे के बीच पर्दा पड़ा रहता है जबकि आत्मिक ज्ञान से पर्दा उठ जाता है। और ऐसे लोगों पर प्रारम्भ से अन्त तक के रहस्यों का पर्दा उठ जाता है।

पत्र पढ़कर काजी शहाब उद्दीन ने जान लिया कि हजरत मदार साहब एक प्रकाण्ड विद्वान हैं तथा इनको हर प्रकार का श्रेष्ठ ज्ञान है। इसके अतिरिक्त सिराजउद्दीन सोख्ता के सोख्त होने का कारण भी जान गये। अतः आपकी सेवा में आने को व्याकुल हो गये तथा आपके समक्ष क्षमा याचना के लिए आये किन्तु उन को मदार साहब ने उनके घमण्ड के कारण माफ नहीं किया। फिर क्या था काजी साहब रात–दिन परेशान रहने लगे। उन्होंने हजरत गोसे आलम मखदूम आशरफ जहांगीर समनानी कछौछवी से सिफारिश करने के लिए कहा ताकि हजरत मदार साहब उनको माफ कर दें। हजरत सैय्यद मीर अशरफ जहाँगीर समनानी कछौछवी ने उनके लिए एक पत्र लिखा जिसमें काजी साहब को माफ करने का निवेदन किया। पत्र लेकर काजी साहब पुनः आपकी सेवा में उपस्थित हुए हजरत ने उनको माफ कर दिया और निस्वत–ए–तैफूरिया से भी नवाजा।

इस प्रकार काजी शहाब उद्दीन मलकुल उलमा को हजरत मदार साहब से बेअत होकर खिलाफत प्राप्त हुई।

57
सय्यदना जिन्दा मदार की जौनपुर से वापसी

आप कई बार जौनपरु गये इस प्रकार कोई बारह वर्ष तक जौनपुर में रहे। यहाँ तक कि जौनपुर के लोग तथा स्वयं बादशाह को ऐसा प्रतीत होने लगा कि आप अपना अन्तिम निवास स्थान इस शहर को चुन चुके हैं।

एक दिन आपने अपने सभी साथियों एवं चेलों को जौनपुर छोड़ने का आदेश दिया। जब यह समाचार बादशाह ने सुना तो अपने मंत्रियों एवं शासन के सभी प्रमुख लोगों को लेकर आपकी सेवा में आये और कहा कि हम से ऐसी कौन सी गलती हुई कि आप शहर छोड़कर जा रहे हैं। तब आपने कहा कि मैं खुदा की मर्जी के बिना कुछ नहीं करता हूँ। यह उसकी मर्जी है, मुझे सरकारे दो आलम सं० ने जिस स्थान पर ठहरने का आदेश दिया अब मैं अपने उसी गन्तव्य स्थान की ओर जा रहा हूँ।

जब लोगों को पता चला कि आप शहर से जा रहे हैं तो व्याकुल हो गये और रोने लगे लोग बड़ी संख्या में आपकी सेवा में आकर विन्ती करने लगे कि सरकार हमें छोड़कर न जाइये। जब हजरत मदार साहब ने लोगों के दुःख और व्याकुलता को देखा तो आपने कहा कि मैं एक बार और आऊँगा, तुम लोग परेशान न हों।

फिर बादशाह और अनेकों गणमान व्यक्ति आपकी सेवा में उपस्थित होकर हजारों की संख्या में मुरीद हुए। फिर आपने कन्नौज की ओर अपनी यात्रा प्रारम्भ कर दी।

58
सरकार का मकनपुर शरीफ आना

हिज्री 818 में आप मकनपुर शरीफ पहली बार आये इतिहासकारों ने लिखा है कि जब आप उस तालाब के पास आये जिससे या अजीजो या अजीजो की आवाज आती थी तो वह सूख गया तथा आपने—अपने साथियों से कहा कि यही वह स्थान है जिस का मुझे आदेश दिया गया है।

उस समय यह एक जंगल और वीरान स्थान था यहाँ कोई आवादी नहीं थी। आपने अपने साथियों को आदेश दिया कि इस सूखे तालाब के स्थान पर मेरे लिए एक हुजरा (कुटिया) बनाओ। इसके बाद आपके सभी साथी इसी स्थान पर रहने लगे।

कुछ समय पश्चात् जौनपुर नरेश इब्राहीम शर्की ने आपके पास एक प्रार्थना—पत्र भेजा कि मुझसे आपका वियोग और नहीं सहन हो पाता है। आपकी आज्ञा हो तो मैं आपकी सेवा में कुछ समय के लिए आ जाऊँ तथा आपके निवासी के लिए दो चार कमरे भी बनवा दूँ ताकि आपके लिए यह निवास और बाद को यहीं पर आपका मज़ार भी बन सके। इस पत्र के जबाव में हजरत मदार साहब ने बादशाह को लिखा कि तुम अभी न आओ मैं स्वयं ही कुछ समय पश्चात् जौनपुर आ रहा हूँ।

जब लोगों को यह बात पता चली कि हजरत मदार साहब अब इस स्थान पर ही रहेगे तो दूर—दूर से लोगों ने आकर अपने लिए घर बनाना प्रारम्भ कर दिया और इस प्रकार जंगल में मंगल होने लगा। फारसी भाषा के किसी कवि ने ठीक ही कहा है :—

औलिया रा हर कुजा मसकन बुवद।

"गर हमा दश्त अस्त गुलशन मी शवद।।"

59
सय्यदना कुत्बुल मदार से कन्नौज की बीमारी का दूर होना

उस समय कन्नौज भारत का एक बड़ा व्यापारिक नगर तथा एक उत्तरी क्षेत्र के कुछ भाग की राजधानी था। अतः यहाँ पर बहुत बड़ी संख्या में लोग जीवन यापन करते थे। जब आप कन्नौज के पास तालाब वाले स्थान (मकनपुर शरीफ) में आकर सदैव के लिए ठहर गये तो आपके पास लं.ग अपने कष्टों, दुःखों एवं समस्याओं के निवारण के लिए आने लगे। ऐसे ही बड़ी संख्या में कन्नौज के लोग आपकी सेवा में आये और आपसे निवेदन किया कि ऐ मेरे आका, मेरे दाता, ऐ दयालुता के प्रतीक आप हमारे दुःख से वाकिफ हैं। हजारों लोगों को 'कालरा' की बीमारी काल के गाल मे समा चुकी है। दर्जनों लाशों को रोज उठाना पड़ता है। आप हम पर दया करें। हमारे लिए दुआ कीजिए। हमको इस बीमारी के प्रकोप से बचाइये। आपने दुःखी लोगों पर सुखो—शान्ति एवं सम्पन्नता की वर्षा की है। आप हम बेसहारा लोगों को भी सहारा देने की कृपा करें। हमारी बस्ती आपकी दुआओं के कारण 'कालरा' से सुरक्षित हो जाये। हमको अब कोई लाश न उठाना पड़े। हमारे घरों को उजड़ने से बचा लीजिए। हमें बर्बादी से बचा लीजिए, आपकी क्रतज्ञता हमारी सन्तानें भी नहीं भूलेंगी।

हजरत ने अपने एक खलीफा 'काजी शहाब उद्दीन' किदवई को कन्नौज भेज दिया। उन्होंने लोगों से कहा कि देखो मैं तुम लोगों को परेशानी से बचालूँगा। मैं तुम्हारे लिए

अपने रब से दुआ करूँगा, किन्तु मेरी शर्त यह है कि बाद में तुम लोग स्वेच्छा से इस्लाम धर्म को अपना लेना, क्योंकि यही धम्र तुम्हें नर्क की अगनी से झुलसने से बचा सकता है। ईश्वर तो एक है कोई दूसरा ईश्वर नहीं होसकता। कुछ लोगों ने कहा कि आपकी यह शर्त मंजूर है किन्तु हमारी शर्त यह है कि 40 दिन तक कोई भी मृत्यु न हो।

इसके बाद काजी शहाब उद्दीन किदवई कन्नौज गये और शहर के एक किनारे खड़े होकर शहर वासियों के लिए खुदा से प्रार्थना की जिसके फलस्वरूप शहर से आग का एक गोला जैसा उठा जिसे काजी साहब ने निगल लिया और अपने निवास मकनपुर शरीफ वापस चले आये।

उधर कन्नौज में 39 दिन गुज़र गये कोई व्यक्ति मरा नहीं तो लोगों ने एक स्थान पर जमा होकर पंचायत की अब तक शहर में कोई मृत्यु नहीं हुई है। अतः कल का दिन शेष है यदि कल भी कोई न मरा तो हमें इस्लाम धर्म स्वीकार करना होगा तभी कुछ लोगों ने यह कहा कि 'भीका और गोपाल' जो अति बुद्धिमान है उनके पास चलें। जब लोगों ने 'भीका और गोपाल' को समस्या से अवगत कराया तो उन्होंने पूछा कि तुम लोगों ने कहा कि अभी एक दिन का समय शेष है। अतः हम लोग किसी एक वृद्ध को मारकर उनके पास ले जायें और कह दें कि 40 दिन में मर गया। अतः अब हम लोग आपके धर्म को स्वीकार नहीं करेंगे।

इसको सुनकर 'भीका और गोपाल' ने कहा कि जो तुम्हारे प्रकोप को निगल सकता है। वह थूक भी तो सकता है फिर तुम क्या करोगे ? इस टिप्पणी पर सभी चुप हो गये तब 'भीका और गोपाल' ने सर्व प्रथम इस्लाम धर्म को स्वीकार करने का निर्णय लिया और फिर देखते ही देखते शहर में चारों ओर 'लाइलाहा इल्ललल्लाहो मुहम्मदुर्रसूलु ल्लाहे की ध्वनियॉ गूँजने

लगी तथा लोग हजरत मदार साहब की सेवा में उपस्थित होने लगे।

इसके कुछ समय बाद आपने जौनपुर जाने के लिए कुछ साथियों से कहा और जौनपुर के लिए मकनपुर शरीफ से प्रस्थान किया।

हाशिया :–हुजूर मदार–ए–पाक ने बादशाह इब्राहीम शर्की को मकनपुर शरीफ आने से रोका था क्योंकि जब आप स्वयं किसी स्थान के लिए प्रस्थान करते तो मार्ग में आने वाली प्रत्येक आबादी में कुछ समय के लिए ठहरते थे। जिससे लोगों के दुःख दूर हो जायें और उनको इस्लाम की वास्तविक शिक्षा तथा विशेषताओं का भी ज्ञान प्राप्त हो जाये। अतः आप अधिकांश समय यात्रा करते थे।

हाशिया– हजरत मखदूम अशरफ जहाँगीर समनानी कछौछवी रजि0 हुजूर मदार–ए–पाक के साथ लगभग 12 वर्ष तक रहें। आपने जब अपना अन्तिम हज किया तो हजरत आपके साथ थे जो रुम तक साथ रहे। फिर दोनों का रास्ता बदल गया।

रुम में हजरत मदार साहब ने हजरत मखदूम अशरफ को खिर्क–ए–मुहब्बत अता किया तथा दुआ बिशमुख के साथ–2 निस्बत–ए–उवैसिया भी प्रदान की। हजरत को कई प्रकार से निस्बत–ए–मदारिया प्राप्त है (मदारी सिलसिले से सम्बन्ध) पहली निस्बत निस्बत–ए–उवैसिया तथा खिर्क–ए–मुहब्बत है। दूसरी निस्बत यह है कि हजरत मखदूम अशरफ जहाँगीर समनानी कछौछवी को हजरत मखदूम जहाँनिया जहाँगश्त ने और जहाँगश्त को हजरत मदार साहब ने खिलाफत दी थी।

नोट – हजरत मखदूम जहाँनियाँ जहाँगश्त का मजार पाक औच शरीफ पाकिस्तान में है जिसके दर्शन पुस्तक के लेखक ने किये हैं।

हाशिया– हुजूर मदारे पाक के चिल्ले (साधन) के अनेकों चिन्ह ऐसे पाये जाते हैं जिनकी किताबों में चर्चा नहीं मिलती किन्तु लोगों में यह प्रमुख दर्शन क्षेत्र श्रद्धा भाव से देखे जाते हैं।

हिमालय पर्वत की श्रंखलाओं जैसे–मदारिया पहाड़ विन्ध्याचल की चोटियों पर और किनारों पर जैसे–विजयपुरा इत्यादि मैदानी क्षेत्रों के वनों जैसे इलाहाबाद के पास शाहपुरा जौनपुर, प्रतापगढ़, वाराणसी आदि में 'हजरत मीठे मदार का दयार' एक मदारिया केन्द्र के रूप में जाना जाता है। मऊ और आजमगढ़ के मध्य 'दरगाह शरीफ' नामक गाँव जहाँ हजरत अहमद बादिया पा का मजार प्रसिद्ध है। मदारिया सिलसिले का प्रमुख केन्द्र था।

उपरोक्त के अतिरिक्त अनेकों शहर, कस्बे, गाँवों आदि में आपके पहुँचने का सत्यापन मिलता है।

60

राजगीर में फैज़ान–ए–कुत्बुलमदार

सैररूलमदार के पेज 40 पर लखक जहीर उद्दीन सहसवानी कादिरी ने लिखा है कि हुजूर मदारे –आजम दीन का प्रचार करते हुए काल्पी गये तो रास्ते में जब राजगीर से आपका तख्त उड़ता हुआ निकला तब हजरत मखदूम रह0 एक दीवार पर पधारे थे। जब इन्होंने हजरत मदार साहब कोदेखा तो दीवार से कहा कि शहंशाह–ए–औलिया, कुत्बुल अक्ताब हुजूर मदारल आलमीन का तख्त आता है तू उनके स्वागत के लिए दस कदम चल। इस पर दीवार आपकी ही ओर बढ़ गयी। जब हजरत मखदूम हजरत मदार साहब के समीप पहुँचे तो उन्होंने एक प्याले में पानी पेश किया। हजरत मदार साहब मुस्कराये और अपनी

मुसललाह शरीफ जिस पर मदार पाक ने नमाज़ें अदाकीं, मुरछल, पंखा, शाहजंहानी चादर, आलमगीरी चादर, शफिया कलस जिसको उतारकर सोने का कलस मकन सरबाज़ ने चढ़ाया, शोरूम मकनपुर शरीफ
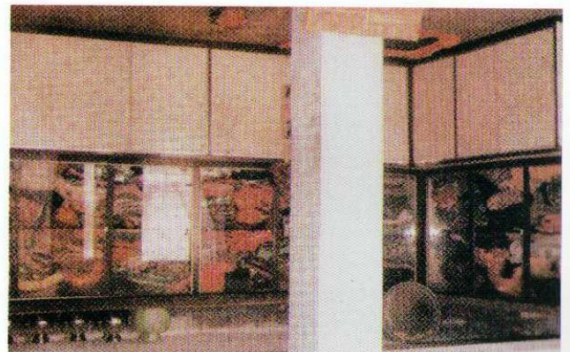
शोरूम खानक़ाह आलिया, मकनपुर शरीफ।

कलाई को हलका सा झटका दिया। आपकी आस्तीन से गुलाब का फूल गिरा जिससे हजरत मखदूम संतुष्ट हो गये।

जब आप काल्पी पहुँचे तो काल्पी में कादिरशाह की सत्ता समाप्त हो गयी और होशंगाबाद का बादशाह काल्पी पर कब्जा कर चुका था। कादिरशाह और सिराजउद्दीन सोख्ता का किस्सा जन–जन की जबान पर था। जब लोगों को आपके आने का समाचार प्राप्त हुआ तो लाखों लोग आपकी सेवा में आना प्रारम्भ हो गये। आप अपनी कुटिया से बाहर आते चेहरे से एक या दो नकाब उठाते तो लोग सज्दे में गिर कर बेहोश हो जाते और जब होश में आते तो पढ़ लेते लाइलाह इल्लतलाहो मुहम्मददुर्रसुलुल्लाहे नोट–हजरत मुखदूम ने पानी प्रस्तुत किया उद्देश्य था कि पृथ्वी पर वलियों की कमी नहीं है, तब फूल को पानी में गिराकर हुजूर ने इशारा किया कि मैं ऐसे हूँ जैसे–पानी में फूल।

61
काजी सय्यद सद्रुद्दीन

हजरत काजी स0सद्रउद्दीन जौनपुर के प्रसिद्ध विद्वान थे। पिता सय्यद रुकन रुक़न उद्दीन प्रारम्भ में दिल्ली में रहते थे। हजरत ने जब शिक्षापूर्ण कर ली तो पिता के स्थान पर शैक्षिक कार्यों में लग गये किन्तु खाली समय में तसव्वुफ की किताबें पढ़ते थे। एक रात उन्होंने स्वप्न देखा कि एक बुजुर्ग जिनके मुख पर तेज की छटा फूटी पड़ती है आये और पठन–पाठन के कार्यालय को नष्ट करा दिया और सामने बैठकर मुँह से मुँह मिलाया, पूरे शरीर पर हाथ फेर दिया फलतः सारे कपड़े यहाँ तक कि टोपी भी जल गयी। यह डरावना स्वप्न देखकर काजी साहब जाग गये और बडे परेशान हुए। कुछ ताबीर (स्वप्नफल) न समझ आयी तो

एक सन्त हजरत कालूशाह की सेवा में गये। हज़रत कालूशाह चर्चित वली थे। उन्होंने काजी जी को देखते ही कहा आपके स्वप्न की ताबीर यह है कि हजरत मदार साहब काल्पी में तुम्हारे प्रतीक्षारत हैं। बस फिर क्या था तुरन्त काल्पी की ओर चल दिये। जब हजरत काजी सद्रउद्दीन ब मदार साहब की सेवा में पहुँचे तो आप हजरत मदार साहब ने अपने चेहरे से नकाब उठा दी। फलतः उपस्थित लोग और काजी साहब गिरकर बेहोश हो गये। जब होश में लोग आये तो आपने काजी साहब से कहा पहले जो विद्या प्राप्त की है उसको दिल से निकाल दो। काजी साहब ने कहा कि यह कैसे सम्भव हो सकता है। आपने कहा कि कल्मे–ए–पाक के 'ला' से तमाम मालूमात एक द्वेष, घमण्ड इत्यादि सब दूर हो जाते हैं। कुछ दिन इसको नियमित पढ़ते रहो सब ठीक हो जायेगा। फिर काजी साहब ने ऐसा ही किया। फलस्वरूप उनकी दुनिया ही बदल गयी। फिर एक दिन हुजरे (कमरे) में बिठाकर इल्क़ा–ए–निस्तब (मुरीद) किया जिससे तजल्लिए इलाही का जुहूर प्रारम्भ हो गया। उसके बाद चिल्ले (तपस्या) करने का ढंग सिखाया और 40 दिन के लिए चिल्ले में बिठा दिया। जब चिल्ला पूरा हो गया तो उनके अन्दर वास्तविक ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित हो चुकी थी और संसार के प्रति वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया। हर समय ईश्वर की आराधना का ध्यान रहता।

62
हुजूर कुत्बुल मदार का जौनपुर आगमन

काल्पी से हुजूर मदार–ए–पाक काल्पी से जौनपुर आये। आपके आगमन का समाचार सुनकर बादशाह अपने सभी विशिष्ट नागरिकों एवं शासन के सभी प्रमुख व्यक्तियों के साथ आपकी सेवा में उपस्थित हुआ। लोगों में ईद की जैसी खुशी थी, हर समय लोगों की भीड़ आपके चारों ओर लगी रहती थी। हर समय लोग आपकी सेवा में उपस्थित रहते थे।

हाशिया–सम्भवतः सन् 95–96 में मैंने एक किताब देखी थी जिसमें लिखा था कि काल्पी शरीफ़ में एक पत्थर का सिंह मदार चिल्ले पर यूँ ही पड़ा रहता था। उसे यूँ ही देखता हुआ चला जाता था। एक दिन कुछ अराजक तत्वों ने अपने धर्म का चिह्न मानते हुए चिल्ले से शेर की मूर्ति उठाने का प्लान बनाया और उसको उठाने के लिए रात के अंधेरे में ट्रेक्टर के द्वारा उसे उठाने चले गये। जैसे ही ये लोग उसे सिंह के पास पहुँचे क्या देखते हैं कि पत्थर का शेर वास्तविक सिंह होकर उस पर दहाड़ रहा है और उन पर आक्रमण कर देने के लिए छलांग लगाने वाला है। अतः ये सभी लोग ट्रेक्टर छोड़कर समीप के गाँव में पहुँचकर अपनी जान बचायी। गाँव वासियों ने जब यह सब सुना तो वे उसे झूँठ मानते हुए उनके साथ शेर को उठाने आये। परन्तु शेर ने उनको दोबारा दौड़ा लिया।

आज भी यह शेर मदार चिल्ले पर मौजूद है तथा लोगों में उसके प्रति श्रद्धाभाव पहले से अधिक हो गया है।

नोट– इस प्रकार का समाचार कानपुर से प्रकाशित हिन्दी दैनिक अमर उजाला में भी प्रकाशित हुआ था। (अनुवादक)

63
हुजूर कुत्बुल मदार से अजमल अजमली का फैजयाब होना

जौनपुर में उस समय अजमल अजमली एक बड़े बुजुर्ग और 'इल्मुल अन्साब' के दिग्गज आलिम (विद्वान) थे। इन्होने 'अवारिफल मुआरिक ' हजरत मदार साहब से पढ़ी थी। यह सय्यद अशरफ जहांगीर समनानी से भी फैजयाव हुए थे। बादशाह इब्राहीम शर्की के शासन काल में यह आलिमुलउलमा' तथा अफजलुलफुज्ला उपस्थितियों से विभूषित हुए थे। किताबों में लिखा है कि जब आप उपरोक्त पुस्तक की शिक्षा ग्रहण करते थे। तब उन दिनों अपने कमरे की दरवाजा बन्द रखते तथा अल्पकिक रोया करते थे। जब यह किबाब पढ़ चुके तो अपने 'फुसूसुल हिकम' किताब को पढ़ाने का आग्रह किया। जिस पर सरकार मदार साहब ने कहा कि 'रूहानी इल्म' अध्ययन से प्राप्त नहीं हो सकता है। यह तो बुजुर्गों से सीनाब सीना प्राप्त होता है। इसके बाद आपको सरकार मदार ने 'निस्बत मदारिया' से नवाज दिया। आप इतने चमत्कारी थे कि मिट्टी से अल्पसिंह बना देते थे। आपकी मजार जौनपुर के मुहल्ले सिपाह में है। जब आप जौनपुर से रवाना हुए थे तो उस समय लोगों का जो हाल था उसके विषय में कुछ लिख पाना कलम की शक्ति के बाहर है। हर व्यक्ति दुःखी और उदास था, स्वयं सुल्तान इब्राहीम शर्की ने आपको विदा किया। कुछ लोग आपके साथ मकनपुर शरीफ आये और सदैव के लिए आपकी सेवा हेतु रूक गये।

64
जादूगरों को इस्लाम की दावत

जब आप मकनपुर शरीफ को चले तब रास्ते में एक ऐसा गांव मिला जहां के अधिकांश लोग जादूगर थे। वे जादू द्वारा लोगों को बुला देते, नेत्रहीन बना देते थे। आप गांव के बाहर रूक गये ताकि इन लोगों को इनकी ऐसी अमानुषिक क्रिया से रोके जिससे वे साधारण जनता को प्रकोप का निशाना न बनाये। अतः आपने लोगों की इस्लाम की शिक्षा से अवगत कराया। लोगों ने आप पर जादू करना प्रारम्भ कर दिया किन्तु इन सबका आप पर कोई भी प्रभाव. नहीं पड़ा। जब जादूगरों की सारी कलायें, निकायें विफल हो गयी तो उन्होंने समझ लिया कि अब इनसे उलझना व्यर्थ ही नहीं वरन् विनाशकारी भी सिद्ध हो सकता है। और आकर आपसे क्षमा याचना करने लगे। हुजूर ने सबको क्षमा करते हुए इस्लाम में दाखिल किया और कल्मा पढ़ाया तथा अपने कुछ चेलों को इस्लामिक शिक्षा देने के लिए छोड़ दिया।

65
एक स्त्री की विनती

'तारीखे सलातीने शर्क़िया में लिखा है कि एक दिन एक स्त्री आपकी सेवा में आयी और रो–रो कर कहने लगी कि हुजूर बड़ी मन्नतों मुरादों के बाद मेरे आंगन में एक फूल खिला था जो कि वह भी मुझे सदैव के लिए छोड़ कर परलोक सिधार गया।

हमारी दुनियाँ उजड़ गयी अब सरकार कुछ दया कर दें ताकि मेरे घर में भी एक दीपक जलता रहे। कृपया हमारे लिए एक बच्चे की दुआ कर दें यह गोद भी भर जाये मेरा बच्चा जीवित हो जाये। आपकी दुआ से मेरे ह्रदय का संसार फिर से बस जायेगा।

हजरत मदार साहब औरत का यह हाल देखकर दुःखी हुए। आपने अपनी कृपा से एवं दयालु की वर्षा की और दुआ की। चूँकि आप नबियों के वारिस तथा अपने समय के 'मसीह' थे अतः आप लाश के पास पहुँचे और कहा 'कुम–बेइज्निल लाह' । इतना कहते ही लड़का कल्मा पढ़ता हुआ उठ बैठा परन्तु उसने विनती की कि हुजूर संसार के सुख में कोई भलाई नहीं है परलोक का सुख ही वास्तविक सुख है अतः आप मुझे वापस वहीं भेज दें।

फिर आप कन्नौज आये जहाँ आपने मखदूम जहाँनियां जहाँगश्त' के खिलाफत से नवाजा। और कुछ समय बाद आप मकनपुर शरीफ वापस आ गये।

हाशिया :– 'रूहानियत के ताजदार' के पेज 109 पर श्री मुहम्मद मुस्तहसन साहब तथा 'तज्किर–ए–औलिया–ए–हिन्द व पाक में अख्तर देहलवी के पेज 472 पर लिखा है कि सूफिया की किताबों से सिद्ध है कि हजरत मख़दूम जहाँ नियाँ जहां गश्त को 'खिके–ए–खिलाफत हज़रत शाहबदीउद्दीन मदार से भी प्राप्त हुआ है। इसके सिवा 'जुल्फिकार–ए–वदी में 'तज़किरतुल फुकरा' का उद्वरण है कि कन्नौज शहर में हुजूर मदारे पाक ने हज़रत मखदूम जहाँनियाँ जहां गश्त को खिलाफत से नवाज़ा है।

नोट : कन्नोज में मख़दूम जहानियाँ सानी हैं। अनुवादक

66
पलराय पर आपकी कृपा

कन्नौज के पास अमऊ नामक गांव में एक व्यक्ति पलराय के नाम का रहता था। जो कि निःसंतान था। जब उसको हज़रत के आने का समाचार प्राप्त हुआ। तो उसको भी औरों की तरह खुशी हुई कि चलो मेरी भी दुनियां में खुशियों की बहार आ जायेगी। वह आपकी सेवा में आकर विनती करने लगा कि हुजूर आपने लाखों मंगताओं की झोली भरी है। सहस्रों की आपने मनोकामना पूरी की है। हुजूर आप हम पर भी दया करें। हज़रत मदार साहब ने बलराम के लिए दुआ की।

कुछ समय के बाद बलराम के यहां एक अनोखे बच्चे ने जन्म लिया। इसके न तो हाथ थे, न पांव बल्कि एक ऐसा टुकड़ा था जो कि व्यर्थ प्रतीत होता था। इसको लेकर बलराम आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और विनती की कि सरकार यह कैसा बच्चा है इसके शरीर का कोई भी अंग नहीं है। सरकार ने इस मांस के टुकड़े के समीप मंगाकर ध्यान से देखा। आपके देखते ही देखते गोश्त के टुकड़े में हाथ, पांव, सिर बन गया और बच्चा सांसें लेने लगा।

हज़रत मदार साहब की यह करामत देख कर पलराय अपनी पत्नी सहित मुसलमान हो गया। हाशिया–पलराय के पुत्र का नाम 'आलराय' था जो हिन्दी भाषा का बड़ा कवि हुआ है। आल राय ने हुजूर की शान में बहुत सी कवितायें लिखी हैं। इन्हीं में एक कविता जिसका मुखड़ा 'दो जग या शाह मदार कहियो' अधिकतर इतिहासकारों ने लिखी है। बलराम की बारह पीढ़ियों

तक संतानें हुई बारहवीं पीढ़ी के 'मदार राय' निःसंतान हुए। इन्होंने सरकार के मज़ार पर आकर दुआ की कि हुजूर मेरे पूर्वज आपकी दुआ से संतान वाले हुए हैं। हुजूर मैं गुलाम–ए–मदार क्यूँ निःसंतान रह सकता हूँ। मुझ पर भी कृपा कीजिए। इस विनती के बाद 'हश्मत राय' तथा जोत राय' नामक दो पुत्र 'मदार राय' के हुए जिनसे आज भी नस्ल चल रही हैं।

67
ईसन नदी

एक दिन हुजूर मदार पाक ने अपने एक खलीफा 'यासीन शाह' को पानी लाने को कहा। हजरत यासीन शाह बड़े चमत्कारी, विद्वान बुजुर्ग थे पानी लेने गये किन्तु पानी कहीं नहीं मिला तब वापस आकर विनती की कि हुजूर यहाँ पानी प्राप्त नहीं है। फिर हज़रत मदार साहब ने अपना 'असा (हाथ में पकड़ने की छड़ी) देकर फरमाया कि जाओ पश्चिम से पूर्व को एक लकीर खींच देना तुम को पानी मिल जायेगा।

हजरत यासीन शाह गये और एक लकीर खींच दी। जिससे एक नदी बहने लगी। यही नदी आज 'ईसन नदी' के नाम से जानी जाती है।

नोट – इस नदी को पहले 'यासीन नदी' कहते थे जो कालान्तर में ईसन नदी के नाम से विख्यात हुई। इस नदी के पानी में खुदा–ए–पाक ने कई गुण दिये हैं। लोगों में नदी के प्रति अपार श्रद्धा है। बीमार लोग इस में नहाते हैं और इसका जल ग्रहण करते हैं तो वे स्वस्थ हो जाते हैं। लोग इसके पानी को प्रसाद के रूप में अपने–अपने घर ले जाते हैं।

68
मावर शरीफ में हुजूर मदार पाक का फैज

मकनपुर शरीफ से कोई 60–65 किमी. दूर एक गांव 'मावर है। जहाँ एक बड़े प्रकाण्ड विद्वान हज़रत काजी मुतहर कल्ला शेर आये थे। जब उनको मालूम हुआ मकनपुर शरीफ में एक ऐसे दिग्गज विद्वान सूफी पधारे हैं जो न खाते हैं, न पीते हैं और न ही वस्त्र बदलते हैं। तो उनको आपसे मिलने की इच्छा हुई। काज़ी साहब अपने साथ 200 शिष्यों को जो उनके पास शिक्षा ग्रहण कर रहे थे लेकर चल दिये।

इधर हज़रत मदार साहब जान गये कि एक बड़ा विद्वान (आलिम) उनसे मिलने के लिए आ रहा है तो उन्होंने अपने सभी मुरीदों खलीफाओं को बुलाकर कहा कि देखो यहाँ एक बड़े आलिम आ रहे हैं उनकी बात में कोई न बोले और न ही उनको रोकना उनको हर प्रकार की छूट है।

जब काजी मुतहर कल्ला शेर आपके पास आये तो आप ने बड़े प्यार से उनको अपने पास बिठाया। एक तरफ काज़ी साहब को अपने ज्ञान का घमण्ड था तो दूसरी ओर सरकार के पास हुजूर नबी–ए–करीम स0 का दिया हुआ दयालु एवं मृदालु स्वभाव था।

कुछ देर के बाद काज़ी साहब ने वहदतुल–वुजूद (ईश्वर का अस्तित्व) पर चर्चा छेड़ दी जो कि एक सप्ताह तक चली अन्त मे काज़ी साहब हार गये। फिर उन्होंने पूछ कि आप भोजन क्यों नहीं करते हैं हुजूर ने फरमाया 'अददुनिया यौमुन व अना फीहा सौमुन'। संसार एक दिन है और मैं इसमें वृत रखे हूँ।

उन्होंने पूछा कि, फिर आप कैसे इफ़्तार करते हैं, सहरी कब करते हैं ? इस पर हजरत मदार साहब को क्रोध आ गया और काज़ी की गर्दन पकड़कर बगल में दाब ली और कहा देख ! (इतिहासकार लिखते हैं कि यह रात्रि का समय था) काज़ी साहब को बड़ा अचम्भा हुआ कि वह सूर्य को रात्रि के समय में देख रहे हैं।

अब तो काजी साहब का विचार तथा स्वभाव आचार सब कुछ बदल गया।

हज़रत मदार साहब ने फरमाया कि सूर्य मेरी नज़रों से अदृश्य कभी नहीं होता है। फिर अपने मुख पर पड़ी नक़ाब उठा दी। आप को मुख की तेज, छटा देखकर काज़ी साहब बेहोश (मूर्छित) हो गये और तीन दिन–रात इसी स्थिति में गुजर गये।

फिर आपने अपने ख़लीफा शाह आला नागोरी को आज्ञा दी कि मेरे वुजू से बचे हुए पानी को पानी में डाल दो और इन सब पर छींटा डालो।

हजरत शाह आला नागोरी ने ऐसा ही किया तब सभी होश में आये। सभी को शाह आला हुजूर के समक्ष लाये तब आपने सभी को अपने जमाल से नवाज़ कर सय्यद अहमद बादिया पा और सय्यद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती के पास सतसंग के लिए भेज दिया। फिर यह सभी लोग आप के मुरीद हो गये।

यही वह काज़ी मुतहर कल्ला शेर हैं जिनसे मदारिया सिलसिले की 'गिरोहे आशिकान' शाखा का शुभारम्भ हुआ।

हाशिया – काज़ी मुतहर कल्ला शेर आपके आदरवश कभी आपकी तरफ पीठ नहीं करते थे। यहाँ तक कि जब मावर शरीफ वापस जाते तो उल्टे चलते थे। किताबों में लिखा है कि काज़ी साहब इतना बड़ा पुस्तक भण्डार रखते थे कि जब वे हुजूर

साहब के पास किताबें लाये तो वे दो सौ ऊँटों पर लदी थीं।

इनको हुजूर मदार साहब से अत्यधिक प्रेम था इसी कारण इसके आशिक 'उपनाम' दिया गया तथा गरोहे आशिकान के लोग आपके अनुसरणानुसार रौजे की ओर पीठ नहीं करते हैं।

गरोहे आशिकान में बहुत से बड़े–बड़े मलँग प्रकाण्ड विद्वान हुए हैं। जैसे अब्दुल ग़फूर उर्फ बाबा कपूर 'मजजूब' ग्वालियरी जिनका चर्चा हज़रत अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी ने किया है।

हज़रत हिसामउद्दीन सलामती रह0 किताब 'तोहफतुल अबरारफी मनाकिब–ए– कुत्बुल मदार' में लिखा है कि जब आप अपने हुजरे (कमरे) में इबादत–रियाज़त (ध्यान, तपस्या) करते तो किसी को अन्दर आने की इजाज़त नहीं होती थी क्योंकि उस समय आप अपना नकाब हटा देते थे जिन्नातों के बादशाह इमादुल मुल्क' आपके दरबान का कार्य करते थे।

हज़रत मौलाना हिसामउद्दीन सलामती आपसे मिलने के लिए बहुत व्याकुल रहा करते थे। आपने बहुत लम्बी यात्रा की ताकि हज़रत मदार साहब के दर्शन कर सकें। जब आपने चाहा कि अन्दर हुजरे में जाकर हजरत के दर्शन करें तब आपको हज़रत इमादुल मुल्क ने आपको रोकते हुए कहा कि इस समय हुज़ूर बेनकाब होते हैं। अतः यह समय मुलाकात का नहीं है। हज़रत हिसामउद्दीन ने कहा कि मैं विरह की अग्नि में भस्म हुआ जाता हूँ मैं एक पल भी दर्शन के बगैर नहीं रह सकता और लाख मना किये जाने पर भी हुजरे में चले गये। और देखा कि वास्तव में हुज़ूर बेनकाब तशरीफ रखते हैं। हिसामउद्दीन को देखकर हज़रत मदार साहब ने फरमाया कि 'हेच बे अदबे बखुदा न रसीद' (बेअदब खुदा तक नहीं पहुंच सकता)

और हिसामुद्दीन को ओर देखा तो हिसामुदीन' के शरीर में जलन पड़ने लगी तभी हिसामउद्दीन ने विनती की कि 'मन अदब कर दमे अज़ जमालुल्लाह महरूम बूदमे अक्नू कि तर्के अदब करदम बखुदा रसीदम। (यदि मैं बेअदबी न करता तो जमाले–ए–नूरे खुदा से महरूम रह जाता।'

इस उत्तर से हज़रत बहुत प्रसन्न हुए तथा फरमाया 'सलामती, सलामती, सलामती'

इसके बाद मौलाना के शरीर में 'आग समाप्त हो गयी और उनको चैन मिल गया।

इस दिन के बाद हज़रत मौलाना हिसामुद्दीन को 'सलामती' के नाम से जाना जाने लगा।

69
हर सह ख्वाजगान

हज़रत ख्वाजा सय्यद अबू मुहम्मद अरगून :– आप भाईयों में सबसे बड़े तथा हज़रत मदार साहब के उत्तराधिकारी हैं। आपसे बहुत सी करामतें देखने को मिली हैं। आपकी विशेषतायें लिखना मुश्किल हैं। आप जिस समय जिक्र (प्रवचन) करते थे तो आपके शरीर के अंगों से अजीब–अजीब ध्वनियां निकलती थी। इसी कारण से आपको हुज़ूर मदार–ए–आजम ने 'अरगून उपाधि ा दी थी। आप बहुत सुन्दर, सुशील एवं मृदालु स्वभाव के थे। आप कुरआन पाक बहुत अच्छे ढंग से पढ़ते थे। जब आप कुरआन की तिलावत करते तो पृथ्वी से आकाश तक प्रकाश की ज्वाला फूट पड़ती थी सब तरफ रोशनी–रोशनी प्रतीत होती थी। जब कभी ईसन नदी के किनारे पर तिलावत फरमाते तो जैसे

नदी ठहर जाती, हवा रूक जाती पक्षी, पशु इत्यादि सब चुप हो जाते। और आप जब तक तिलावत करते सब कुछ ठहरा–ठहरा सा रहता था।

एक दिन जब आप तिलावत फरमा रहे थे। उसी समय हज़रत शाह हामिद असफहानी रह0 पहुँच गये तो उनकी अजीब हालत हो गयी यहां तक कि मूर्छित होकर गिर गये। आपने तिलावत करने के बाद हजरत हामिद को उठाकर पूछा कि क्या हाल है। वह आपके पैरों पर गिर गये। आपने उनको सीने से लगाया तब उनको चैन मिला।

हज़रत ने उनको निस्वत–ए–मदारिया से नवाज दिया और उनकी काया पलट कर दी।

आप पढ़ चुके हैं कि ये तीनों भाई हजरत मदार साहब के भाई की सन्तानों में से हैं तथा जब सरकार इनको अपने साथ लिये तो ये किशोरावस्था में थे। अतः इनका आगे का लालन, पालन, शिक्षण इत्यादि हुज़ूर की देखरेख में हुआ था तथा अविवाहित थे।

एक दिन हज़रत काज़ी मुतहर कल्ला शेर ने आप तीनों भाईयों से कहा कि आप लोग विवाह करके ताकि हुजूर की नस्ल (वंश) बाकी रहे। तीनों कि हम अपना जीवन अपने पूर्वक सय्यदना मदारूल–आलमीन का अनुसरण करते हुए व्यतीत करना चाहते हैं। अतः हम इससंसार से दूर रहेंगे। काज़ी साहब ने कहा कि आप विवाह को संसार कहते हैं हालांकि हुजूर मदार साहब का उपदेश है, "नमी गोयम के अज़ आलम जुदा बाश।" (पूरा उपदेश – बिरादरेमन दुनिया रोज़े चन्द अस्त, आकिबतकार बाखुदा व न दस्त बेदार बाश, होशियार बाश नमी गोयम के अज़ आलम जुदा बाश व हर के कारे के वाशी बा खुदा बाश)

जब काज़ी साहब ने उपरोक्त प्रसंग को मुक्ति के रूप में प्रयोग किया तो ख्वाजा सय्यद अबू तुराब फंसूर ने कहा कि आग्रह करने का कोई लाभ नहीं। ईश्वर में लीन होने उसकी आराधना के लिए अविवाहित होना जितना लाभदायक है उतना विवाहोपरान्त नहीं हो सकता। जैसा कि कुरआन पाक में है, "या अहयोहल–लजीनः आमनू ला तुलहेकुम अमवालुकुम व ला औ–लादुकुम अन ज़िक्रिल्लाह"

जितना आग्रह किया जाता इंकार भी उतने ही जोरदार ढंग से क्या जाता। यहाँ तक कि हुजूर मदार साहब के समक्ष यह मुद्दा पहुंच गया। आपने फरमाया कि कयामत तक तुम्हारा वश चलेगा और यह बस्ती उनसे आबाद रहेगी अतः तुम लोग विवाह कर लो।

शहजादे हुजूर के सामने कुछ न बोले काज़ी महमूद के द्वारा अविवाहित जीवन व्यतीत करने की विनती की। तब सरकार ने पास बुलाकर कहा "तुम लोग अपनी आंखें बंद कर लो।" जब तीनों लोगों ने आंखें बंद की तो 'लौहे महफूज' पर अपना विवाह, संतानें एवं वंश तथा उनसे होने वाले धर्म प्रसार आदि को देखा जो कि कयामत (प्रलय) तक के लिए था।

जब आंखें खोली तो उपस्थित खलीफाओं मुरीदों आदि ने पूछा कि आपने क्या देखा। इन तीनों हज़रात ने सब कुछ बता दिया।

फिर आप तीनों का विवाह सम्पन्न हुआ। हजरत ख्वाजा अब मुहम्मद अरगून का विवाह एक दीनदार, अनुशासित, सुशील एवं शिक्षित कन्या 'जन्नत बीबी' जो कि सय्यद अहमद बिन विलायतुल्लाह की बेटी थी तथा कस्बा जत्थरा कालपी. के साथ हुआ। ख्वाजा सय्यद अबू तुराब फन्सूर का विवाह बीबी आबिदा बिन्त मलिक बुरहान बिन सालार के साथ हुआ। तथा ख्वाजा

सय्यद अबुल हसन तैफूर का विवाह सय्यदह अच्छी से हुआ।

यही वे हर सह ख्वाजगां हैं जिन्हें कनफ्से वाहिदा भी कहते हैं तथा इन्हीं की औलादों से मकनपुर शरीफ में सय्यद (आले रसूल) का एक कुनबा आबाद है। इनसे गिरोहे खादिमान जारी हुआ। तथा इस गिरोह (शाखा) से 7 उपशाखायें जारी हुई जो कि निम्न हैं :–

अरगूनी (सय्यद अबू मुहम्मद अरगून से) फन्सूरी (स० अबू तुराब फसूर से), तैफूरी (सय्यद अबुल हसन तैफूर से) सलोतरी (शाह मुहम्मद सलोवर से) सरमोरी (शाहमुहम्मद सरमोर से), शाह मुहम्मद सिकन्दर से सिकन्दरी ख्वाजा सय्यद शाह इब्न से इब्नी

70
बिसधन का जादूगर

मकनपुर शरीफ के समीप 'बिसधन' नामक गांव है जिसके लिए किताबों में लिखा है कि एक दिन ख्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफूर रह घूमते हुए बिसधन तक पहुँच गये। वहाँ उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति निर्वात (वाद) में लटका है जो कि वायु वेग से उड़ता है तथा जब चाहता है पृथ्वी पर आ जाता है एवं जिस व्यक्ति को घूर कर देख लेता वह जलने लगता था। क्षेत्रवासी उस व्यक्ति से बहुत डरते थे तथा उसके आतंक से भयभीत रहते थे। जब ख्वाजा तैफूर उधर से गुजरे तो उसने आपसे 'फकीरी' के संदर्भ में संस्कृत भाषा में एक प्रश्न पूछा उसका विचार था कि वह उसकी भाषा को जानते न होंगे अतः प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते हैं। परन्तु जब आपने संस्कृत में ही उत्तर दे दिया तो वह बहुत हैरान हुआ तथा आपके हुजूर मदार पाक के पास आया तथा

आपको देखते ही इस्लाम कुबूल कर लिया।

हाशिया – इस वाकिया को इतिहासकारों ने कई रूपों में लिखा है एक लेखक ने लिखा है कि ख्वाजा अबुल हसन तैफूर और हज़रत मदार साहब साथ-साथ थे तथा प्रश्न उत्तर मदार साहब से हुए थे।

'मदारे आज़म 'किताब में लिखा है कि जब हुजूर मदारे आजम उस गैर आबाद (निर्जन स्थान पर) जहां अब मकनपुर आबाद है। पहुंचे और मुराकिबे में थे तो आप का हिसार एक जादूगर तोड़ना चाहता था जिसको पहरेदार 'इमादुल मुल्क' ने थप्पड़ मार दिया था। जादूगर इनको देख नहीं सका जिससे वह प्रभावित होकर ईमान ले आया। बाद में यही जादूगर सफाई के कार्य को अंजाम देता था। इनका नाम खैरउद्दीन उर्फ मक्कन सरबाज़ रखा गया। इनका मज़ार शरीफ मकनपुर शरीफ के दक्षिण में हैं तथा प्रत्येक वर्ष हिन्दी महीने 'चैत्र की पहली 'सोमवार' को इनका उर्स मनाया जाता है।

71
मक्कन सरबाज़ मदारी

बुजुर्गो से सुना गया है कि मक्कन सरबाज़ मदारी हज़रत मदार साहब के खलीफ़ा तथा सिलसिलए मदारिया के बड़े बुजुर्ग हैं। उन्होंने मन्नत मानी थी कि मैं सोने का कलश सरकार के सफेद गुम्बद पर चढ़ाऊँगा जब मन्नत पूरी हो गयी तो उन्होंने अपनी जीवन भर की कमाई से सोने का कलश बनवाया और चढ़ाने के लिए लाये मार्ग में उनको डकैतों ने घेर लिया तो वह एक इमली की जड़ में छुप गये वह आपके आने के बाद बंद हो गयी और

हज़रत सय्यद अब्दुर्रहमान हाजी मलंग बाबा,
मदारी-कल्यान, मुम्बई।

शोरूम खानक़ाह आलिया की नायाब चीज़ें, मकनपुर शरीफ।

आप सुरक्षित हो गये डकैतों ने आरी से वृक्ष को काटना चाहा परन्तु वे काट नहीं संके। प्रातःकाल वे भाग गये तब आपने बाहर आये और सोने का कलश चढ़ाया।

इब्राहीम शर्की का चढ़ाया कलश आज भी शोरूम में रखा हुआ है तथा इस संदर्भ में बूढ़ी स्त्रियाँ यूँ कहती हैं कि 'सर पर आरे चले फिर भी पुकारे' दम–मदार।

72
बीबी बहोर

किताब 'गुलज़ार–ए–मदार' के पेज 136 पर लिखा है कि 'देवहा गांव' जो मकनपुर शरीफ के पास है वहां एक बड़ी विद्वान आरिफ़ा तथा करामाती औरत रहती थीं उनकी चर्चा दूर–दूर तक थी किन्तु वे पर्दा नहीं करती थीं लोग जब उससे पूछते थे तो वह कहती थी कि कोई मर्द नज़र नहीं आता तो पर्दा किस से करूँ। परन्तु जब हज़रत मदार साहब मकनपुर शरीफ आये तो उन्होंने पर्दा करना प्रारम्भ कर दिया। लोगों ने पूछा तो आपने कहा कि यहाँ पास ही में एक बुजुर्ग आरिफ 'कुत्बुल मदार' आये हैं जो कि हसनैन की औलाद हैं मुझे उनसे शर्म आती है अतः मैंने पर्दा करना प्रारम्भ कर दिया।

73
ख़्वाजा फ़न्सूर की करामत

हज़रत अब्दुर्रज़्ज़ाक बीना एक धनवान व्यक्ति के सुपुत्र थे तथा शिशु अवस्था में ही चेचक से पीड़ित हो गये रोग इतना गम्भीर था कि पूरे शरीर में घाव गड्ढे समान थे एक पैर भी जाता रहा इलाज जितना किया सब बेकार गया परन्तु दौलत के कारण शिक्षा प्राप्ति में कुछ कसर न छोड़ी खूब पढ़ा हाफ़िज भी हुए और कारी जो भी। एक बार एक हाफ़िज किरात कर रहे थे और गलत पढ़ दिया इस पर हाफ़िज़ ने अपना अपमान समझा और कहा कि ऐ अंधे तू क्या जानता है। यह बात हाफ़िज अब्दुर्रहमान को अक्सर कांटे की तरह चुभती रहती। जब आपकी सरकार मदार साहब के बारे में पता चला तो आपने अपने एक नौकर के साथ आपके दर्शन के लिए यात्रा प्रारम्भ कर दी यद्यपि अंधे और लंगड़े थे किन्तु दिल में जो आग लगी थी वह सब पर भारी थी जो आपकी बराबर हिम्मत बंधाती रही यहां तक कि एक जंगल में रास्ता भटक गये और फिर हज़रत खिज्र अलै0 ने आपको मकनपुर शरीफ तक एक पल में पहुँचा दिया। किन्तु आप हिन्दुस्तानी भाषा जानते न थे। एक व्यक्ति ने आपके मुख से 'कुतबुल मदार' सुना तो दरबार तक पहुंचा दिया। जहाँ ख़्वाज़ा फन्सूर ने एक ख़ादिम को आपका हुलिया बताकर बुलवाया। जब हाफिज साहब आपके पास आये तो आप जो पांच सूरह पढ़ रहे थे वही हाफिज साहब को दे दिया और कहा कि इसमें एराब (जेर–जबर पेश) लगा दो हाफ़िज साहब सोच में डूब गये तो पुनः ख्वाज़ा ने कहा कि यह कलम दवात मौजूद है इसमें एराब लगाओ तब क्षण मात्र में ही दोनों नेत्रों में ज्योति आ गयी और वे आपके कदमों पर गिर गये।

पहले हाफ़िज अब्दुर्रहमान ख्वाजा को ही मदार साहब समझ बैठे परन्तु लंगर खाने में ज्ञात हुआ कि आप उनके जानशीनों में से हैं। फिर आपको हज़रत मदार साहब का दीदार कराया गया।

आपका मजार मकनपुर शरीफ में है तथा हाफ़िज बीना के नाम से प्रख्यात हुए।

74
ख्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफ़ूर

आप ख्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफ़ूर को तैफ़ूर इसलिए कहा जाता है क्यूँकि आप मनाज़िल ए सुलूक बहुत ज़्यादा तै कर लेते थे। तैफ़ूर तेज परवाज़ कबूतर को कहते हैं।

एक बार सूखा पड़ा लोग अपने घरों, बस्तियों को छोड़ कर जाने लगे। चारों ओर भूख प्यास से मौतें होने लगी। लोग आपकी सेवामें आये और विनती की कि हुजूर इस दैवीय आपदा से बचा लें। ख्वाजा ने इनके हक में दुआ की तो बारिश होने लगी फिर से खुशहाल हो गये।

75
हज़रत मदार साहब का पर्दा करना

जब आपके देहान्त का समय आया तो आपने अपने तीनों प्रपौत्रों ख्वाजा सय्यद अबूमुहम्मद अरगून, ख्वाजा सय्यद अबूतुराब फंसूर तथा ख्वाजा सय्यद अबुल हसन तैफ़ूर को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया तथा अबू मुहम्मद अरगून के दस्तार (पगड़ी) बांधी इसपर आपके मुरीदीन व खुलफा का हाल बेहाल हो

गया तब आपने फरमाया कि मैं तुमसे पर्दा कर रहा हूँ मेरी जगह तुम इन तीनों से अपनी अपनी जरूरतें पूरी करना और हाँ मैं तुम्हारी मदद करता रहूँगा। आपने फरमाया कि कुरआन में साफ है कि "कुल्लो नफसिन जायकतुल मौत" अतः मौत से क्या डरना। "वलां तकूलूले मंय्युकतल और।" वला तहसबनन्ल लजीना" के अनुसार अल्लाह अपने खास बन्दो को मौत देकर फिर जीवन देता है' अतः तुम मुझे जब और जहाँ पुकारोगे मैं वहीं तुम्हारी फरियाद सुनूँगा।

एक मुरीद ने विनती की कि 'आप इन्तेकाल रूह' जानते हैं फिर आप किसी दूसरी और शरीर में क्यूँ नहीं आ जाते हैं। इस पर आपने फरमाया कि जानता तो हूँ परन्तु जिस शरीर में जो रूह होती है वही उसके लिए पैदा की जाती है अतः मेरा आना ठीक न होगा।

फिर फरमाया कि मेरी नमाज़ जनाज़ा मौलाना हिसामउद्दीन सलामती पढ़ायेंगे और गुस्ल व तक्फ़ीन फरिश्ते देंगे अतः तुम लोग मेरे गुस्ल के लिए पानी भर कर मेरे हुजरे में रख दो

इसके बाद रात भर कुरान पढ़ने की दिलकश आवाज़ें आती रही, हुजरे' का दरवाजा अंदर से बंद था। भोर होते-होते आपकी आत्मा परलोक सिधार गयी और फिर आपकी वसीयत के अनुसार आपकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ी गयी।

नोट - इस संदर्भ में लिखा है कि आपके 'देहान्त के समय मौलाना हिसामउद्दीन जौनपुर में थे और उनको सरकार ने स्वयं में अपने देहान्त का समय बताकर बुलाया जब आपने आकर हुजरे के दरवाजे पर दस्तक दी थी तब दरवाज़ा खुलगया।

76

हजरत मदार साहब के संदर्भ में कुछ मुहावरे और लोकोक्तियां

मदार का अर्थ ध्रुव है। मदार उस शैली को भी कहते हैं जिस पर चक्की के पाटे घूमते हैं। मदार उस तारे को कहते हैं जो सभी ग्रहों उपग्रहों नक्षत्रों को संभाले रहता है तथा जिसके चारों ओर घूमते हैं।

कुत्बुलमदार उसको कहते हैं जो वलायत का सर्वोच्च स्थान है। तथा अल्लाह के सबसे खास बन्दो दोस्तो में होता है। तथा खुदा का हर हुक्म रसूले-पाक से इनको सबसे पहले पहुंचता है।

आपके संदर्भ में कुछ खास-2 मुहावरे और लोकोक्तियां निम्न हैं -

बाद जुमा जो कीजे कार, उसके जामिन शाह मदार
(नमाज़ जुमा के बाद ही कोई कार्य करना चाहिए)

जय.हो मदार बाबा की ।

मेला मदार (भीड़ या मेले की ओर इशारा करके कहा जाता है।)

गंगा और मदार का क्या साथ - जब खुद से किसी को अलग करना हो तब बोलते हैं इसका अर्थ है गंगा का मार्ग एक

ही है परन्तु मदार पूरे संसार का चक्कर लगाता है।

दममदार बेड़ा पार – सिलसिले का नारा भी है तथा विजय के लिए बोला जाता है।

पैसा न कौड़ी मदारन की दौड़ी – हैसियत से बढ़कर काम करने को कहा जाता है।

मदार गये मुंडाये सुध – फुजूल खर्ची के समय कहते हैं।

आओ मेरे भोले मदार – आओ भगत के लिए बोलते हैं।

मदार के खेत में खड़ा हूँ सच कहता हूँ। कसम के लिए बोलते।

हम हों जैसे मकनपुर का मेला – हजरत नईम अता साहब की मनकबत की एक पंक्ति।

मदार की छड़ियों के उनवान से नज़्म मुसलसल का एक शेर–

गयेमदार की छड़ियों में साथ गैर के वह।

तमाम साल यह दारोमदार हमसे रहा।।

एक मशहूर शेर –

दम दम ब हर कदम हमः दम दम मदारे मा।

मा तालिबाने मुशिदे कामिल मदारे मा।।

मलंग तथा फकीरों में पढ़ा जाने वाला किता –

ताज़ा रहे हमेशा ये लशकर मदार का।

जलवा है खाक्सारों में परवर दिगार का।।

कादिर की बन्दगी में कमर बस्ता रहे मुदाम।

सत्तार नाम पाक है उस किरदिगार का।।

77
दरगाह पीर हनीफ़ मदारी बलरामपुर

838 हि० में हुजूर मदारे पाक का विसाल हुआ उसके पहले अनेकों बुजुर्गो ने क़ादिरिया चिश्तिया सिलसिलों के साथ–साथ सिलसिलय मदारिया में भी निस्बत हासिल की तथा सिलसिलए मदारिया की ख़ास दुआओं व विधाओं का ज्ञान प्राप्त किया। इन्हीं में से एक बुजुर्ग सरख़ीले मंलगान–ए–दौराँ ताजुल आ कि फीन सय्यदना मलंग पीर हनीफ मदारी भी है।

मलंग हनीफ पीर मदारी बड़े चमत्कारी बुजुर्ग थे तथा आपको बलरामपुर के मथुरा बाजार सरकार ने भेजा था। जहाँ आपका मज़ार है तथा आज भी लाखों टूटे दिलों का सहारा है। तथा यहां के कुंए का जल आज भी आस्था एवं विश्वास की परम्परा को कायम किये हुए हैं।

पीर हनीफ की जिन्दगी में ही लाखों की संख्या में लोग आपके भक्त हो चुके थे। 6 फरवरी 1928 ई० को शाहजहां ने बहराइच होते हुए इस इलाके का दौरा किया था। इस समय शाहजहां को आन्तरिक विद्रोह झेलना पड़ रहा था अतः वजीरों की राय पर बादशाह ने इसी स्थान पर अपनी गद्दी की सुरक्षा की मन्नत मानी थी। तथा बाद में मकबरा बनवाया एवं काफी जमीन भी दरगाह में दी थी।

78
पीर–हनीफ का शिज्र–ए–मुर्शिदिया

हजरत मुहमद मुस्तफा स. अ. व.

हजरत मौला अली करमल्लाहो वज्ह

हज़रत हसन बसरी रजि0

हजरत हबीब अजमी रजि0

हजरत सय्यद बदीउद्दीन जिन्दा शाहमदार रजि0

हज़रत सय्यदना पीर हनीफ मदारी रजि0

79
हजरत सय्यद अब्दुर्रहमान उर्फ बाबा मलंग मदारी

अल्लाह पाक के खास बन्दो से बहुत सी करामतें जाहिर होती हैं जिनसे लोगों को हिदायत और शान्ति प्राप्त होती है पर कुछ लोगों की यह सब भाता नहीं है और ऐसे लोगों को हर प्रकार से यातनायें पहुंचाते हैं। कुछ ऐसा ही हज़रत बाबा हाजी मलंग मदारी के साथ भी हुआ।

जब आप लोगों को इस्लाम की दावत देने से बाज़ न आये तो लोगों ने तै किया कि आग जलाकर आपको उसमें डाल दिया जाये। फिर लकड़ियों को ढेर कर आग लगायी गई और उसमें आप को डाल दिया गया। पर यह क्या आपको तो आग ने छुआ भी नहीं।

जब लोगों ने देखा कि इतनी बड़ी आग की लपटें भी आपको जला न सकी तो उनमें से अधिकाश लोग ईमान ले आये। कुछ ईमान न लाये पर आपके मददगार बन गये। फिर आप पहाड़ के और ऊपर चढ़ने लगे इस समय आपके साथ आपके पीर भाई हज़रत बख्तियावर शाह मदारी तथा सुल्तान शाह मदारी आपके साथ थे।

पहाड़ के ऊपर डाकुओं, जानवरों का कब्जा था जब आपके साथियों ने 'अल्लाहु अकबर' के नारे लगाये तो वे सब आप से जंग करने आ गये जानवरों के सिरों पर हजरत ने हाथ फेर कर सिधा लिया जो आपकी सुरक्षा में लग गये। लोगों को हैरत थी कि आपने क्षण मात्र में ही शेर चीता जैसे जानवरों को सिधा लिया और वे सब आपकी दूसरी करामत (अपनी लाठी को

पहाड़ पर मारा जिससे एक चश्मा उबल आया और पानी का तालाब बन गया)

इस पर वहाँ के लोग ईमान ले आये आपको आपके मामूँ शेख हबीब ने जो मिट्टी दी थी उसकी तुलना आपने पहाड़ की मिट्टी से की तथा फिर वही हमेशा के लिए ठहर गये।

सुल्तान इब्राहीम शाह 'आदिल सानी स. 1047 हि. के दौर में हजरत अब्दुर्रहमान यमनी उर्फ हाजी बाबा मलंग जब मकनपुर से को कन के उस स्थान पर पहुँचे जहां आपका मजार है। यहां के लोगों ने जो आपको यातनायें पहुंचाई थीं का ज्ञान जब आदिल सानी को हुआ तो उसने आपकी मदद के लिए फौज की एक टुकड़ी भेजी जिन्होंने आपके दुश्मनों से आपकी रक्षा की। तहसील कार्यालय थाना के सर्वे नं0 1134 के अनुसार आदिल शाह के शासन काल में पहाड़ तथा आसपास के क्षेत्रों को आपकी भेंट किया गया था। ताकि आप सुकून से रह सकें। इसी प्रकार अग्रेजी दौर में भी यह सब कायम था तथा इलाके की कुल जमीन का 12–1/2 बीघा वर्तमान महाराष्ट्र सरकार ने भी दरगाह के नाम बहाल रखा है।

पहाड़ पर रहने वाले लोग अपने को बौद्धिष्ट कहते थे। परन्तु गौतम बुद्ध की शिक्षा पर कोई ध्यान नहीं देते थे। डाकू अपने सरदार को देवा अज़लम कहते थे जो कि बहुत बड़ा जादूगर था तथा आपको पसन्द नहीं करता था तथा आपको यातनायें पहुंचाता था। उसने आपको भगाने की खातिर अपनी पुत्री को भेजा जो कि बहुत चालाक थी ताकि आपका पहाड़ पर रहना मुश्किल कर दिया जाये। परन्तु जब वह आपके पास पहुंची तो वह आपकी करामत देखकर मुसलमान हो गयी। आपने उसका नाम फातिमा रखा तथा इस्लामी शिक्षा का प्रबन्ध किया।

जब माता–पिता को यह समाचार प्राप्त हुआ तो वे गुस्से से पागल हो उठे परन्तु वे कर भी क्या सकते थे उन्होंने आकर बाबा की सेवा में अपार धन दौलत के बदले बेटी की वापिसी की विनती की

पर लड़की जो सब कुछ सुन रही थी ने माँ बाप के साथ जाने से इंकार कर दिया।

इस पर उन लोगों ने बाबा और साथियो से जंग प्रारम्भ कर दी जिसमें बाबा के खास सुल्तान शाह तथा पांच अन्य मुरीद भी शहीद हो गये जिनके मजार आज भी पहाड़ पर हैं।

इन शहीदों के लिए बाबा ने फरमाया कि अगर लोग कुछ पाना चाहें तो पहले इन के मजार पर फातिहा पढ़ें।

80
जूनागढ़ में हुजूर मदार–ए–आज़म का ठहरना

जब सरकार सय्यद बदीउद्दीन कुतुबुल मदार रजि. जूनागढ़ पहुंचे तो सय्यद मुहम्मद जमालउद्दीन जानेमन जन्नती को गिरनार पहाड़ पर आदमखोरों ने खा लिया। हुजूर को जब मालूम हुआ तो आप उस जगह पहुँचे और आवाज दी 'जान–ए–मन' कहां हो उन्होंने कहा – हुजूर सब के पेटों में हूँ आपने फरमाया आ जाओ पूछा किधर से आऊँ कहा सरके रास्ते से आ जाओ इस पर गोश्त के टुकड़े सिरों से बाहर आने लगे और फिर आपका ढांचा तैयार होकर जीवित हो गया।

पहाड़ पर आज भी आपके पांव के चिन्ह मौजूद हैं।

81

हजरत हाजी बाबा मलंग मदारी रह का शिजर–ए–मुर्शिदिया

हजरत मुहमद मुस्तफा स. अ. व.

हजरत मौला अली करमल्लाहो वज्ह

हज़रत हसन बसरी रजि0

हजरत हबीब अजमी रजि0

हजरत सय्यद बदीउद्दीन जिन्दा शाहमदार रजि0

हजरत सय्यद जमालुद्दीन जानेमन जन्नती रजि0

हजरत सय्यद शाह इलाह दाद आतिशी रहमतुल्लाह अलैह

हजरत शाह शहबाज रह0

हजरत शाह पीर माई पूत रह0

हजरत अब्दुर्रहमान हाजी बाबा मलंग मदारी रह0

नोट –हाजी मलंग साहब के सम्पूर्ण हालात जानने के लिए मिलें या लिखें।

मौ0.कारी सै0.महज़र मकनपुर शरीफ
कानपुर–यू0पी0
पिन–209202

गिर्नार पहाड़ी पर सरकात मदार पाक के क़दमों के निशान।
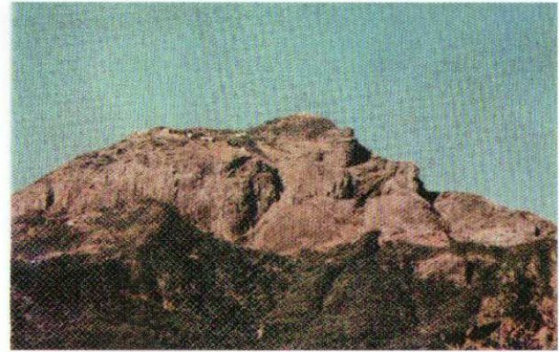
गिर्नार पहाड़ी पर सरकात मदार पाक के क़दमों के निशान। जो उलट कर देखें तो चेहरा नज़र आता है।

82

शिज्र–ए–जदिदया सय्यद महजर अली

हजरत मुहम्मद मुस्तफा स0अ0व0
हजरत मौलाए कायनात अली करमल्लाहो वज्ह
हज़रत फातिमा जहरा रजि0
हज़रत सय्यद दुश्शोहदा इमाम हुसैन रजि0
हज़रत सय्यद इमाम जैनुल आविदीन रजि0
हज़रत सय्यद इमाम मुहम्मद बाकर रजि0
हज़रत सय्यद इमाम जाफर सादिक रजि0
हज़रत सय्यद इमाम इस्माईल रजि0
हज़रत इमाम मुहम्मद रजि0
हज़रत सय्यद इस्माईल सानी रजि0
हज़रत सय्यद जहीरउद्दीन रजि0
हज़रत सय्यद बहाउद्दीन रजि0
हज़रत सय्यद काजी किदवतुद्दीन अली हलबी रजि0
हज़रत सय्यद महमूद उद्दीन भ्रातः हजरत सैय्यद बदीउद्दीन अहमद
हज़रत सय्यद जाफर रजि0
हज़रत सय्यद अबू सईद रजि0
हज़रत सय्यद निजामुद्दीन रजि0
हज़रत सय्यद इस्हाक रजि0

हज़रत सय्यद इस्माईल रजि0
हज़रत सय्यद इब्राहीम रजि0
हज़रत सय्यद दाऊद रजि0
हज़रत सय्यद वजीहउद्दीन रजि0
हज़रत सय्यद कबीरउद्दीन रजि0
हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह रजि0
हज़रत ख्वाजा सय्यद अबू तुराब फन्सूर
हज़रत सय्यद दरिया सईद रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद रिज़्कुल्लाहे रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद हज़रत सय्यद अब्दुल्लाह रजि0
हज़रत सय्यद सलमान रहमतुल्लाहे अलैहे
हज़रत सय्यद अब्दुल. हमीद रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद अब्दुलस्सुब्हान रहमतुल्लाहे अलैह
हज़रत सय्यद सिर्रूल कुददूस रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद रहमतुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद अजमतुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद चाँद मदारी रहमतुल्लाह अलैह
हज़रत सय्यद अब्दुस्सुब्हान मुहदिदस रहमतुल्लाह अलैह
मौलाई सय्यद खुश वक्त अली रहमतुल्लाहे अलैहे
हज़रत कुत्बे आलम सै. कलबे अली
(ह.मौ. कारी अलहाज) सै. महजर अली
मौलाई अबुल वक़ार सै.

कल्बे अली जाफ़री मदारी के 10 पुत्र और 4 पुत्रियाँ
मौलाना सय्यद जुल्फिकार अली, मोलवी स0 मुख्तार अली,
सय्यद आले अली, सय्यद कुददूस अली,
सय्यद सय्यद अली, सय्यद मुहर्रम अली,
हाजी सय्यद मन्जर अली, मौलाना सय्यद वकार अहमद
सय्यद तफ़ाखुर अली साहब।
पुस्तक के लेखक (सय्यद महजर अली साहब) के पुत्र एवं पुत्रियाँ
सय्यद शजर अली, सय्यद यासिर अली
सय्यद इब्ने आमुर्रब-उर्फ सय्यद औसत अली
सय्यदा इकरा खातून एवं ताहा खातून
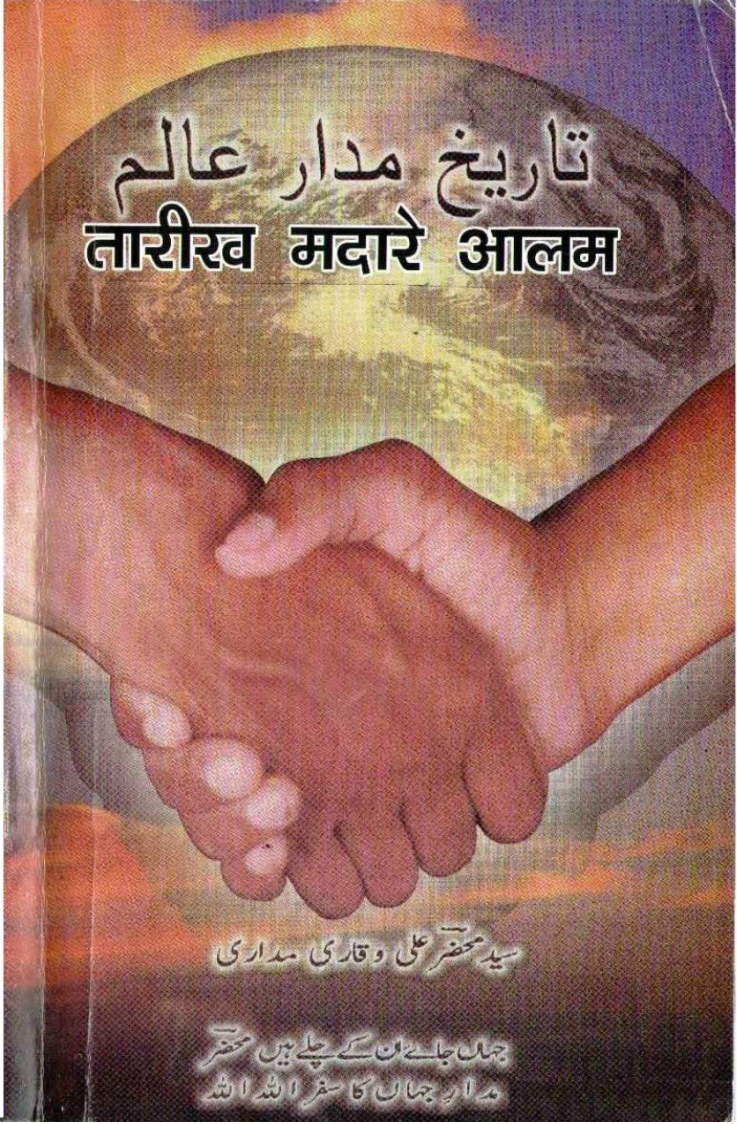
83

शज्र–ए–मुर्शिदिया हजरत सय्यद महजर अली

हजरत रसूल–ए–मुअज़्ज़म सल्लल्लाहो अलैहवसलम
मौला अली रज़ियल्लाहो अन्हो
हजरत हसन बस्री रजि0
हजरत हबीब अजमी रजि0
हजरत बायज़ीद बुसतामी
हजरत सय्यद बदीउद्दीन कुत्बुल मदार रजि0
हज़रत सय्यद अबू मुहम्मद अरगून रजि0
हज़रत सय्यद शाह महमूद रह0
हज़रत सय्यद ख्वाजा प्यारे रह0
हजरत सैय्यद शाह शाहन रह0
हज़रत सय्यद शाह हम्मन रह0
हज़रत सय्यद शाह महमूद सानी
हज़रत सय्यद मारूफ रहमतुल्लाहे अलैह
हज़रत सय्यद शाह मोलवी अब्दुल जलील रह0
हज़रत सय्यद फजलुल्लाह
हज़रत सय्यद प्यारे
हज़रत सय्यद अब्दुल जलील सानी (द्वितीय)
हज़रत सय्यद ख्वाजा नजमुद्दीन
हज़रत शाह सय्यद शम्सुद्दीन
हज़रत मौलाना अबुल वकार सय्यद कल्बे अली
हज़रत सय्यद महज़र अली जाफरी

खुदा हाफिज

تاریخ مدار عالم
तारीख मदारे आलम
سید محضرؔ علی وقاری مداری
جہاں جائے ان کے چلے ہیں محضرؔ
مدارِ جہاں کا سفر اللہ اللہ